सम-सामयिक

घटना चक्र

परीक्षा संवाद के 31 वर्ष

2024

कक्षा : 6, 7, 8, 9, 10, 11 एवं 12

पुरानी (Old) + नई (New)

NCERT BOOKS

का चैप्टरवाइज सुव्यवस्थित संकलन

NCERT सार

(समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु उपयोगी NCERT - मूलांश)

NCERT सार
की समस्त 12 पुस्तकों के
निःशुल्क PDF हेतु
देखें पेज नं. - 1

पूर्वावलोकन
भारतीय इतिहास
के साथ निःशुल्क

प्राचीन इतिहास

NCERT सार के अन्य उपलब्ध विषय

मध्यकालीन इतिहास | आधुनिक इतिहास | कला एवं संस्कृति | अर्थशास्त्र | पर्यावरण | भूगोल (भौतिक एवं विश्व)
भूगोल (भारत) | जन्तु विज्ञान | वनस्पति विज्ञान | भौतिकी एवं रसायन विज्ञान | भारतीय राजव्यवस्था

CASH BACK ₹25

Scan, JOIN & FOLLOW
घटना चक्र CHANNEL
Get News Update, Free PDF, Free Coupon Code and Much more...

ssgcp.com
t.me/ssgcp
ssgc.gs.qa
ssghatnachakra
SamsamyikGhatna

ई-बुक पढ़ें अपडेटेड रहें

See Cover Page - 2

Validity upto April, 2025

प्रकाशकाधीनः
संस्करण- प्रथम
संस्करण वर्ष-2024
लें- SSGC
मूल्य : 210
मुद्रक - कोर पब्लिशिंग सोल्यूशन
मुद्रण क्रम- प्रथम
संपर्क-
सम-सामयिक घटना चक्र
188A/128 एलनगंज, चर्चलेन
प्रयागराज (इलाहाबाद)-21102
Ph.: 0532-2465524,2465525
Mob.: 9335140296
e-mail : ssgcald@yahoo.co.in
Website : ssgcp.com
e-shop Website :
shop.ssgcp.com

■ इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनः प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकरण द्वारा जहां कहीं या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व धारक के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार से इसके भंग होने या अनुमति न लेने की स्थिति में बिना किसी पूर्व सूचना के उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

* इस प्रकाशन से संबंधित सभी विवादों का निपटारा न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) के न्यायालय न्यायाधिकरण के अधीन होगा।

संकलन सहयोग-

- राजेश शुक्ला
- अजीत कुमार
- मोहित कुमार यादव
- विवेक कुमार
- बलवंत सिंह
- फैज़ुल इस्लाम अंसारी
- मो. इरफान

समारंभ

प्रतियोगिता के रण क्षेत्र में जाने की तैयारी से पहले प्रत्येक प्रतियोगी सैनिक को यह सलाह अवश्य ही दी जाती है कि वह कक्षा 6 से 12 तक की एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकों को आत्मसात कर ले। लेकिन क्या इस सलाह पर अमल करना इतना आसान है? कठिनता ज्यादा इसलिए भी बढ़ जाती है कि 7 वर्षों की पाठ्य सामग्री कुछ माह में ही पढ़ लेनी होती है। न केवल पढ़ लेनी है बल्कि विषयों के प्रति समझ भी विकसित कर लेनी है। प्रत्येक प्रतियोगी इस कार्य को प्रारंभ अवश्य करता है परन्तु टास्क की व्यापकता को देखते हुए जल्द ही उसका उत्साह ठंडा पड़ जाता है। प्रतियोगी छात्रों की इस अनिवार्य आवश्यकता को पूर्ण करने की दिशा में थोड़ी सहजता और सरलता उपलब्ध कराने का प्रयास **सम सामयिक घटना चक्र** ने भी किया है। इस दिशा में कार्य करते हुए हमारे विषय विशेषज्ञों ने एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा 6 से 12 तक की पुस्तकों के सार-तथ्यों का संकलन पाठ्यक्रम के अनुसार विषयों में विभाजित करके प्रस्तुत किया है। किसी एक चैप्टर पर यदि एक से अधिक कक्षाओं में सामग्री है तो सभी कक्षाओं की पाठ्य सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत किया गया है तथा दोहराव को हटा दिया गया है। इस प्रस्तुतीकरण में यह ध्यान रखा गया है कि यदि एन.सी.ई.आर.टी. की विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में परस्पर कोई भिन्नता हो तो इसका उल्लेख किया जाए। इसी प्रकार अगर किसी तथ्य के संदर्भ में कोई **अद्यतन जानकारी** उपलब्ध हो गई हो तो उसका भी उल्लेख विशेष रूप से किया गया है। कोशिश यह भी की गई है कि परीक्षोपयोगी तथ्यों को ही समाहित किया जाए जिससे परीक्षार्थियों का अधिक समय जाया न हो। यदि एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तक और किसी अन्य प्रतिष्ठित लेखक की पुस्तक में किसी तथ्य को लेकर भिन्नता हमारे संज्ञान में आयी है तो उसका भी उल्लेख हमने यथा स्थान पर कर दिया है। कुछ चुनिंदा बिंदु पूरे अध्याय को याद रख पाने में बड़े सहायक सिद्ध होते हैं, ऐसे बिंदुओं को हमने अध्याय की पाठ्य सामग्री के अंत में **अध्याय-स्मरणिका** शीर्षक के अंतर्गत संजो कर प्रस्तुत किया है।

पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में एक **वस्तुनिष्ठ खण्ड** है। इस खण्ड में प्रत्येक अध्याय की पाठ्य सामग्री से निर्मित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों एवं उनके व्याख्यात्मक उत्तरों को संकलित किया गया है। पाठकों से अनुरोध है कि पुस्तक में सुधार से संबंधित सुझावों से हमें अवगत कराएं।

अनुक्रमणिका

	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन	3-20
2.	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	21-43
3.	भारतीय इतिहास की भौगोलिक पृष्ठभूमि	44-62
4.	मानव का उद्भव एवं विकासः प्रस्तर युग	63-86
5.	हड़प्पा सभ्यता	87-123
6.	ताम्रपाषाण कृषक संस्कृतियां	124-142
7.	ऋग्वैदिक संस्कृति	143-166
8.	उत्तर वैदिक काल	167-191
9.	जैन और बौद्ध धर्म	192-219
10.	जनपद-राज्य एवं प्रथम मगध साम्राज्य	220-237
11.	विदेशी आक्रमण	238-247
12.	बुद्ध काल में राज्य और वर्ण-समाज	248-262
13.	मौर्य साम्राज्य	263-295
14.	शुंग एवं सातवाहन काल	296-310
15.	शुंग एवं सातवाहन काल में समाज, अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति	311-337
16.	मध्य एशिया से संपर्क और उनके परिणाम	338-354
17.	गुप्त साम्राज्य	355-365
18.	गुप्त से हर्ष काल तक भारत की सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक दशा	366-397
19.	हर्ष और उसका काल	398-405
20.	हर्ष के बाद का भारत	406-428
21.	पूर्वी भारत में सभ्यता का प्रसार	429-440
22.	सुदूर दक्षिण में इतिहास का आरंभ	441-463
23.	भारत का एशियाई देशों से संपर्क	464-474
24.	भारतीय दर्शन का विकास	475-489
25.	विज्ञान और सभ्यता की विरासत	490-500
26.	प्राचीन से मध्य की ओर सामाजिक परिवर्तनों का अनुक्रम	501-520

नोट- प्रत्येक अध्याय के प्रारंभ में उस अध्याय की विषय-सूची (अध्याय-अनुक्रमणिका) दी गई है।

प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन
(The Study of Ancient Indian History)

'प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन' प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। प्रतियोगी परीक्षाओं में इससे सम्बद्ध प्रश्न बनते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की निम्नलिखित नई एवं पुरानी पुस्तकों में यह पाठ्य-सामग्री समाहित है।

क्रम	कक्षा	नई/पुरानी	पुस्तक का नाम	अध्याय का नाम
1	6	पुरानी	प्राचीन भारत	भारतीय इतिहास का अध्ययन
2	11	पुरानी	प्राचीन भारत (मक्खन लाल)	भारतीय इतिहास का अध्ययन, प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन
3	11	पुरानी	प्राचीन भारत (रामशरण शर्मा)	प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्व, प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक

अध्याय - अनुक्रमणिका

- **भारतीय इतिहास का अध्ययन**
- **इतिहास के अध्ययन की आवश्यकता**
- **इतिहास के अध्ययन का महत्व**
- **प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन**
  - ➡ इतिहास लेखन की भारतीय परंपरा
  - ➡ साम्राज्यवादी इतिहास लेखन
  - ➡ राष्ट्रवादियों की दृष्टि और योगदान
  - ➡ इतिहास की मार्क्सवादी विचारधारा
- **वर्तमान में इतिहास अध्ययन की प्रासंगिकता**
- **अध्याय - स्मरणिका**
- **वस्तुनिष्ठ-खण्ड**

भारतीय इतिहास का अध्ययन (The Study of Indian History)

किसी समाज या राष्ट्र के इतिहास के अध्ययन के द्वारा हम उस समाज या राष्ट्र के **अतीत** को जान सकते हैं। तब हम यह जान सकते हैं कि वह समाज या राष्ट्र एक दीर्घ अवधि में कैसे विकसित हुआ है। सभी समाज को विकसित होने में एक लंबा समय लगा है, लेकिन उनके रास्ते अलग-अलग रहे हैं। जिन प्रक्रियाओं से वे गुजरे हैं, वे भिन्न-भिन्न रही हैं। यद्यपि वे सब प्रस्तर युग के **आखेटक-संग्राहक** थे, सबने **खेती का व्यवहार** किया, सबने किसी-न-किसी समय धातु का उपयोग करना शुरू किया था, फिर भी वे अपनी एक अलग **सांस्कृतिक**, **सामाजिक**, **राजनीतिक** और **धार्मिक पहचान** रखते हैं। इसका कारण यह है कि लोग **अर्थ-जगत** से परे, अन्य कई विषयों पर भी पृथक विचार रखते हैं।

कुछ बातें प्रत्येक समाज की अपनी होती हैं जैसे-

- **उनकी सामाजिक-राजनीतिक प्रणाली**
- **उनका धर्म एवं कर्म**
- **उनकी कला एवं स्थापत्य तथा**
- **उनकी भाषा और साहित्य।**

➡ बहुत से लोग, जिनमें कुछ **अग्रणी वैज्ञानिक (Leading Scientist) और राजमर्मज्ञ (Statesmen)** भी शामिल हैं, यह प्रश्न उठाते हैं कि **इतिहास का अध्ययन क्यों किया जाए**?

- ➲ इससे **आर्थिक दृष्टि** से कोई लाभ या योगदान नहीं मिलता।
- ➲ यह **गरीबी और बेरोजगारी** की समस्या को हल नहीं कर सकता।
- ➲ कुछ लोग तो यहां तक सोचते हैं कि यह केवल **समस्याएं** उत्पन्न करता है और लोगों के बीच **बैर-भाव (Animosity)** बढ़ाता है।

इतिहास के अध्ययन की आवश्यकता (Study of History : A Need)

यहां यह कहा जा सकता है कि यह विचार बहुत छिछला है। इतिहास के अध्ययन से हम अपनी सभ्यता व संस्कृति के बारे में जान पाते हैं तथा अपने अतीत की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक व आर्थिक स्थितियों को जानने में सहायता मिलती है।

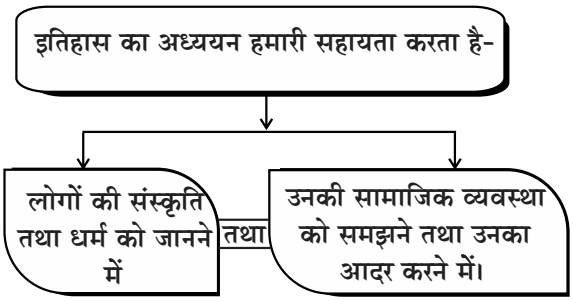

- ➲ **इतिहास का अध्ययन हमें अपने अतीत से वर्तमान और भविष्य के लिए सबक लेना सिखाता है।**
- ➲ यह हमें उन गलतियों को दोहराने से रोकता है, जिनके कारण हमें अतीत में युद्ध जैसी अनेक **मानव-निर्मित विपत्तियों और घोर आपदाओं** को झेलना पड़ा।
- ➲ इतिहास हमें यह भी बताता है कि उन **बुराइयों** को कैसे **नजर-अंदाज** करें जिन्होंने समाज में समस्याएं खड़ी कर दी थीं, और उन बातों का कैसे अनुसरण करें, जिनसे **समरसता (Harmony)**, **शांति (Peace)** और **समृद्धि (Prosperity) को बढ़ावा मिलता है।**

➡ उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है कि दो हजार वर्ष से भी अधिक पहले **अशोक** ने अपने **बारहवें शिलालेख** में समाज में **समरसता, शांति और समृद्धि** बनाए रखने के लिए निम्न उपाय और व्यवहार अपनाने का आग्रह किया था-

(i) उन बातों को बढ़ावा दिया जाए, जो सभी धर्मों के **मूल तत्व** हैं।

(ii) सभी धर्मों के बीच **एकता** का भाव बढ़ाया जाए तथा एक दूसरे के धर्मों का सम्मान किया जाए और उनके लिए **'वाचागुटी'** (यानी अन्य धर्मों और पंथों की आलोचना से बचना) अपनाया जाए।

(iii) धर्म सभाओं में सभी धर्मों के प्रतिपादकों का **आपस में समन्वय हो** यानी उन्हें एक साथ लाया जाए।

(iv) अन्य धर्मों के ग्रंथों का गहन अध्ययन किया जाए, जिससे कि **बहुश्रुत (Bahusruta or Proficient)** हो सके, यानी भिन्न-भिन्न धर्मों के ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त किया जाए।

- ➲ इतिहास में यह समझाने का प्रयास किया जाता है कि हमारे पूर्वजों का जीवन किस तरह का था, उन्हें किन दिक्कतों का सामना करना पड़ता था और वे उन दिक्कतों को किस प्रकार हल करते थे?

➡ अतीत को जानना हमारे लिए अति आवश्यक है, क्योंकि **तभी हम आज के भारत की परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।**

- ➲ **अतीत के बारे में जानने का यह प्रयास ही इतिहास है।**
- ➲ अतीत के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है - जैसे
- ➲ लोग क्या खाते थे?
- ➲ कैसे कपड़े पहनते थे?
- ➲ किस तरह के घरों में रहते थे?

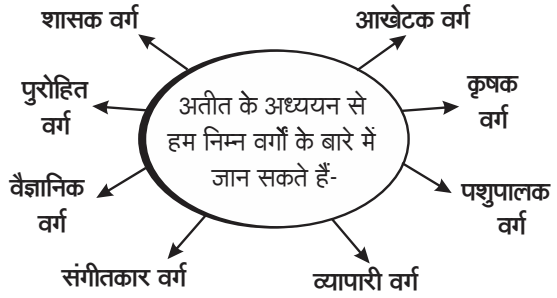

➡ यही नहीं हम यह भी जान सकते हैं कि उस समय के बच्चे कौन-कौन-से खेल खेलते थे, कौन-सी कहानियां सुना करते थे, कौन-कौन से नाटक देखा करते थे तथा कौन - सा गीत गाया करते थे?

इतिहास के अध्ययन का महत्व (The Importance of Study of History)

प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इससे हम जान सकते हैं कि **मानव-समुदायों** ने हमारे देश में **प्राचीन संस्कृतियों** का **विकास कब**, **कहां** और **कैसे** किया?

(i) इतिहास का अध्ययन यह बताता है कि उन्होंने **कृषि की शुरुआत** कैसे की, जिससे कि मानव का जीवन **सुरक्षित और सुस्थिर** हो सका?

(ii) इससे ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत के निवासियों ने किस तरह **प्राकृतिक संपदाओं की खोज** की और उनका उपयोग संभव हो सका?

(iii) इससे ज्ञात हुआ कि उन्होंने अपनी **जीविका के साधनों का सृजन** किस प्रकार किया?

(iv) उन्होंने **खेती**, **कताई**, **बुनाई**, **धातुकर्म** आदि की शुरुआत किस प्रकार से की?

(v) कैसे **जंगलों की सफाई** की और कैसे **ग्रामों, नगरों** तथा **अन्ततः राज्यों** की स्थापना हो सकी?

➡ अब **इतिहास के अध्ययन का तरीका कुछ बदल गया है।** पहले इतिहास में **ज्यादातर तारीखों और घटनाओं** की, **विशेषतः केवल राजनीतिक घटनाओं की** भरमार रहती थी, अब इतिहास में **जीवन** के अनेक **पहलुओं** का **समावेश** होता है।

➲ इसलिए इतिहास में अब **समाज के केवल उच्च वर्गों का ही नहीं** बल्कि समाज के सभी स्तरों के समुदायों का अध्ययन होता है।

➲ अब इतिहास में **राजाओं** और **राजनीतिज्ञों** के **अलावा** उन **सामान्य लोगों**; जैसे **व्यापारियों**, **कारीगरों**, **किसानों** और **मजदूरों** के बारे में भी जानकारी रहती है जिन्होंने इतिहास को बनाने में योगदान किया है।

इतिहास अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र हैं-
- कला और स्थापत्य
- भारतीय भाषाओं के विकास तथा
- सभी धर्मों की उत्पत्ति आदि।

➲ अब हम केवल यह नहीं देखते कि **समाज के कुलीन** वर्गों में क्या होता था, बल्कि निचले स्तर के लोगों के **कार्यों** और **रुचियों को भी** जानने का प्रयास करते हैं।

➲ इससे इतिहास का अध्ययन अधिक दिलचस्प हो जाता है और हम अपने **समाज व संस्कृति** को काफी बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

➲ **जीवन के विविध अंगों के अध्ययन को ही हम 'संस्कृति' कहते हैं।**

➡ **एक जमाना था, जब समझा जाता था कि कला, स्थापत्य, साहित्य और दर्शन से संबंधित जानकारी ही संस्कृति है। ध्यातव्य है कि संस्कृति में समाज की सभी गतिविधियों का समावेश होता है।**

➡ **कुलीन और सामान्य स्तर** के जिन लोगों से हमारा समाज बना है, वे सभी आरंभ में **भारत के मूल निवासी** थे।

➲ **कालांतर में अनेक विदेशी प्रजातियां भारत में आईं उनमें से बहुत सी प्रजातियों ने भारत को अपना घर बनाया जैसे-**

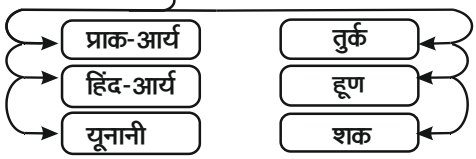

➲ प्रत्येक प्रजाति ने **भारतीय सामाजिक व्यवस्था**, **शिल्पकला**, **वास्तुकला** और **साहित्य** के विकास में यथाशक्ति अपना-अपना योगदान दिया।

➲ यहां उन्होंने शादियां कीं, यहां के लोगों में वे घुल-मिल गए और भारतीय **समाज का अंग** बन गए।

भारत में विभिन्न प्रकार के भाषायी और धार्मिक समूह के निवास होने के कारण यहां
- **विभिन्न प्रकार की बोलियों**
- **विभिन्न धार्मिक कृत्यों, तथा**
- **विभिन्न रीति-रिवाजों का विकास हुआ।**

➡ हमें अपने इतिहास को ठीक से जानने और समझने के लिए बड़ी **सावधानी** बरतनी चाहिए, ताकि इसका **दुरुपयोग** न हो। अतः **वर्तमान को समझने के लिए अतीत को समझना अत्यंत जरूरी है।**

➡ भारत प्राचीन काल से ही **विविध धर्मों का प्रांगण** रहा है। प्राचीन भारत में **हिंदू, जैन** और **बौद्ध धर्मों** का उदय हुआ।

➲ परंतु इन सभी **धर्मों और संस्कृतियों का पारस्परिक सम्मिश्रण** और **प्रभाव-प्रति-प्रभाव** इस प्रकार हुआ कि लोग भले ही भिन्न-भिन्न सामाजिक रीति-रिवाजों का अनुसरण करते हों, पर संपूर्ण देश में सभी की एक सामान्य जीवन पद्धति विकसित हुई है।

➡ **हमारे देश में विविधताओं के बावजूद अनेकता में एकता दिखती है।**

➲ प्राचीन भारत के लोग एकता के लिए प्रयत्नशील रहे। उन्होंने इस विशाल उपमहाद्वीप को एक अखंड देश समझा।

'भरत' नामक एक प्राचीन वंश के नाम पर भारतवर्ष (अर्थात् भरतों का देश) नाम दिया गया और इन निवासियों को 'भरत-संतति' कहा गया।

➲ हमारे प्राचीन **कवियों**, **दार्शनिकों** और **शास्त्रकारों** ने इस देश को **अखण्ड इकाई** के रूप में देखा।

➲ हिमालय से समुद्र तक फैली इस भूमि को उन्होंने **सार्वभौम (सकल देशव्यापी)** राजा के द्वारा शासित क्षेत्र के रूप में कल्पना की है।

➲ राजनीतिक एकता के अभाव की स्थिति में भी, संपूर्ण देश में **राजनीतिक ढांचा कमोवेश एक-जैसा** रहा।

➲ विजेताओं और सांस्कृतिक नेताओं के मन में भारत का भान **अखंड भूमि** के रूप में ही हुआ है।

➲ भारत की इस एकता को विदेशियों ने भी स्वीकारा है। वे **सर्वप्रथम सिंधु तटवासियों के संपर्क में आए और इसलिए उन्होंने पूरे देश को ही 'सिंधु या इण्डस' नाम दे दिया।**

➲ **'हिंद' शब्द संस्कृत् के 'सिंधु'** से निकला है, कालांतर में यह देश **इण्डिया** के नाम से मशहूर हुआ, जो **यूनानी** पर्याय के निकट है।

➲ **यह फारसी और अरबी भाषाओं** में **'हिंद'** नाम से विदित हुआ।

➡ देश में **भाषात्मक और सांस्कृतिक एकता** स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयास होते रहे हैं।

➲ ईसा-पूर्व तीसरी सदी में **'प्राकृत'** देश भर की **संपर्क-भाषा** का काम करती थी।

➲ **संपूर्ण देश के प्रमुख भागों में अशोक के शिलालेख लिखे गए थे-**

प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में।

➲ बाद में वह स्थान **'संस्कृत'** ने लिया और देश के कोने-कोने में **राजभाषा** के रूप में प्रचलित हुई।

➲ यह सिलसिला ईसा की चौथी सदी में आकर **गुप्तकाल** में और भी मजबूत हुई।

➲ यद्यपि **गुप्तकाल** के बाद देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया, फिर भी **राजकीय दस्तावेज 'संस्कृत'** में ही लिखे जाते रहे।

➲ भारत के सांस्कृतिक मूल्य और चिंतन चाहे जिस किसी भी रूप में प्रस्तुत किये जाएं, उनका सारतत्व सारे देश में एक-सा रहा है।

➲ ध्यातव्य है कि प्राचीन **महाकाव्य रामायण व महाभारत** तमिल प्रदेशों में भी वैसे ही **आह्लाद व भक्ति-भाव** से पढ़े जाते थे, जैसे- **काशी व तक्षशिला** की पण्डित मण्डलियों में पढ़े जाते थे।

➡ भारतीय इतिहास की यह विशेषता है कि यहां एक विचित्र प्रकार की **सामाजिक व्यवस्था** उदित हुई है।

➲ **उत्तर भारत में वर्ण-व्यवस्था** या **जाति प्रथा का जन्म हुआ,** जो सारे देश में व्याप्त हो गई।

➲ प्राचीन काल में जो लोग बाहर से आए वे भी किसी-न-किसी वर्ण/जाति में शामिल हो गए।

➲ **वर्णव्यवस्था ने ईसाइयों और मुसलमानों** को भी प्रभावित किया।

➲ धर्म परिवर्तन करने वाले लोग किसी न किसी जाति के थे और वे **हिंदू धर्म** को छोड़ नए धर्म में दीक्षित हो जाने पर भी पूर्व की भांति ही अपनी जाति के **रीति-रिवाजों पर पूर्ववत्** चलते रहे।

➲ इतिहास किसी समाज या राष्ट्र को उसकी पहचान देता है।

➲ इतिहास के इसी अध्ययन के आधार पर ब्रिटिश इतिहासकार **ए.एल. बाशम** (1914-1986) ने अपनी **पुस्तक 'दि वण्डर दैट वाज इण्डिया'** में लिखा है-

''अपने इतिहास के अधिकांश कालखंडों में, भारत यद्यपि एक **सांस्कृतिक इकाई** बना रहा, पर साथ ही परस्पर संहारक युद्धों से छिन्न-भिन्न होता गया।''

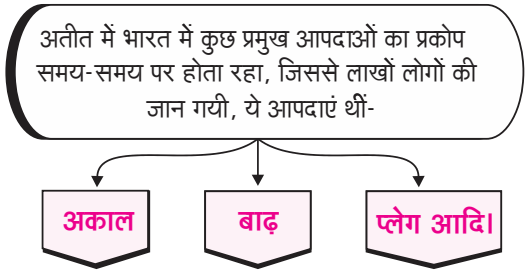

- ➲ **जन्म की असमानता को** (यानी मनुष्य जन्म से ही छोटा-बड़ा होता है) इस बात को यहां धार्मिक मान्यता प्राप्त थी और निम्नकोटि के लोगों का जीवन सामान्यत: कठोर था। समग्रत: हमारा विचार यही है कि प्राचीन विश्व के किसी भी अन्य भाग में **मनुष्य-मनुष्य के बीच** और **मनुष्य तथा राज्य के बीच** के संबंध इतने अच्छे और मानवोचित नहीं रहे, जितने **भारत** में थे।

➡ **आदिकालीन** किसी भी अन्य **सभ्यता** में **दास** इतनी कम संख्या में नहीं थे और किसी भी अन्य कानून की प्राचीन **पुस्तक** में उनके **अधिकार** इतनी अच्छी तरह सुरक्षित नहीं थे, जितने कि कौटिल्य के **अर्थशास्त्र में।**

➡ किसी भी **प्राचीन विधि-निर्माता** ने युद्ध में न्यायोचित व्यवहार के इतने **उदात्त विचार** प्रकट नहीं किए, जितने कि **मनु ने किए**।

- ➲ अपने युद्धों के इतिहास में **भारत** में **शायद ही कोई ऐसा प्रसंग आया हो कि नगरों में कत्लेआम किया गया** हो या युद्ध न करने वाले नागरिकों को मौत के घाट उतारा गया हो।
- ➲ **असीरिया के राजाओं को नृशंसतापूर्वक अपने बंदियों की जिंदा खाल उधड़वाने में जो परपीड़ा सुख मिलता था, वैसा एक भी उदाहरण प्राचीन भारत के इतिहास में नहीं मिलता।**

इसमें संदेह नहीं कि कभी-कभार निर्दयता या अत्याचार का कोई इक्का-दुक्का प्रसंग मिल जाता है लेकिन अन्य पुरानी संस्कृतियों में हुई नृशंसतापूर्ण घटनाओं के मुकाबले में वह बहुत नरम है। हमारे लिए तो प्राचीन भारतीय संस्कृति की अत्यंत प्रभावशाली विशेषता उसकी **मानवीयता** है।

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन (The Ancient Indian Way of Writing History)

इतिहास के अध्ययन का एक रोचक पहलू स्वयं इतिहास लेखन के इतिहास को जानना है। इससे हमको इस बात की झलक मिलती है कि बदलती व्याख्याओं से कैसे स्वयं इतिहास भी बदल जाता है।

■ इतिहास लेखन की भारतीय परंपरा *(Tradition of History Writing in Indian)*

किस प्रकार **एक ही आधारभूत जानकारी और एक ही साक्ष्य का विभिन्न विद्वानों के हाथों में जाकर बिल्कुल भिन्न अर्थ हो जाता है**?

➡ प्राचीन भारतीय **इतिहास** लेखन कब और कैसे शुरू हुआ, और एक लंबे काल में विभिन्न मार्गों को तय करते हुए, इसने किस प्रकार उत्तरोत्तर प्रगति की?

➡ बहुत-से विदेशी विद्वानों का मत है कि भारतीयों में इतिहास लेखन की कोई समझ नहीं थी, और इतिहास के नाम पर जो कुछ भी लिखा गया था, वह **बिना किसी अर्थ वाली कहानी** से अधिक कुछ नहीं है।

- ➲ जबकि **वास्तविकता** यह है कि प्राचीन भारत में इतिहास के ज्ञान को **बहुत उच्च स्थान** दिया जाता था।
- ➲ उसे वेद के समान **पवित्र** माना जाता था।

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र (चौथी शताब्दी ई.पू.) में राजा को यह सलाह दी है कि उसे प्रतिदिन अपना कुछ समय इतिहास का वर्णन सुनने में लगाना चाहिए।

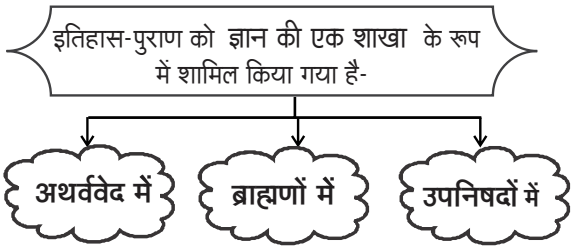

पुराणों के अनुसार इतिहास के ये विषय हैं-

- **सर्ग** (सृष्टि की उत्पत्ति)
- **प्रतिसर्ग** (सृष्टि का प्रत्यावर्तन एवं प्रतिविकास)
- **मन्वंतर** (समय की आवृत्ति)
- **वंश** (राजाओं और ऋषियों की वंशावली)
- **वंशानुचरित** (कुछ चुने हुए पात्रों की जीवनियां)

➡ पौराणिक साहित्य बड़ा विशाल है और इसमें **18 मुख्य पुराण, 18 उप-पुराण** और अनेक अन्य ग्रंथ हैं।

➲ ध्यान देने योग्य है कि सभी **पुराणों में राजवंशों** का वर्णन **अर्जुन के पौत्र परीक्षित** के शासनकाल को **आधारभूत संदर्भ बिंदु (Benchmark)** मानते हुए किया गया है।

➡ पुराणों के संदर्भ में यह स्मरण रहे कि प्राचीन भारत में इतिहास को **अतीत के प्रकाश में वर्तमान और भविष्य को आलोकित करने का साधन** समझा जाता था।

➡ **इतिहास का प्रयोजन यह समझना और बताना था कि-**

व्यक्तियों का परिवार के प्रति → **परिवारों का अपने वंश के प्रति** → **वंशों का गांव के प्रति** → **गांवों का जनपद व राष्ट्र के प्रति** → और **अंततः समूची मानवता के प्रति** क्या कर्तव्य है? और उनमें त्याग एवं बलिदान की भावना कैसे उत्पन्न की जाए?

➡ इतिहास को **राजाओं**, **राजवंशों** के नामों और उनकी **उपलब्धियों** आदि का **विशाल संग्रह** नहीं समझा जाता था।

➲ इसे **सांस्कृतिक** और **सामाजिक चेतना जाग्रत (Awakening of Cultural and Social Consciousness) करने का एक सशक्त साधन** माना जाता था।

➲ शायद इसलिए **वर्षा ऋतु** में और **त्योहारों एवं पर्वों** के अवसर पर प्रत्येक गांव और नगर में पुराणों का वाचन **और श्रवण** वार्षिक समारोहों का एक आवश्यक अंग था।

➲ हो सकता है कि **पुराण** आधुनिक इतिहास लेखन की कसौटी पर खरे न उतरें अथवा जिन्होंने इसे लिखा है, उन्हें **'इतिहासकार के शिल्प - विधान'** का ज्ञान न हो, किंतु उन्हें अपने कार्य के प्रयोजन और स्वयं इतिहास के प्रयोजन की पूरी जानकारी थी।

पुराणों में वर्णित विभिन्न राजवंशों की वंशावलियों के आधार पर इतिहास लिखने की कोशिश की -

- **एफ.ई. पार्जिटर और**
- **एच.सी. रायचौधरी आदि ने।**

➡ यूनानी राजदूत मेगस्थनीज (324-300ई.पू. में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में) ने उन **153 राजाओं की सूची** के अस्तित्व में होने की पुष्टि की है, जो तब तक बीते **6053 वर्षों** में हुए थे।

➡ जब हम प्राचीन भारत के बारे में भारत की सीमाओं से बाहर लिखे गए इतिहास पर नजर डालते हैं, तो हमें पता चलता है कि इस दिशा में **सबसे पहला प्रयास यूनानी लेखकों** का है।

प्राचीन भारतीय इतिहास लिखने वाले विदेशी लेखक थे-

- हेरोडोटस
- नियार्कस
- मेगस्थनीज
- प्लूटार्क
- एरियन
- स्ट्रैबो
- ज्येष्ठ प्लिनी
- व टॉल्मी।

➲ लेकिन **मेगस्थनीज** को छोड़कर इन सभी ने भारतीय इतिहास को सही अर्थों में केवल **सीमांतिक रूप** से स्पर्श किया है।

➲ उनका सरोकार अधिकांशतः भारत के **उत्तर-पश्चिमी भागों और प्रधानतः** उन क्षेत्रों से ही रहा, जो फारस (पर्शिया) और **यूनान के क्षत्रपों के राज्यों के भाग थे** अथवा जहां **सिकंदर** का अभियान हुआ था।

➡ **मेगस्थनीज** ने अपनी **इण्डिका** नामक पुस्तक में तत्कालीन साम्राज्यों के बारे में विस्तारपूर्वक लिखा है, लेकिन यह पुस्तक वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

➲ हमें **मेगस्थनीज** द्वारा लिखित बातों का पता **डायोडोरस, स्ट्रैबो और एरियन** के लेखों में शामिल अनेक उद्धरणों से चलता है।

- ➲ **डा. स्वानवेग** ने सर्वप्रथम 1846 ई. में **डायोडोरस, स्ट्रैबो** और **एरियन** के लेखों में शामिल मेगस्थनीज के उद्धरणों को एक जगह संग्रहीत कर प्रकाशित करने का कार्य किया था। वर्ष 1891 में **'मैक्रिण्डल महोदय'** द्वारा इसका **अंग्रेजी में अनुवाद** किया गया।

➡ बहुत स्पष्ट है कि **मेगस्थनीज** को भारतीय समाज और **सामाजिक व्यवस्था** की बहुत कम जानकारी थी।

- ➲ उदाहरण के लिए, उसने लिखा है कि **भारतीय समाज सात जातियों** पर आधारित था।
- ➲ ऐसा प्रतीत होता है कि **मेगस्थनीज** के लेखों में जो विसंगतियां पाई जाती हैं, उनका कारण यह है कि उसे किसी भारतीय **भाषा** का ज्ञान नहीं था।
- ➲ वह भारतीय समाज का अंग नहीं था। इसलिए यहां के जन-मानस से परिचित नहीं था।
- ➲ **अलबरूनी** अपने समय का एक महान विद्वान था और **गजनी के महमूद का समकालीन** था।

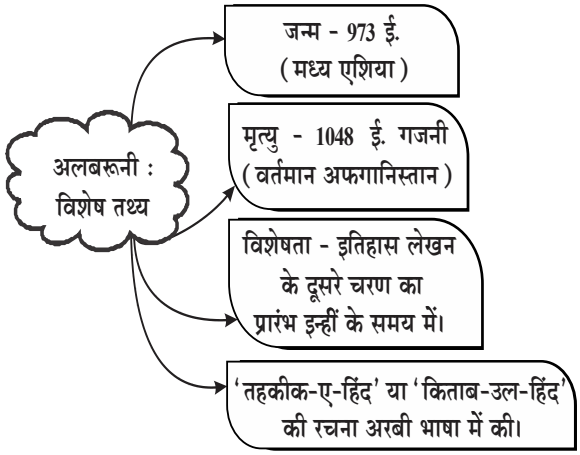

- ➲ जब **महमूद** ने **मध्य एशिया** के कुछ भाग पर विजय प्राप्त की, तो वह **अलबरूनी** को अपने साथ ले गया।

➡ **मेगस्थनीज** के विपरीत, **अलबरूनी ने संस्कृत भाषा का अध्ययन** किया और भारतीय स्रोतों का सही-सही ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश की।

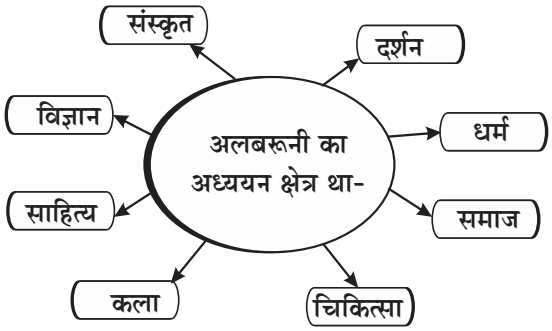

- ➲ **अल-बरूनी** को तुलनात्मक रूप से उन **धार्मिक** अथवा **नस्ली पक्षपात** से मुक्त होने का श्रेय दिया जा सकता है, जो हमें उसके **परवर्ती मुस्लिम अथवा यूरोपीय लेखकों** की कृतियों में देखने को मिलता है।

अल-बरूनी भी कभी-कभी अपना क्षोभ व्यक्त करता है, जब वह व्यंग्यपूर्वक यह कहता है कि ''हिंदू यह सोचते हैं कि उनके देश के जैसा अन्य कोई देश नहीं है, उनके राष्ट्र जैसा कोई राष्ट्र नहीं है, उनके राजा जैसा कोई राजा नहीं है, उनके धर्म जैसा कोई धर्म नहीं है, उनके विज्ञान जैसा कोई विज्ञान नहीं है।''

➡ इतिहास लेखन के अगले चरण का संबंध यूरोपीय हितों, मुख्यतः **ईसाई धर्म प्रचारकों** से है।

➡ ईसाई धर्मप्रचारकों की अधिकतर रचनाओं को **निष्पक्ष नहीं** कहा जा सकता।

➲ **भारत के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करने और लिखने में उनकी अधिक रुचि -**

उसके दोष दर्शाने और अपने धर्मप्रचार संबंधी क्रियाकलापों के लिए भूमिका तैयार करने में थी।

➡ **ज्ञानोदय** होने के साथ-साथ भारत के बारे में **यूरोपीय इतिहास** लेखन का एक अन्य दौर प्रारंभ हुआ।

- ➲ **जॉन हॉलवेल, नेन्थेनियल हालहेड** और **अलेक्जेंडर** डी ने, जो सभी ब्रिटेन की ईस्ट इण्डिया कंपनी से जुड़े थे, भारतीय इतिहास और संस्कृति के बारे में लिखा और प्राचीन संसार में **भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता** सिद्ध की।
- ➲ **हॉलवेल** ने लिखा है कि **हिंदू ग्रंथों ने ईसाई ग्रंथों में** उद्घाटित सत्य से कहीं अधिक श्रेष्ठ सत्य का उद्घाटन किया है, और उन्होंने **'ओल्ड टेस्टामेंट' में वर्णित बाढ़** आने के समय को उससे कहीं पहले का माना है।
- ➲ **हॉलवेल** ने यह भी लिखा है कि मिस्रवासियों, यूनानी और रोमनों की मिथक विद्या (पौराणिक कथाएं) और सृष्टि मीमांसा **ब्राह्मणों के सिद्धांतों से उधार** ली गई हैं।

➡ **हालहेड** ने भी भारतीय इतिहास, धर्म, पौराणिक कथाओं, आदि के विभिन्न पहलुओं की आलोचनात्मक ढंग से जांच की थी।

- ➲ **हालहेड** ने **चार युगों** में विभाजित मानव इतिहास की विशाल अवधियों के बारे में चर्चा की और यह निष्कर्ष निकाला कि **मानव उत्पत्ति से लेकर मानव विकास तक का इतिहास मात्र कुछ हजार वर्षों में ही समेटा नहीं जा सकता है।**

महान बुद्धजीवी और राजनीति-विशारद, वॉल्टेयर ने भारत को धर्म के सबसे प्राचीन और विशुद्ध रूप की वासभूमि और विश्व की सभ्यता की शैशवस्थली (पालना) माना।

- ➲ **वॉल्टेयर** ने भारतीयों का वर्णन करते हुए लिखा है कि ''अपने **अंकों**, **बैकगैमन (पासे के खेल)** और **शतरंज** के खेल, **रेखागणित** के अपने प्रथम सिद्धांतों और अपनी **कथा-कहानियों** के लिए, जो हमारी अपनी बन चुकी हैं, हम भारतीय लोगों के ऋणी हैं।''
- ➲ **वॉल्टेयर ने आगे लिखा कि - ''संक्षेप में मेरी यह मान्यता है कि हमारी प्रत्येक चीज-खगोलविद्या, ज्योतिषविद्या, अध्यात्म विद्या, तत्व-मीमांसा आदि गंगा के तट से आयी है।''**

➡ **फ्रांसीसी प्रकृति-वैज्ञानिक और यात्री, पियर-दि-सोन्नरेत** का भी विश्वास था कि **सारा ज्ञान भारत** से आया है, जिसे वह **सभ्यताओं** की **जन्मभूमि** मानता था।

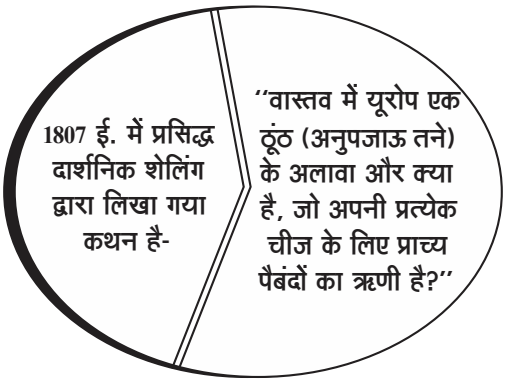

➡ प्रसिद्ध **दार्शनिक, इमेन्युअल कांट ने** भी **प्राचीन भारतीय संस्कृति** और **सभ्यता** की महानता को स्वीकार किया है।

➲ **इमेन्यूअल कांट ने लिखा है कि ''उनके धर्म में एक महान विशुद्धता थी** ... (और) उसमें हमें देवत्व की विशुद्ध संकल्पना के चिह्न मिल सकते हैं, जो हमें अन्यत्र कहीं आसानी से प्राप्त नहीं हो सकते।'' उन्होंने यह भी घोषित किया था कि **भारतीय धार्मिक विचार मतांधता और असहिष्णुता से मुक्त हैं।**

■ *साम्राज्यवादी इतिहास लेखन (Imperialist Historiography)*

यद्यपि शिक्षित भारतीयों ने हस्तलिखित **महाकाव्यों, पुराणों और जीवनचरितों** जैसे ग्रंथों के रूप में अपने पारंपरिक इतिहास को संजोए रखा, तथापि प्राचीन भारत के इतिहास में **आधुनिक ढंग** से **अनुसंधान अठारहवीं सदी** के **उत्तरार्ध (The latter) में** आकर आरंभ होता है।

➡ **ब्रिटेन** वालों ने जब यहां शासन कायम किया तब उन्हें **औपनिवेशिक प्रशासन** के हित में इसकी आवश्यकता प्रतीत हुई।

- ➲ ध्यातव्य है कि **1765 में बंगाल और बिहार जब ईस्ट इण्डिया कंपनी** के शासन में आया, तब शासकों को **हिंदुओं** में उत्तराधिकार की न्याय-व्यवस्था करने में कठिनाई का अनुभव हुआ।

➡ **हिंदुओं के दीवानी न्याय-कार्य में पण्डित लोग** और **मुसलमानों के दीवानी न्याय-कार्य में मौलवी लोग ब्रिटिश जजों** के साथ लगा दिए गए।

➡ प्राचीन **कानूनों और रीति-रिवाजों** को समझने के लिए प्रयास आरंभ हुआ, जो व्यापक रूप से **अठारहवीं सदी** तक चलता रहा।

- ➲ इसी के परिणाम-स्वरूप **1784 में कलकत्ता में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** नामक शोध संस्था की स्थापना हुई।
- ➲ इसकी स्थापना **ईस्ट इण्डिया कंपनी के सर विलियम जोन्स** (1746-1794) नामक **सिविल सर्वेंट** ने की। उन्होंने ही **1789 में अभिज्ञानशाकुंतलम्** नामक **नाटक का अंग्रेजी** में अनुवाद किया।

➡ **1804** में **बंबई में एशियाटिक सोसाइटी** की स्थापना हुई।

➡ **1823 में लंदन में एशियाटिक सोसाइटी** ऑफ ग्रेट ब्रिटेन स्थापित हुई।

➡ विलियम जोन्स ने यह प्रतिपादित किया कि मूलत: **यूरोपीय भाषाएं, संस्कृत** और **ईरानी भाषाओं** से बहुत ही मिलती हैं।

- ➲ इस तथ्य की खोज ने **जर्मनी, फ्रांस, रूस** आदि **यूरोपीय देशों के जन-मानस में** भारतीय विद्या के अध्ययन में गहरी रुचि जगाई।
- ➲ **उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध (The first half of the 19th Century) में इंग्लैण्ड** तथा कई अन्य **यूरोपीय देशों में संस्कृत के आचार्य-पद** सृजित किये गये।

मार्गनिर्देशक सिद्धांत के तहत इतिहास लेखन करने वाले थे-

- विलियम जोन्स
- मैक्स मूलर
- विन्सेंट स्मिथ आदि।

➡ **1857** के **विद्रोह** ने ब्रिटिश शासकों की आंखें खोल दीं। उन्हें महसूस हो गया कि जिन विदेशी लोगों पर उन्हें शासन करना है उनके **रीति-रिवाजों और सामाजिक व्यवस्थाओं** का उन्हें **गहन ज्ञान** प्राप्त करना होगा।

➡ इसी तरह क्रिश्चियन मिशनों के धर्म प्रचारकों ने भी हिंदू धर्म की दुर्बलताओं को जानना आवश्यक समझा था।

➲ जिससे वे धर्म परिवर्तन करा सकें और इसके द्वारा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूत बना सकें।

➡ इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए **मैक्स मूलर** के **संपादकत्व** में अधिक से अधिक **प्राचीन धर्मग्रंथों** का अनुवाद किया गया।

➲ ये अनुवाद **सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट सीरीज** में कुल मिलाकर **पचास खंडों** में, जिनमें कई खंडों के अनेक भाग भी हैं प्रकाशित हुए।

➲ उपर्युक्त अनुवादों की प्रस्तावनाओं में और उनके आधार पर लिखी गई पुस्तकों में **पाश्चात्य विद्वानों** ने प्राचीन भारत के इतिहास और सामाजिक स्वरूप के बारे में कई सामान्य निष्कर्ष स्थापित किए हैं।

➲ मैक्समूलर के अनुसार **प्राचीन भारत** के लोगों को इतिहास (**विशेषतः काल और तिथिक्रम**) का बोध नहीं था।

➲ उन्होंने यह भी कहा है कि भारत के लोग **स्वेच्छाचारी शासन** के आदी रहे हैं। वे **आध्यात्मिक या पारलौकिक समस्याओं** में ही डूबे रहे और **इहलौकिक समस्याओं** की चिंता नहीं करते थे।

➡ ***1817 ई. में स्काटलैंड निवासी जेम्स मिल ने तीन खंडों में 'अ हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' (ब्रिटिश भारत का इतिहास) लिखा,*** जिसमें उन्होंने इतिहास को **तीन काल खंड** यथा- हिन्दू काल, मुस्लिम काल तथा ब्रिटिश काल में विभाजित किया।

☛ उपर्युक्त सूचना को कक्षा **11** की मक्खन लाल की ओल्ड एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तक में इस तरह कहा गया है-

जेम्स मिल ने **1806** से **1818** के मध्य **6 खंडों** में **'भारत का इतिहास'** लिखा तथा भारतीय इतिहास को **तीन काल खंडों** में विभाजित किया- यथा- **हिन्दू काल, मुस्लिम काल** तथा **ब्रिटिश काल**।

उपर्युक्त दोनों सूचनाओं का **तुलनात्मक ब्यौरा** निम्नवत है-

शीर्षक	न्यू एन.सी.ई.आर.टी (कक्षा-8) के अनुसार	ओल्ड एन.सी.ई.आर.टी. (कक्षा-11, मक्खन लाल) के अनुसार
पुस्तक का नाम	'ए हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया'	'भारत का इतिहास'
लेखन-काल	1817 ई. में	1806 से 1818 ई. में
कालखंडों की संख्या	तीन (3)	छः (6)

➲ **जाति - प्रथा या वर्ण व्यवस्था** को **सामाजिक भेदभाव** का भारी **कुचक्र** माना गया।

➲ **पाश्चात्य विद्वानों ने दृढ़तापूर्वक कहा कि भारतवासियों को-**
- न तो **राष्ट्रीय भावना का एहसास** था और
- न ही किसी प्रकार के **स्वशासन का अनुभव था।**

➲ ऐसे बहुत सारे निष्कर्ष **विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ (1843-1920)** की पुस्तक **'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'** में प्रकाशित हैं।

➲ स्मिथ द्वारा **प्राचीन भारत** का **पहला सुव्यवस्थित इतिहास 1904** ई. में तैयार किया गया।

➲ उसने यह पुस्तक उपलब्ध स्रोतों के गहन अध्ययन के आधार पर लिखी और इसमें **राजनीतिक इतिहास को प्रधानता दी।**

➲ **'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया'** पुस्तक में विन्सेंट आर्थर स्मिथ ने समुद्रगुप्त को युद्ध कौशल और बहादुरी के कारण **'भारत का नेपोलियन'** कहा।

➡ **इतिहास के प्रति स्मिथ की दृष्टि साम्राज्यवादी** थी। **इण्डियन सिविल सर्विस के निष्ठावान सदस्य** के रूप में उसने भारत में विदेशियों की भूमिका को उजागर किया।

➲ स्मिथ की पुस्तक के एक-तिहाई भाग में केवल सिकंदर का आक्रमण वर्णित है।

➲ इसमें भारत को **स्वेच्छाचारी शासन** वाला देश कहा गया है, जिसे ब्रिटिश शासन की स्थापना से पहले कभी **राजनीतिक एकता** का अनुभव नहीं हुआ था।

➲ स्मिथ ने लिखा है ''वस्तुतः भारतीय इतिहासकारों का सरोकार शासन के एक मात्र स्वरूप तानाशाही से ही है।''

➡ **सारांश यह कि ब्रिटिश इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास की जो व्याख्या की है उसका लक्ष्य था-**

भारत के चरित्र और उपलब्धियों को नीचा दिखाना **और** विदेशी शासन को न्यायोचित ठहराना।

■ *राष्ट्रवादियों की दृष्टि और योगदान (Vision And Contribution of the Nationalists)*

उपरोक्त सारी बातें **भारत** के विद्वानों, विशेषकर उनके लिए जो पाश्चात्य शिक्षा पाए हुए थे, पर भारी चुनौती बनकर आईं।

➡ वे एक ओर **उपनिवेशवादियों** द्वारा इतिहास को तोड़-मरोड़ कर **भारत** के अतीत की छवि धूमिल किए जाने से चिढ़े हुए थे।

- ➲ वहीं दूसरी ओर भारत के **पतनोन्मुख सामंती समाज** और **इंग्लैण्ड के फलते-फूलते पूंजीवादी समाज** के बीच घोर मतभेद देखकर दु:खी थे।
- ➲ **बहुतेरे विद्वान** दृढ़ संकल्प के साथ मैदान में उतरे। उनका मिशन भारतीय समाज को सुधारना ही नहीं था, बल्कि यह भी था कि भारत के प्राचीन इतिहास का इस प्रकार **पुनर्निर्माण** किया जाए कि, उससे समाज को सुधारने में और इससे भी बढ़कर, **स्वराज्य प्राप्त** करने में सहारा मिले।
- ➲ ऐसा करने में अधिकतर इतिहासकार तो **हिंदू पुनर्जागरण** की लहर में प्रवाहित हुए, किंतु ऐसे विद्वानों की भी कमी न थी जो **तर्कनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ रुख** अपनाए रहे।

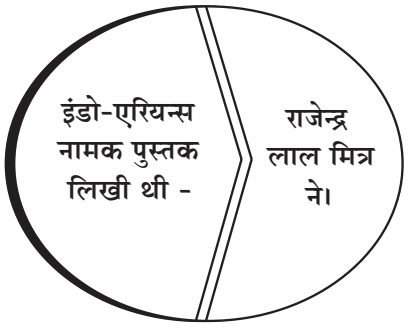

- ➲ प्राचीन परंपरा के परम **प्रेमी राजेंद्र लाल मित्र** ने प्राचीन समाज को **तर्कनिष्ठ दृष्टि** से देखा और **'इण्डो एरियन्स'** नामक पुस्तक में लिखकर यह सिद्ध किया कि **प्राचीन काल** में लोग **गोमांस** खाते थे।
- ➲ कुछ अन्य विद्वानों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि अपनी विशेषताओं के बावजूद वर्णव्यवस्था श्रम-विभाजन पर आधारित उस वर्ग प्रथा में मूलत: भिन्न नहीं है, जो यूरोप के प्राक्-औद्योगिक और प्राचीन समाजों में पाई गई है।

➡ एक ही साक्ष्य के बारे में मतभेदों का और उसकी अलग-अलग व्याख्या का न केवल सम्मान किया जाता है, बल्कि इसे **शैक्षिक** संसार के स्वस्थ विकास के लिए अत्यंत आवश्यक भी समझा जाता है।

- ➲ लेकिन किसी के अतीत के इतिहास को विकृत करने के बारे में मतभेद एक बिल्कुल अलग बात है।

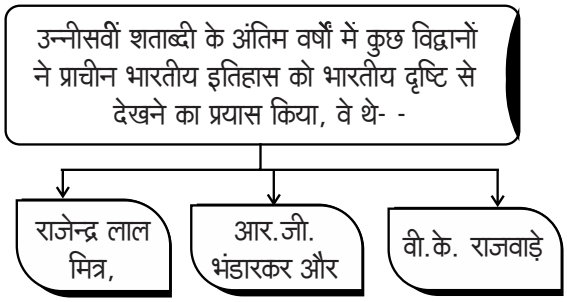

- ➲ **भंडारकर और राजवाड़े** दोनों ने **महाराष्ट्र क्षेत्र** के इतिहास के बारे में काम किया और उस क्षेत्र के **सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक इतिहास** का **पुनर्निर्माण** किया।
- ➲ **आर. जी. भण्डारकर ने सातवाहनों के दक्कन** के इतिहास का और **वैष्णव** एवं **अन्य संप्रदायों** के इतिहास का **पुनर्निर्माण** किया। ये महान **समाज-सुधारक** थे। इन्होंने शोधों से **विधवा-विवाह** का **समर्थन** किया और **जाति-प्रथा एवं बाल विवाह** की कुप्रथा का **खण्डन** किया।

➡ लेकिन इतिहास के साम्राज्यवादी संस्करण को वास्तविक चुनौती बीसवीं शताब्दी के पहले पच्चीस वर्षों में मिली।

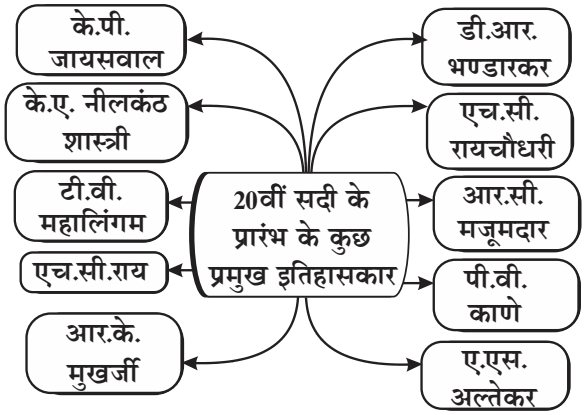

- ➲ **डी.आर भंडारकर ने प्राचीन भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण पुरालेखों और सिक्कों के साक्ष्य के आधार पर किया।**
- ➲ **सिक्कों के आधार** पर इतिहास का अध्ययन **'न्यूमिसमेटिक'** कहलाता है तथा **पुरालेखों के आधार पर** इतिहास का अध्ययन **'एपिग्राफी'** कहलाता है।
- ➲ **अशोक** और **प्राचीन भारतीय राज्यव्यवस्था** के बारे में उनकी पुस्तकों से उन अनेक भ्रांतियों का निवारण करने में सहायता मिली, **जो साम्राज्यवादी इतिहासकारों** द्वारा उत्पन्न की गई थीं।

➡ राजनीतिक विचारों और संस्थाओं के क्षेत्र में **साम्राज्यवादी विचारधारा को** सबसे बड़ी चोट **के.पी. जायसवाल** (1881-1937) द्वारा पहुंचाई गई।

- ➲ **1924 में** प्रकाशित अपनी **पुस्तक 'हिंदू पॉलिटी'** में, **जायसवाल** ने इस भ्रांति को प्रभावशाली ढंग से धराशायी कर दिया कि, भारतीयों के कोई राजनीतिक विचार नहीं थे और उनकी कोई राजनीतिक संस्थाएं नहीं थीं।

➡ **साहित्यिक** और **पुरालेखीय** स्रोतों के उनके अध्ययन से यह प्रदर्शित हुआ कि भारत कोई **निरंकुशतावादी देश नहीं** था, जैसा कि **साम्राज्यवादी** इतिहासकारों द्वारा प्रचारित किया गया था।

- ➲ **वंशगत राज्य-पद्धति के** अलावा, भारत में **ऋग्वेद के काल से ही गणतंत्रों** की एक **समृद्ध परंपरा** रही।
- ➲ उन्होंने प्रमाणपूर्वक यह दर्शाया कि ब्रिटिश इतिहासकारों के विचारों के विपरीत, **भारतीय राज्य-व्यवस्था** और **शासन प्रणाली तत्कालीन विश्व** के अन्य किसी भी भाग की तुलना में कहीं **अधिक विकसित थी।**
- ➲ **जायसवाल** की पुस्तक '**हिंदू पॉलिटी**' प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में आज तक लिखी गई **सबसे अधिक महत्वपूर्ण पुस्तकों** में से एक मानी जाती है।
- ➲ विदित है कि **हिन्दू पॉलिटी (1924)** में **जायसवाल ने गणतंत्रीय प्रशासन** का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है उस पर **यू. एन. घोषाल** (**1886-1969**) सहित बहुत-से लेखकों ने कुछ आपत्तियां की हैं, फिर भी **गणतांत्रिक प्रयोग के प्रथा** के बारे में उनकी मूल धारणा व्यापक रूप से मान ली गई है और उनकी अग्रणी कृति **हिंदू पॉलिटी क्लासिक रचना** मानी जाती है।
- ➲ **एच.सी. रायचौधरी** (**1892-1957**) ने अपनी पुस्तक **'पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इण्डिया'** में महाभारत के युद्ध के समय से लेकर गुप्त साम्राज्य के समय तक के प्राचीन भारत के इतिहास का पुनर्निर्माण किया और वी.ए. स्मिथ द्वारा उत्पन्न किए गए भ्रम के बादलों को लगभग पूरी तरह साफ कर दिया।

➡ **आर.सी. मजूमदार** को भारतीय इतिहासकारों में सबसे वरिष्ठ इतिहासकार समझा जाता है। वह बहुसर्जक लेखकों में से एक थे तथा उन्होंने भारतीय इतिहास के लगभग हर पहलू पर लिखा है। जिसमें से **11** खण्डों में प्रकाशित **हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ दि इण्डियन पीपुल** के महासंपादक थे।

- ➲ उन्होंने **प्राचीन भारत से स्वतंत्रता संग्राम** तक के इतिहास के बारे में कई पुस्तकें लिखी हैं।

➡ **के.ए. नीलकंठ शास्त्री (1892-1975)** ने **दक्षिण भारत** के इतिहास को समझने में भारी योगदान दिया है।

- ➲ **'ए हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इण्डिया'** और '**ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इण्डिया**' जैसी उनकी पुस्तकें उनकी प्रखर विद्वता के अनुपम उदाहरण हैं।

➡ **आर.के. मुखर्जी (1886-1964)** शायद इस दृष्टि से विशिष्ट लेखकों में से एक थे, कि वह कठिन से कठिन विषयों को सरल भाषा में व्यक्त कर सकते थे।

- ➲ हिंदू सिविलाइजेशन चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक और फंडामेंटल यूनिटी ऑफ इंडिया जैसी उनकी पुस्तकों ने भारत के सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास को न केवल ठोस आधार प्रदान किया बल्कि उसे एक सामान्य पाठक की समझ के योग्य बना दिया।

➡ **पी.वी. काणे (1880-1972) संस्कृत** के एक महान विद्वान थे।

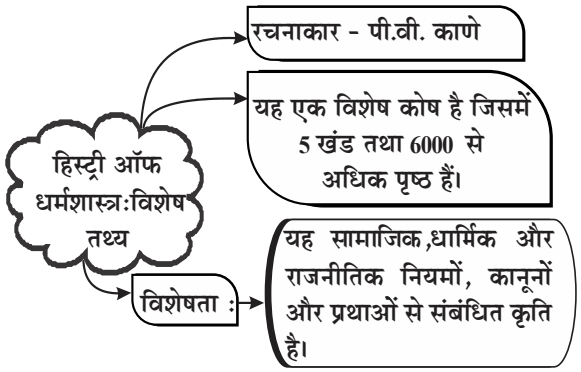

- ➲ इन महान विद्वानों के योगदान से **ईसाई** धर्म प्रचारकों और साम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा फैलाई गई धुंध को साफ करने में सहायता मिली।

■ *इतिहास की मार्क्सवादी विचारधारा (Marxist School of History)*

मार्क्सवादी, इतिहास के सार्वभौम नियमों और चरणों में विश्वास करते हैं। उनका मानना है कि सभी समाज इतिहास के कम-से-कम पांच चरणों से गुजरते हैं।

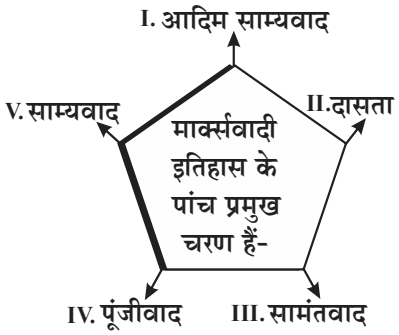

- ➲ ये चरण **कार्ल मार्क्स** और **एफ. एंजेल्स** ने परिभाषित किए थे, जो **साम्यवाद** के प्रतिपादक थे।

➡ **जी.डब्ल्यू.एफ. हेगल** (1770-1831) एक महान पाश्चात्य दार्शनिक थे। **प्रारंभ में हेगल** का विचार था कि भारत को सामान्य रूप से एक **पूर्वी देश** के रूप में **दर्शनशास्त्र** के इतिहास से बाहर रखा जाना चाहिए।

- ➲ तथापि हेगल को अनेक लेखों के आलोक में बड़ी अनिच्छापूर्वक यह स्वीकार करना पड़ा कि भारत की अपनी एक दार्शनिक प्रणाली है, और उसका इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। लेकिन उसने स्पष्ट रूप से इसे यूनान और रोम के दर्शनशास्त्र से घटिया स्तर का माना।

➡ इसी प्रकार **मार्क्स** को भी भारत के बारे में बड़ी छिछली जानकारी थी और वह वस्तुतः **जातीय पूर्वाग्रहों एवं स्वार्थों** से मुक्त नहीं था।

- ➲ मार्क्स भारत को ब्रिटेन द्वारा दास बनाए जाने का समर्थक था और उसने भारत को एक बिना इतिहास वाला पिछड़ा और असभ्य देश कहकर उसकी उपेक्षा की।

> ➲ **मार्क्स** ने सन् **1853** में लिखा कि''**इस प्रकार भारत पराजित होने से नहीं बच सकता था और भारत का संपूर्ण पिछला इतिहास, यदि कुछ है तो उन उत्तरोत्तर पराजयों का इतिहास है, जो उसने झेली है।**''

- ➲ भारतीय समाज का कोई इतिहास नहीं है, कम से कम कोई ज्ञात इतिहास नहीं है। हम जिसे इसका इतिहास कहते हैं वह केवल इसके उत्तरोत्तर आक्रमणकारियों का इतिहास है, जिन्होंने इस अप्रतिरोधकारी और अपरिवर्तनशील समाज की निष्क्रियता के आधार पर अपने साम्राज्य स्थापित किए थे।

➡ भारत में ब्रिटेन के शासन के दौरान **हेगलवादी व मार्क्सवादी विचारधारा** का एक तरह से कोई अस्तित्व नहीं था, लेकिन भारत के स्वतंत्र होने के बाद, इतिहास लेखन की **मार्क्सवादी विचारधारा** एक सर्वाधिक प्रभावशाली और प्रमुख विचारधारा बन गई।

- ➲ परिणामतः **आदिम साम्यवाद**, **दासता**, **सामंतवाद** और **पूंजीवाद** अर्थात **मार्क्स और एंजेल्स** द्वारा प्रतिपादित इतिहास के विभिन्न चरणों को भारतीय इतिहास पर भी लागू किया जाने लगा।
- ➲ **साम्राज्यवादी** विचारधारा की भांति **मार्क्सवादी** विचारधारा को भी **भारतीय** सभ्यता में कोई अच्छी चीज दिखाई नहीं देती।

> ➲ मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार **कुषाण काल** भारत के इतिहास का **स्वर्णिम काल** है, **सातवाहन अथवा गुप्त काल नहीं** ।

➡ **गुप्त वंश** के समय से लेकर **बारहवीं शताब्दी ई. में मुसलमानों की विजय** तक के काल को ''**सामंतवाद का युग**'' अर्थात ''**अंध युग**'' कहा गया है, जिसमें हर चीज का पतन हो गया था।

- ➲ लेकिन तथ्य तो यह है कि **राजनीतिक उथल-पुथल** के बावजूद इस **तथाकथित अंध युग में साहित्य, विज्ञान, कला, स्थापत्य, अर्थव्यवस्था** आदि के क्षेत्रों में **चहुमुखी विकास हुआ।**

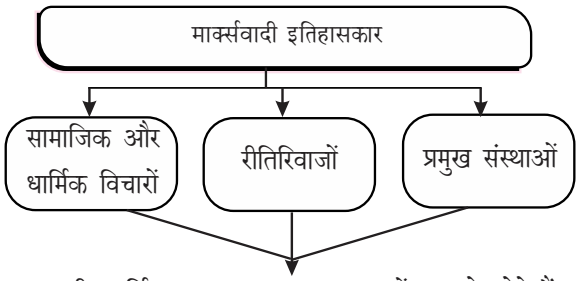

की आर्थिक आधार पर व्याख्या करनें पर जोर देते हैं।

- ➲ **दामोदर धर्मानन्द कौशांबी** को इस विचारधारा के अग्रदूतों में सबसे **पहला व्यक्ति** कहा जा सकता है।

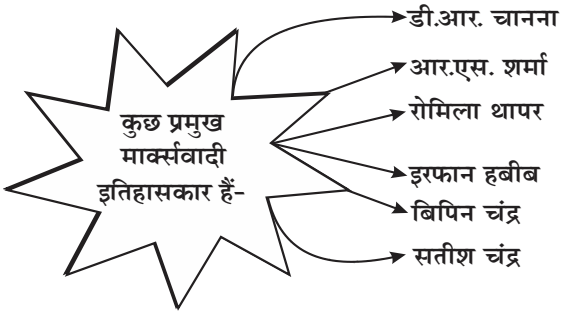

- इतिहास की **मार्क्सवादी योजना में मार्क्सवाद** एक आदर्श विचार तथा **सोवियत संघ एक आदर्श राज्य** था।
- **सोवियत संघ** के टूटने और **मार्क्सवादी** राज्य व्यवस्था और अर्थव्यवस्था के लगभग तिरोभाव के बाद **मार्क्सवादी** इतिहासकारों को इसके पतन के कारणों की व्याख्या करने में कठिनाई आ रही है।

वर्तमान में इतिहास अध्ययन की प्रासंगिकता (The relevance of the Study of History in Present times)

आधुनिक काल में हम जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं उन के संदर्भ में भारत के इतिहास का अध्ययन विशेष सार्थक सिद्ध होता है।

➡ कुछ लोग **प्राचीन संस्कृति और सभ्यता** को फिर से लौटाने के लिए आवाज उठा रहे हैं और भारत के **उज्ज्वल अतीत** के गुणगान में **भावविभोर** हो जाते हैं।

- उन्हें **कला-कौशल** की प्राचीन वस्तुओं के **संरक्षण** की उतनी चिंता नहीं है। वास्तव में वे समाज और संस्कृति का पुराना प्रतिमान स्थापित करना चाहते हैं।
- ऐसी स्थिति में **अतीत को ठीक से समझना निहायत जरूरी** है।
- बेशक, भारत के लोगों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति की, पर केवल अतीत की प्रगति के बल पर ही हम आज के ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों का मुकाबला नहीं कर सकते हैं।

➡ इसमें संदेह नहीं, कि प्राचीन भारतीय समाज अन्यायग्रस्त था। निचलें वर्णों पर, विशेषत: शूद्रों और चांडालों पर, जिस तरह से अपात्रताएं थोप दी गई थीं वह आज के विचार से बड़ा ही खेदजनक है। अगर पुरानी जीवन पद्धति में परिवर्तन न लाया जाए तो स्वभावत: वे सारी विशेषताएं आज भी सर उठाएंगी ही।

- भारत में सभ्यता के विकास की धारा इन सामाजिक भेदभावों की वृद्धि के साथ-साथ बही है।
- **प्रकृतिमूलक** और **मानवमूलक** कठिनाइयों पर विजय पाने में हमारे पूर्वजों को जो सफलता मिली है। उससे हमें हमारे भविष्य के लिए प्रेरणा मिलती है।
- अतीत को पुन: लौटाने का अर्थ होगा, उन सामाजिक विषमताओं को कायम रखना जिनके कारण हमारा देश चिरकाल से दुर्दशाग्रस्त रहा है। इसलिए सही ढंग से अतीत का मर्म समझना आवश्यक है।

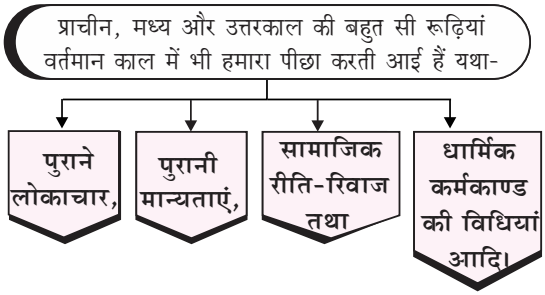

- दुर्भाग्यवश ये पुराने **दुराग्रह व्यक्ति और राष्ट्र** दोनों के **विकास** में भीतर से **अवरोध** उत्पन्न करते हैं।
- इस तरह की बातों को **उपनिवेशीय** परिस्थिति में जान-बूझकर बढ़ावा दिया जाता रहा।
- जब तक समाज से अतीत के ऐसे दुराग्रहों को दूर नहीं कर देंगे तब तक **भारत** तीव्र गति से आगे नहीं बढ़ सकेगा।
- **जातिवाद और संप्रदायवाद** हमारे देश को **जनतांत्रिक** रास्ते से एकता कायम रखते हुए आगे बढ़ने देने में बाधा डाल रहे हैं।
- **जातीय व्यवधान** और **पूर्वाग्रह** पढ़े-लिखे लोगों के मन में भी **शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा** को घुसने नहीं देती और अपने सामान्य हित में हमें **एकताबद्ध** नहीं होने देती।
- **महिलाओं को नागरिक अधिकार** भले ही मिल गए हों, लेकिन समाज में युगों से विभिन्न क्षेत्रों में पिछड़ी होने के कारण वे अपनी भूमिका निभाने में समर्थ नहीं हुई हैं। निम्न वर्ण के लोगों का भी यही हाल है।

अत: प्राचीन भारत का इतिहास केवल उन्हीं लोगों के लिए प्रासंगिक नहीं है, जो जानना चाहते हैं कि अतीत का वह उज्ज्वल स्वरूप क्या था जिसे कुछ लोग फिर से लौटाना चाहते हैं, बल्कि उन लोगों के लिए भी है जो **देश** की **प्रगति** में बाधा डालने वाले **तत्वों** को पहचानना चाहते हैं।

अध्याय-स्मरणिका (FLASHBACK)

प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन

परिचय

हिंद शब्द संस्कृत के **सिंधु** से निकला है, कालांतर में यह देश इंडिया के नाम से मशहूर हुआ जो यूनानी पर्याय के निकट है।

भारतवर्ष नाम, **भरत** नामक एक प्राचीन वंश के नाम पर दिया गया है।

महत्व

किसी समाज या राष्ट्र के अध्ययन के द्वारा हम उस समाज या **राष्ट्र के अतीत** को जान सकते हैं।

इतिहास का अध्ययन निम्न विषयों को समझने में सहायता करता है।

- संस्कृति,
- धर्म,
- समाज व्यवस्था।

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन

राष्ट्रवादी

राजेन्द्र लाल मित्रा ने **'इंडो एरियंस'** नामक पुस्तक को प्रकाशित किया, जिसमें प्राचीन भारत को तर्क दृष्टि से देखने का प्रयास किया।

आर.जी. भंडारकर ने **सातवाहनों के दक्कन** के इतिहास का और वैष्णव तथा अन्य संप्रदायों के इतिहास का पुनः निर्माण किया।

एच.सी. राय चौधरी ने अपनी पुस्तक **'पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया'** में महाभारत के युद्ध से लेकर गुप्त काल तक के इतिहास का वर्णन किया।

के.ए.नीलकंठ शास्त्री ने **'द हिस्ट्री ऑफ एंशिएंट इंडिया'** और **'ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इंडिया'** में दक्षिण भारत के इतिहास को समझाने का प्रयास किया।

पी.वी. काणे जो कि संस्कृत के विद्वान हैं, इन्होंने **'हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र'** (एक विश्वकोष) की रचना की।

भारतीय

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राजा को यह सलाह दी है, कि उसे **प्रतिदिन अपना कुछ समय इतिहास को सुनने में लगाना चाहिए**।

पुराणों के संदर्भ में **इतिहास अतीत के प्रकाश में वर्तमान और भविष्य को आलोकित करने का साधन** समझा जाता है।

इतिहास के प्रयोजन से यह समझना व बताना था कि व्यक्ति में **परिवार** के प्रति, **वंश** के प्रति, **गांव** के प्रति, **राष्ट्र/मानवता** के प्रति त्याग, बलिदान, कर्तव्य की भावना कैसे उत्पन्न हो।

प्राचीन भारत के इतिहास लेखन का **सबसे पहला प्रयास यूनानी लेखकों** द्वारा किया गया जिसमें **हेरोडोटस, नियार्कस प्लूटार्क, स्ट्रैबो** आदि प्रमुख हैं।

वाल्टेयर ने **भारत को धर्म की सबसे प्राचीन और विशुद्ध रूप की वासभूमि** और **विश्व की सभ्यता की शैशवस्थली (पालना) माना है।**

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन

साम्राज्यवादी

1776 में मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद **'ए कोड ऑफ जेन्टू लॉज'** के नाम से किया गया।

- **1784** में **सर विलियम जोन्स द्वारा कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल'** नामक शोध संस्थान की स्थापना।
- **1804 में बंबई** में **एशियाटिक सोसाइटी** की स्थापना।
- **1923 में लंदन** में **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन** की स्थापना।

विन्सेंट ऑर्थर स्मिथ की पुस्तक **'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया'** जो **1904** में प्रकाशित हुई, वह पहला प्राचीन भारत का सुव्यवस्थित इतिहास था।

मार्क्सवादी

काल मार्क्स और एफ. एन्जेल्स ने परिभाषित किया कि सभी **समाज इतिहास के कम से पांच चरणों** से गुजरते हैं।

मार्क्सवादी विचारधारा में गुप्त वंश से बारहवीं शताब्दी ई. में मुसलमानों की विजय तक के काल को **'सामंतवाद' का युग अर्थात 'अंध युग'** कहा गया है। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार **कुषाण काल-भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल है।**

मार्क्सवादी विचारधारा में **मार्क्सवाद एक आदर्श विचार** तथा सोवियत संघ एक आदर्श राज्य था।

अध्ययन की प्रासंगिकता

कुछ लोग भारत के उज्ज्वल अतीत के गुणगान में भाव-विभोर हो जाते हैं। उन्हें कला-कौशल की प्राचीन वस्तुओं के संरक्षण की चिंता नहीं है, बल्कि वे पुनः प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को फिर से लौटाने के लिए आवाज उठा रहे हैं।

अतीत को पुनः लौटाने का अर्थ होगा, **उन सामाजिक विषमताओं को कायम रखना जिनके कारण हमारा देश चिर काल से दुर्दशाग्रस्त रहा है।** इसलिए सही ढंग से अतीत का मर्म समझना अति आवश्यक है।

वस्तुनिष्ठ-खण्ड (Objective-Section)

(पूर्णतः NCERT-पाठ्य सामग्री पर आधारित)

1. इतिहास का अध्ययन किन विषयों को जानने में सहायता करता है?

(a) लोगों की संस्कृति को जानने में
(b) धर्म संबंधित समझ विकसित करने में
(c) सामाजिक व्यवस्था को जानने तथा समझने में
(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर—(d)

इतिहास का अध्ययन न सिर्फ लोगों की संस्कृति को जानने में बल्कि धर्म संबंधित समझ विकसित करने के साथ सामाजिक व्यवस्था को जानने-समझने में भी मदद करता है। उपर्युक्त सभी विकल्प सत्य हैं।

2. अतीत का अध्ययन हमें क्या-क्या सिखाता है?

(i) अतीत से वर्तमान और भविष्य तक का सबक।
(ii) उन गलतियों के दोहराव से बचना जिनसे समूल मानव जाति संकट मे पड़ती है।
(iii) समरसता, शांति व समृद्धि को बढ़ाना।
(iv) आज की परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझना

(a) i, ii, iii, (b) i, ii, iv
(c) iii, iv (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर—(d)

अतीत गलतियों के दोहराव से बचाता है तथा परिस्थितियों को बेहतर बनाता है। यह समरसता, शांति व समृद्धि को भी बढ़ाने में मदद करता है। अतः कहा जा सकता है, कि अतीत वर्तमान व भविष्य का सबक है। उपर्युक्त सभी विकल्प अतीत के अध्ययन के संबंध में प्रासंगिक हैं।

3. कालांतर में भारत आने वाली प्रजातियों के समुच्चय का चयन करें-

(a) प्राक-आर्य, यूनानी, अमेरिकन, शक
(b) तुर्क, हूण, शक, प्राक-आर्य, हिंद-आर्य, यूनानी
(c) तुर्क, यूनानी, रोमन, अफ्रीकन, आर्य
(d) चीनी, रोमन, अफ्रीकन, अमेरिकन

उत्तर—(b)

कालांतर में भारत मे अनेक विदेशी प्रजातियां आयीं, जिनमें बहुत सी प्रजातियों ने भारत को अपना घर बनाया, जो क्रमवार निम्न हैं- प्राक-आर्य, हिंद-आर्य, यूनानी, तुर्क, हूण और शक।

4. भारतवर्ष नाम किस प्राचीन वंश के नाम पर पड़ा है?

(a) आर्य वंश (b) सूर्य वंश
(c) दशरथ वंश (d) भरत वंश

उत्तर—(d)

भारतवर्ष का नाम 'भरत' नामक प्राचीन वंश के नाम पर पड़ा। इसके निवासियों को 'भरत संतति' कहा गया है।

5. 'इण्डिया' नाम किस भाषा के सबसे नजदीक है?

(a) फारसी (b) अरबी
(c) यूनानी (d) संस्कृत

उत्तर—(c)

हिंदू शब्द संस्कृत के सिंध शब्द से निकला है। कालक्रमेण यह देश 'इण्डिया' के नाम से मशहूर हुआ। 'इण्डिया' नाम यूनानी पर्याय के नजदीक है। यह फारसी और अरबी भाषाओं में 'हिंद' नाम से विदित हुआ है।

6. ईसा-पूर्व तीसरी सदी में लगभग देश भर की लिंगुआ-फ्रैंका/संपर्क भाषा बनकर कौन सी भाषा सामने आयी?

(a) संस्कृत (b) ब्राह्मी
(c) प्राकृत (d) खरोष्ठी

उत्तर—(c)

ईसा-पूर्व तीसरी सदी में 'प्राकृत' भाषा ने देश भर में लिंगुआ-फ्रैंका/संपर्क भाषा का कार्य किया। ईसा-पूर्व तीसरी सदी के बाद यह स्थान 'संस्कृत' ने ले लिया और देश के कोने-कोने में राजभाषा के रूप में प्रचलित हुई, जिसका प्रभाव गुप्त काल तक रहा।

7. 'दि वण्डर दैट वाज इंडिया' नामक पुस्तक किस इतिहासकार की है?

(a) ए.एल.बाशम (b) के.एम.पणिक्कर
(c) रोमिला थापर (d) कार्ल मार्क्स

उत्तर—(a)

'दि वण्डर दैट वाज इण्डिया' के लेखक ब्रिटिश इतिहासकार ए. एल.बाशम हैं। इन्होंने अपनी पुस्तक में भारतीय समाज का गहन अध्ययन करते हुए कहा कि प्राचीन विश्व के किसी भी अन्य भाग में मनुष्य-मनुष्य के बीच और मनुष्य तथा राज्य के बीच के संबंध इतने अच्छे और मानवोचित नहीं रहे, जितने भारत में थे।

8. निम्नलिखित विकल्पों में से पुराणों के अनुसार इतिहास के विषयों को सही क्रम में मिलाएं।

(A) सर्ग **(i) समय की आवृत्ति**
(B) प्रतिसर्ग **(ii) सृष्टि का प्रत्यावर्तन**

(C) मन्वंतर **(iii) सृष्टि की उत्पत्ति**

(D) वंशानुचरित **(iv) चुने हुए पात्रों की जीवनियां**

	A	B	C	D
a	i	ii	iii	iv
b	iv	iii	ii	i
c	iii	ii	i	iv
d	ii	iii	iv	i

उत्तर—(c)

पुराणों के अनुसार इतिहास के विषयों को मुख्यत: पांच वर्गों में विभाजित किया गया है- (1) सर्ग - सृष्टि की उत्पत्ति (2) प्रतिसर्ग - सृष्टि का प्रत्यावर्तन एवं प्रतिविकास (3) मन्वंतर - समय की आवृत्ति (4) वंश - राजाओं और ऋषियों की वंशावलियां (5) वंशानुचरित - चुने हुए पात्रों की जीवनियां।

9. प्राचीन भारत के बारे में भारत की सीमाओं से बाहर भारत के इतिहास को लिखने का प्रयास सर्वप्रथम किसने किया?

(a) तुर्कों ने (b) सुमेरियनों ने

(c) हूणों ने (d) यूनानियों ने

उत्तर—(d)

जब हम प्राचीन भारत के बारे में भारत की सीमाओं से बाहर लिखे गए इतिहास पर नजर डालते हैं, तो हमें पता चलता है, कि इस दिशा में सबसे पहला प्रयास यूनानी लेखकों का है, जिसमें उल्लेखनीय हैं-हेरोडोटस, नियार्कस, मेगस्थनीज, प्लूटार्क, एरियन, स्ट्रैबो, प्लिनी और टॉल्मी।

10. किस यूनानी इतिहासकार ने भारतीय इतिहास का गहन रूप से अध्ययन किया?

(a) हेरोडोटस (b) मेगस्थनीज

(c) नियार्कस (d) एरियन

उत्तर—(b)

इतिहास लेखन की दृष्टि से मेगस्थनीज को छोड़कर सभी यूनानी इतिहासकारों ने सही अर्थों में केवल सीमांतिक रूप से भारत को स्पर्श किया है। उनका सरोकार अधिकांशत: भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों और प्रधानत: उन क्षेत्रों से रहा जो फारस (पर्शिया) और यूनान के क्षत्रपों के राज्यों के भाग थे अथवा जहां सिकंदर का अभियान हुआ था।

11. मेगस्थनीज की पुस्तक के संदर्भ में कौन - से कथन सत्य हैं?

(I) मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम 'इण्डिका' है।

(II) मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक में भारत को 7 वर्गों में विभाजित किया है।

(a) केवल I (b) केवल II

(c) I और II (d) न तो I, न ही II

उत्तर—(c)

यूनानी राजदूत मेगस्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था, उसकी पुस्तक का नाम **'इण्डिका'** है। हालांकि इण्डिका पुस्तक आज मौजूद नहीं है, लेकिन हमें इस पुस्तक की बातों का पता डायोडोरस, स्ट्रैबो और एरियन के लेखों में शामिल अनेक उद्धरणों से चलता है। शायद मेगस्थनीज को भारतीय समाज और सामाजिक व्यवस्था पर बहुत अच्छी समझ नहीं थी, क्योंकि मेगस्थनीज ने लिखा है कि भारतीय समाज 7 वर्गों पर आधारित था।

12. निम्न कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन करें-

कथन 1- वाल्टेयर ने लिखा कि - ''मिस्रवासियों, यूनानियों और रोमनों का मिथक विज्ञान और सृष्टि मीमांसा ब्राह्मणों के सिद्धातों से उधार ली गई हैं।''

कथन 2- हॉलवेल ने लिखा कि शतरंज बैकगैमन (पासे का खेल), रेखागणित हमारी अपनी बन चुकी है, हम भारतीय लोगों के ऋणी हैं।

(a) कथन 1 (b) कथन 2

(c) कथन 1, 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

उत्तर—(d)

वाल्टेयर ने भारतीयों का वर्णन करते हुए लिखा है कि ''अपने अंकों, बैकगैमन (पासे के खेल) और शतरंज के खेल, रेखागणित के अपने प्रथम सिद्धांतों और अपनी कथा-कहानियों, जो हमारी अपनी बन चुकी है, के लिए हम भारतीयों के ऋणी हैं।'' संक्षेप में मेरी यह मान्यता है, कि हमारी प्रत्येक चीज गंगा के तट से आई है, जिसमें- खगोल विद्या, ज्योतिष विद्या, अध्यात्मिक विद्या तथा तत्व मीमांसा शामिल हैं। उपर्युक्त कारणों से वाल्टेयर ने भारत को विश्वसभ्यता का पालन कहा है। अत: कथन 2 गलत है।

● हॉलवेल ने लिखा है, ''कि हिंदू ग्रंथों ने ईसाई ग्रंथों में उद्घाटित सत्य से कहीं अधिक श्रेष्ठ सत्य का उद्घाटन किया है।'' हॉलवेल ने यह भी लिखा, कि -''मिस्रवासियों, यूनानियों और रोमनों की मिथक विद्या (पौराणिक कथाएं) और सृष्टि मीमांसा ब्राह्मणों के सिद्धातों से उधार ली गई हैं। अत: कथन- 1 गलत है। जॉन हॉलवेल, **नेन्थेनियल हालहेड** और अलेक्जेंडर डी. सभी ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी से जुड़े थे, परंतु इन्होंने प्राचीन संसार में भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता सिद्ध की। इस प्रकार कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।

13. निम्न कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन करें-

कथन 1- मेगस्थनीज की पुस्तक 'इंडिका' वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

कथन 2- अलबरूनी संस्कृत भाषा नहीं जानता था।

(a) कथन 1 (b) कथन 2

(c) कथन 1, 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

उत्तर—(a)

मेगस्थनीज ने अपनी **इण्डिका** नामक पुस्तक में तत्कालीन साम्राज्यों के बारे में विस्तारपूर्वक लिखा है, लेकिन यह पुस्तक वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। **मेगस्थनीज** को भारतीय समाज और **सामाजिक व्यवस्था** की बहुत कम जानकारी थी। **मेगस्थनीज** को किसी भारतीय **भाषा** का ज्ञान नहीं था। **मेगस्थनीज** के विपरीत, **अलबरूनी ने संस्कृत भाषा का अध्ययन** किया और भारतीय स्रोतों का सही-सही ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश की।

14. 1776 ई. में प्रकाशित कानूनी पुस्तक 'ए कोड ऑफ जेंटू लॉज' पहले किस नाम से जानी जाती थी?

(a) महाभारत (b) अर्थशास्त्र
(c) अथर्ववेद (d) मनुस्मृति

उत्तर—(d)

जब 1765 में बंगाल व बिहार ईस्ट इण्डिया कंपनी के शासन में आया, तब शासकों को हिंदुओं में उत्तराधिकार की न्याय व्यवस्था स्थापित करने में कठिनाई का अनुभव हुआ। अतः 1776 ई. में सबसे अधिक प्रामाणिक मानी जाने वाली **मनुस्मृति** का अंग्रेजी अनुवाद 'ए कोड ऑफ जेंटू लॉज' के नाम से कराया गया।

15. 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' की स्थापना किस सन् में की गयी थी?

(a) 1780 (b) 1784
(c) 1790 (d) 1884

उत्तर—(b)

प्राचीन कानूनों और रीति-रिवाजों को समझने के लिए प्रयास आरंभ हुआ, जो व्यापक रूप से अठारहवीं सदी तक चलता रहा। इसी के परिणाम स्वरूप 1784 ई. में कलकत्ता में **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** नामक शोध संस्था की स्थापना हुई।

16. 1785 ई. मे भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद किस अंग्रेज द्वारा किया गया?

(a) स्टुअर्ट पिग्गट (b) राल्फ ग्रिफिथ
(c) विल्किंसन (d) लॉर्ड मैकाले

उत्तर—(c)

सर चार्ल्स विल्किंसन अंग्रेजी भाषा में **भगवद्गीता** के पहले अनुवादक थे। 1784 ई. में विल्किंसन ने विलियम जोन्स की एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना करने में मदद की।राल्फ ग्रिफिथ वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले पहले यूरोपियन थे।

17. निम्नलिखित का सही मिलान करें-

(A) एशियाटिक सोसाइटी (बम्बई) की स्थापना (i) 1784
(B) लंदन एशियाटिक सोसाइटी का गठन (ii) 1804
(C) कलकत्ता एशियाटिक सोसाइटी का गठन (iii) 1823

	A	B	C
(a)	i	iii	ii
(b)	ii	iii	i
(c)	iii	ii	i
(d)	ii	i	iii

उत्तर—(b)

एशियाटिक सोसाइटी (बम्बई) की स्थापना - 1804 ई. में, लंदन एशियाटिक सोसाइटी का गठन - 1823 ई. में, कलकत्ता एशियाटिक सोसाइटी का गठन -1784 ई. में। उपर्युक्त सभी संस्थानों की स्थापना **भारत में प्राचीन ग्रंथों व विज्ञान, दर्शन पर** शोध के दृष्टिकोण से की गयी थी।

18. मैक्समूलर के संपादकत्व में विशाल प्राचीन धर्मग्रथों का अनुवाद किस नाम से जाना गया?

(a) सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट सीरीज
(b) लिंगुआ-फ्रैंका
(c) ए कोड ऑफ जेंटू लॉज
(d) द अनसेक्रेड बुक्स ऑफ वेस्टइण्डीज

उत्तर—(a)

यह अनुवाद 1857 के विद्रोह के पश्चात अंग्रेजों ने महसूस किया, कि जिन विदेशी लोगों पर उन्हें शासन करना है, उनके रीति-रिवाजों और सामाजिक व्यवस्थाओं का उन्हें गहन ज्ञान प्राप्त करना होगा।अतः अंग्रेजी धर्मप्रचारकों ने भी भारतीय धर्म की दुर्बलताओं को जानना आवश्यक समझा, ताकि वे धर्म परिवर्तन करा सकें और भारत में ब्रिटिश सम्राज्य को मजबूत बना सकें। इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मैक्समूलर के संपादकत्व में विशाल मात्रा में प्राचीन धर्मग्रंथों का अंग्रेजी अनुवाद किया गया। 'सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट सीरीज' कुल मिलाकर 50 खण्डों में प्रकाशित हुई, जिसमें प्राचीन भारतीय ग्रंथों को समाहित किया गया।

19. 1904 में 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'' नाम से प्रकाशित पुस्तक में प्राचीन भारत का पहला सुव्यवस्थित इतिहास तैयार किया गया, यह किस इतिहासकार द्वारा लिखी गयी थी?

(a) मैक्समूलर (b) विंसेंट आर्थर स्मिथ
(c) विल्किसन (d) इमेंयुअल

उत्तर—(b)

विन्सेंट आर्थर स्मिथ की दृष्टि साम्राज्यवादी थी। वे इण्डियन सिविल सर्विस के निष्ठावान सदस्य थे। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है, कि **''भारतवासियों को न तो राष्ट्रीय भावना का एहसास था और न ही किसी प्रकार के स्वशासन का अनुभव।''** ऐसे बहुत सारे निष्कर्ष विन्सेंट आर्थर स्मिथ की पुस्तक **'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया'**, में प्रकाशित हैं। उसने प्राचीन भारत का सुव्यवस्थित इतिहास 1904 ई. में तैयार किया। जिसमें राजनीतिक इतिहास की प्रधानता है। स्मिथ की पुस्तक के एक-तिहाई भाग में केवल सिकंदर का आक्रमण वर्णित है।

20. 'इण्डो-एरियंस' नामक पुस्तक किस भारतीय इतिहासकार ने लिखी?

(a) मजूमदार (b) बालगंगाधर तिलक
(c) दयाराम साहनी (d) राजेंद्र लाल मित्र

उत्तर—(d)

राजेंद्र लाल मित्र (1822-1891) की पुस्तक 'इण्डो-एरियंस' प्राचीन समाज को तर्कनिष्ठ दृष्टि से देखते हुए सर्वश्रेष्ठ पुस्तक मानी जाती है। इन्होंने पुस्तिका के माध्यम से यह सिद्ध किया है, कि प्राचीन काल में लोग गोमांस खाते थे।

21. आर.जी.भण्डारकर के विषय में निम्न कथनों मे से सही कथनों का चुनाव करें-

(1) इन्होंने सातवाहनों के दक्कन इतिहास का पुनर्निर्माण किया।
(2) ये महान समाज सुधारक थे।
(3) इन्होंने विधवा विवाह का सर्मथन किया।
(4) बाल विवाह व जाति प्रथा का खण्डन किया।

(a) 1 व 2 (b) 1,2,3
(c) 1 व 3 (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर—(d)

उपर्युक्त सभी विकल्प सत्य हैं-आर.जी. भण्डारकर महाराष्ट्र क्षेत्र के प्रमुख इतिहासकारों मे से एक थे, जिन्होंने सातवाहनों के दक्कन के इतिहास का पुनर्निर्माण किया। साथ ही विधवा-विवाह का समर्थन किया और बाल-विवाह तथा जाति प्रथा का खण्डन किया।

22. 'हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र' का संबंध किन परिक्षेत्रों से है?

(a) सामाजिक (b) धार्मिक
(c) राजनैतिक नियम-कानून (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर—(d)

पी.वी कांणे संस्कृत के महान विद्वान थे। इन्होंने 5 हजार खंडों एवं 6 हजार से अधिक पृष्ठों वाली महान कृति 'हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र' की रचना की, जिसे **विश्वकोश** की संज्ञा दी जाती है। इसके अंतर्गत सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक नियमों, कानूनों और प्रथाओं का वर्णन किया गया है। इस विश्वकोष के माध्यम से इन्होंने ईसाई धर्म प्रचारकों और सम्राज्यवादी इतिहासकारों द्वारा फैलाई गई धुंध को साफ किया।

23. मार्क्सवादियों के अनुसार इतिहास के पांच चरण दिए गए हैं। (i) आदिम साम्यवाद (ii), दासता, (iii) सामंतवाद, (iv) पूँजीवाद, (v) साम्यवाद। जिन्हें किसके द्वारा परिभाषित किया है?

(a) कार्ल मार्क्स
(b) एफ.एंजेल्स
(c) कार्ल मार्क्स व एफ.एंजेल्स
(d) मैथ्यू

उत्तर—(c)

मार्क्सवादी, इतिहास के सार्वभौमिक नियमों और चरणों में विश्वास करते हैं। उनका मानना है, कि सभी समाज इतिहास के कम-से-कम पांच चरणों से गुजरते हैं- (i) आदिम साम्यवाद (ii) दासता (iii) सामंतवाद (iv) पूंजीवाद (v) साम्यवाद।ये चरण कार्ल मार्क्स और एफ. एंजेल्स ने परिभाषित किए थे, जो साम्यवाद के प्रतिपादक थे।

24. मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार किस काल को स्वर्णिम युग की संज्ञा दी गयी है?

(a) मौर्य (b) गुप्त
(c) कुषाण (d) सातवाहन

उत्तर—(c)

एंजेल्स का विचार भी मार्क्स की तरह है। इनके अनुसार भारतीय साहित्य में जो कुछ भी अच्छा है, वह विजेताओं का योगदान है और इसलिए, इस विचारधारा के अनुसार **कुषाण काल** भारत के इतिहास का स्वर्णिम काल है, सातवाहन अथवा गुप्त काल नहीं। गुप्त वंश के समय से बारहवीं शताब्दी ई. में मुसलमानों की विजय तक के काल को **'सामंतवाद का युग'** अर्थात **अंध युग** कहा गया है, जिसमे हर चीज का पतन हो गया था।मार्क्सवादियों ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में कुषाण काल को स्वर्णिम काल की संज्ञा दी है।

25. 'हिंदू पॉलिटी' पुस्तक जिसे क्लासिक रचना की संज्ञा दी गयी है, किस इतिहासकार द्वारा लिखी गयी है?

(a) के.पी.जायसवाल
(b) आर.सी.मजूमदार
(c) के.ए.नीलकंठ शास्त्री
(d) आर.के. मुखर्जी

उत्तर—(a)

'हिंदू पॉलिटी' की रचना वर्ष 1924 ई. में के.पी. जायसवाल द्वारा की गयी। इस पुस्तक में इस भ्रांति को प्रभावशाली ढंग से धराशायी कर दिया गया कि 'भारतीयों के कोई राजनीतिक विचार नहीं थे।'

26. 'इतिहासकार' किसे कहा जाता है?

(a) जो अतीत के कालक्रम का अध्ययन करता है
(b) जो आगामी वर्षों का अध्ययन करता है
(c) जो वर्तमान का अध्ययन करता है
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर—(a)

'इतिहासकार' वह व्यक्ति होता है जो अतीत के कालक्रम का अध्ययन करता है तथा उसके संबंध में आने वाली पीढ़ी को अवगत कराता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत
(The Sources of Ancient Indian History)

'प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत' प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्त्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। प्रतियोगी परीक्षाओं में इससे सम्बद्ध प्रश्न बनते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की निम्नलिखित नई एवं पुरानी पुस्तकों में यह पाठ्य-सामग्री समाहित है -

क्रम	कक्षा	नई/पुरानी	पुस्तक का नाम	अध्याय का नाम
1	6	पुरानी	प्राचीन भारत (रोमिला थापर)	भारतीय इतिहास का अध्ययन
2	11	पुरानी	प्राचीन भारत (मक्खन लाल)	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत
3	11	पुरानी	प्राचीन भारत (रामशरण शर्मा)	स्त्रोतों के प्रकार और इतिहास का निर्माण

अध्याय - अनुक्रमणिका

■ **प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत**

➡ पुरातत्वीय स्त्रोत

(i) पुरातत्त्वीय अन्वेषण **(ii) उत्खनन**

(iii) सिक्के

(a) निधियां (b) आहत सिक्के

(c) भारतीय यूनानी सिक्के (d) कुषाणकालीन सिक्के

(e) गुप्तकालीन सिक्के

(iv) अभिलेख

(a) आरंभिक अभिलेख (b) अशोक के अभिलेख

(c) गुप्तकालीन व अन्य अभिलेख

➡ साहित्यिक स्त्रोत

(i) वैदिक सांस्कृतिक स्त्रोत **(ii) कर्मकांड साहित्यिक स्त्रोत**

(iii) बौद्धों के धार्मिकेत्तर साहित्य स्त्रोत **(iv) लौकिक साहित्यिक स्त्रोत**

(v) संस्कृत साहित्यिक स्त्रोत **(vi) संगम सांस्कृतिक स्त्रोत**

(vii) विदेशी विवरण

■ **इतिहास का निर्माण**

■ **अध्याय - स्मरणिका** ■ **वस्तुनिष्ठ-खण्ड**

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत
(The Sources of Ancient Indian History)

स्थूल रूप से, प्राचीन भारत के इतिहास के स्रोतों को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है - पुरातत्त्वीय एवं साहित्यिक स्रोत।

■ *पुरातत्त्वीय स्रोत (Archaeological Sources)*

भारत के अतीत की शुरुआत कई हजार साल पहले हुई। हमारे पूर्वजों ने अपने पीछे जो **स्थापत्य अवशेष व दैनिक जीवन की चीजें छोड़ी हैं**, उनसे हमें अतीत के बारे में जानकारी मिलती है।

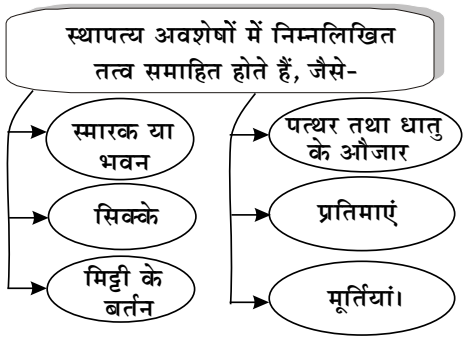

➡ कभी-कभी तो इन चीजों को सचमुच ही धरती से खोदकर निकालना पड़ता है। ये समस्त चीजें **ऐतिहासिक खजाने को खोज निकालने के खेल के सुराग** जैसी प्रतीत होती हैं।

➡ **पुरातत्व विज्ञान** की सामग्री से हमें जानकारी मिलती है कि हजारों साल पहले भारत के **स्त्री-पुरुषों** का जीवन किस प्रकार का रहा है।

प्राचीन काल के अवशेषों के अध्ययन को पुरातत्व विज्ञान कहते हैं।

➡ प्राचीन काल के **मानव जीवन** को हम **आदिम** अवस्था वाला जीवन कहते हैं, क्योंकि लोग अपनी आजीविका के लिए ज्यादातर **प्रकृति पर निर्भर** रहते थे।

- ➲ **न** वे अपना **भोजन** पकाते थे, **न** उनके **कपड़े** सिले होते थे, **न** ही उनके **घर** होते थे। वे **अनाज** और **सब्जियां** नहीं उगाते थे।
- ➲ **पौधों और पेड़ों** से जो कुछ प्राप्त होता था वे उसी पर गुजारा करते थे और वे **पशुओं** को पालने की बजाय उनका शिकार करते थे, इसलिए उन्हें हम **'खाद्य-संग्राहक'** कहते हैं।

➡ **1920** के दशक तक भी आमतौर पर यह माना जाता था कि **भारतीय सभ्यता** लगभग **छठी शताब्दी ई.पू.** से शुरू हुई थी, लेकिन मोहनजोदड़ों, कालीबंगा और हड़प्पा में हुई खुदाइयों से भारतीय सभ्यता की शुरुआत का समय लगभग 5000 ई.पू. तक पीछे चला गया है।

- ➲ वहां प्राप्त हुई **प्रागैतिहासिक** काल की वस्तुओं से पता चलता है कि यहां पर मानवीय क्रियाकलाप लगभग बीस लाख वर्ष पहले प्रारंभ हो गए थे।

1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक के काल को भारतीय इतिहास का अंधकार युग कहा जाता था, क्योंकि इस काल के बारे में कोई अधिक जानकारी प्राप्त नहीं थी।

(i) पुरातत्त्वीय अन्वेषण *(Archaeological Exploration)*

1950 के दशक से **काले और लाल रंग के बर्तनों, चित्रित धूसर बर्तनों** वाली संस्कृतियों तथा **मालवा** और **जोरवे** की संस्कृतियों की पुरातत्वीय खोजों से काल-क्रम संबंधी अंतरालों को ही नहीं, बल्कि **भौगोलिक** अंतरालों को भरने में भी सहायता मिली है।

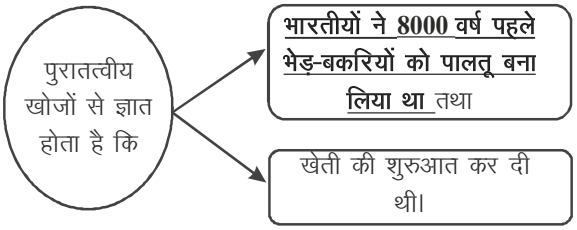

☛ पुरातत्वीय खोजों से पता चलता है कि **8000** ई.पू. में भारतीयों ने ***भेड़ तथा बकरियों*** को पालतू बनाया।

- ओल्ड एन.सी.ई.आर.टी. में

सबसे से पहले जिस जंगली जानवर को पालतू बनाया गया वह **कुत्ते का जंगली पूर्वज** था।

- न्यू एन.सी.ई.आर.टी. में

➡ उत्तर-पश्चिम की **सुलेमान** और **किरथर पहाड़ी** क्षेत्रों में लगभग **8 हजार ई.पू.** लोगों ने सबसे पहले **जौ तथा गेहूं** जैसी फसलों को उपजाना प्रारम्भ कर दिया था।

- ➲ इसके अलावा, लगभग 1600 ई.पू. में लोहे का नियमित रूप से इस्तेमाल होने लगा था।

(ii) उत्खनन *(Excavation)*

पश्चिमोत्तर भारत के विभिन्न पुरास्थलों पर हुए उत्खननों से ऐसे नगरों का पता चलता है जिनकी स्थापना **लगभग 2500 ई.पू.** में हुई थी।

➡ **पुरास्थल** उस स्थान को कहते हैं, जहां औजार, बर्तन और इमारतों जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते हैं।

पुरास्थलों से अवशेष मिलते हैं-
- औजार
- बर्तन एवं
- ईमारतों के।

➲ पुरास्थलों से मिली ऐसी वस्तुओं का निर्माण लोगों ने अपने काम के लिए किया था और बाद में वे उन्हें वहीं छोड़ गये।

➲ ये जमीन के ऊपर, अंदर, कभी-कभी **समुद्र और नदी** के तल में भी पाये जाते हैं।

➡ इसी प्रकार **उत्खननों** से हमें **गंगा की घाटी** में विकसित भौतिक संस्कृति के बारे में भी जानकारी मिली है।

➲ इससे पता चलता है कि उस समय के लोग जिन बस्तियों में रहते थे, **उनका ढांचा** किस प्रकार का होता था।

➡ खुदाई में हमें बहुत बड़ी संख्या में **पत्थर, धातुओं और पकी** मिट्टी की आकृतियां मिली हैं, जो उस समय के **कलात्मक क्रियाकलापों** की कहानी कहती हैं।

➡ समूचे देश में **गुप्त काल से लेकर वर्तमान तक** के **मंदिर** और **मूर्तियां** पाई जाती हैं।

➲ इनसे भारतीयों के **स्थापत्य और उनकी कला** के इतिहास की जानकारी मिलती है।

चट्टानों को बाहर से काटकर कुछ प्रमुख विशाल मंदिर बनाए गये हैं, जैसे-

एलोरा का कैलाश मंदिर **और** मामल्लपुरम् का रथ मंदिर

➲ उन्होनें **पश्चिमी भारत की पहाड़ियों** में बड़ी-बड़ी गुफाएं खोदकर मुख्यत: **चैत्य और विहार** बनाए थे।

पुरातत्वीय उत्खननों से बौद्ध काल के कुछ प्रमुख नगर प्रकाश में आये, वे हैं
- तक्षशिला
- कौशांबी
- काशी
- अयोध्या
- वैशाली
- बोधगया आदि

➲ कहा जाता है कि छठीं शताब्दी ई.पू. में **बुद्ध, तक्षशिला** के अलावा इनमें से बाकी सभी स्थानों पर गए थे।

➡ **दक्षिण भारत** के कुछ लोग मृत व्यक्ति के **शव के साथ औजार, हथियार, मिट्टी के बरतन** आदि चीजें भी **कब्र** में गाड़ते थे, और इसके ऊपर एक घेरे में बड़े-बड़े पत्थर खड़े कर दिए जाते थे।

➲ ऐसे स्मारकों को **महापाषाण (मेगालिथ)** कहते हैं, हालांकि सभी **महापाषाण** इस श्रेणी में नहीं आते।

➲ इनकी खुदाई से पता चलता है कि **लौह युग** की शुरुआत होने पर दक्कन के लोग किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे।

➡ जिस विज्ञान के आधार पर **पुराने टीलों** का क्रमिक स्तरों में विधिवत उत्खनन किया जाता है और प्राचीन काल के लोगों के भौतिक जीवन के बारे में जानकारी मिलती है, उसे **पुरातत्त्व (आर्कियोलॉजी)** कहते हैं।

❖ .....टीला .....❖

टीला धरती की सतह के उस **उभरे हुए भाग** को कहते हैं जिसके नीचे **पुरानी बस्तियों के अवशेष** रहते हैं। टीलों के निम्न प्रकार होते हैं-

- **एकल-सांस्कृतिक**
- **मुख्य-सांस्कृतिक और**
- **बहु-सांस्कृतिक।**

➡ **एकल-सांस्कृतिक टीलों** में सर्वत्र **एक ही संस्कृति** दिखाई देती है। कुछ टीले **केवल चित्रित धूसर मृद्भांड** अर्थात् **पेंटेड ग्रे वेयर (पी.जी. डब्ल्यू.)** संस्कृति के द्योतक हैं, कुछ **सातवाहन संस्कृति** के और कुछ **कुषाण संस्कृति** के।

➲ **मुख्य-सांस्कृतिक** टीलों में **एक संस्कृति की महत्ता** होती है।

➲ **बहु-सांस्कृतिक** टीलों में **उत्तरोत्तर अनेक संस्कृतियां** पाई जाती हैं, जो कभी-कभी **एक दूसरे के साथ-साथ** चलती हैं।

➡ टीलों की खुदाई दो तरह से की जा सकती है -
- **अनुलंब अथवा**
- **क्षैतिज**

➡ **अनुलंब उत्खनन** का अर्थ है- **सीधी खड़ी लंबवत् खुदाई करना।**
- ➲ इसके अंतर्गत विभिन्न संस्कृतियों का **कालक्रमिक तांता उद्घाटित** होता है यह सामान्यतः स्थल के **कुछ भाग तक** ही सीमित रहता है।

➡ **क्षैतिज उत्खनन** का अर्थ है- **सारे टीले की या उसके बृहद भाग की खुदाई।** इस तरह की खुदाई से हम उस स्थल के **काल विशेष की संस्कृति** का पूर्ण आभास पा सकते हैं। क्षैतिज उत्खनन खर्चीली होने के कारण बहुत कम की गयी है।

➡ उत्खनन और अन्वेषण के फलस्वरूप प्राप्त भौतिक अवशेषों का विभिन्न प्रकार से वैज्ञानिक परीक्षण किया जाता है।

- ➲ **रेडियो कार्बन काल निर्धारण की विधि** से यह पता लगाया जाता है कि वे **किस काल के हैं।**
- ➲ **पौधों के अवशेषों** का परीक्षण कर, विशेषतः **पराग** के विश्लेषण द्वारा **जलवायु और वनस्पति** का इतिहास जाना जाता है।
- ➲ इसी आधार पर यह कहा जाता है कि **राजस्थान और कश्मीर** में **कृषि का प्रचलन लगभग 7000-6000 ई.पू. में भी था।**
- ➲ **धातु की शिल्प वस्तुओं की प्रकृति और घटकों** का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है और उसके परिणाम से पता चलता है कि वे **स्थान** कहां हैं, जहां से ये धातुएं प्राप्त की गई हैं, और इससे **धातु विज्ञान** के विकास की अवस्थाओं का पता लगाया जाता है।

➡ **पशुओं की हड्डियों का** परीक्षण कर उनकी पहचान की जाती है और उनके **पालतू होने** तथा **तरह-तरह के काम में लाने** का पता लगाया जाता है।

➡ **प्राग्-इतिहास** के क्षेत्र में किए गए इन **अनुसंधानों से** पता चलता है कि भारतीय **उपमहाद्वीप** में **मानवीय गतिविधियां** बहुत पहले अर्थात् **लगभग बीस लाख वर्ष** पहले शुरू हो गई थीं।
- ➲ पुरातत्वीय खोजों से पता चलता है कि भारत में **शैल चित्रकला** की परंपरा **बारह हजार वर्षों** से भी अधिक पुरानी है।

(iii) सिक्के *(Coins)*

सिक्के भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए **दूसरे सबसे प्रमुख स्रोत** हैं। सिक्के अधिकतर **एक साथ बड़ी संख्या में** प्राप्त होते हैं, जो **खेतों को खोदते समय** अथवा **भवनों एवं सड़कों आदि के निर्माण हेतु नींव की खुदाई के समय** पाए जाते हैं। अनेक सिक्के और अभिलेख **धरातल पर भी** मिले हैं, पर इनमें से अधिकांश **जमीन को खोदकर** निकाले गए हैं।

सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स) कहते हैं।

➡ आजकल की तरह प्राचीन भारत में **कागज की मुद्रा** का प्रचलन **नहीं** था, पर **धातुधन** या **धातुमुद्रा (सिक्का)** का प्रचलन था।
- ➲ पुराने सिक्के, **तांबे, चांदी, सोने और सीसे** के बनते थे।
- ➲ इन सिक्कों की ढलाई **सांचे में** की जाती थी। पकाई गई मिट्टी के बने '**सिक्कों के सांचे**' बड़ी संख्या में मिले हैं।
- ➲ इनमें से अधिकांश सांचे **कुषाण काल** के अर्थात् **ईसा की आरंभिक तीन सदियों** के हैं। **गुप्तोत्तर काल** में ये सांचे लगभग **लुप्त** हो गए।

➡ प्राचीन काल में आज जैसी बैंकिंग प्रणाली नहीं थी, इसलिए लोग अपना पैसा **मिट्टी और कांसे के बरतनों** में बड़ी हिफाजत से जमा रखते थे, ताकि मुसीबत के दिनों में उस **बहुमूल्य निधि** का उपयोग कर सकें।

(a) निधियां (Funds)

ऐसी अनेक निधियां, जिनमें न केवल **भारतीय सिक्के** हैं, बल्कि **रोमन साम्राज्य** जैसी **विदेशी टकसालों में ढाले गए सिक्के** भी हैं, जो देश के अनेक भागों में मिली हैं।

➡ ये निधियां अधिकतर **कलकत्ता, पटना, लखनऊ, दिल्ली, जयपुर, मुंबई और मद्रास** के संग्राहलयों में सुरक्षित हैं।
- ➲ बहुत से भारतीय सिक्के **नेपाल, बंग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान** के संग्रहालयों में भी देखने को मिलते हैं।
- ➲ चूंकि **ब्रिटेन** ने भारत पर लंबे समय तक शासन किया, इसलिए ब्रिटिश **अधिकारी** भी अपने निजी तथा सार्वजनिक **संग्रहालयों** में बहुत सारे भारतीय **सिक्के** ले गए।

- ➲ प्रमुख **राजवंशों** के सिक्के की **सूचियां** तैयार कर प्रकाशित की गई हैं।
- ➲ कलकत्ता के इंडियन **म्यूजियम, लंदन** के ब्रिटिश **म्यूजियम** आदि के सिक्कों की ऐसी सूचियां उपलब्ध हैं।
- ➲ परंतु बहुत सारे सिक्कों की **सूचियां** बनाना और **प्रकाशित** करना अभी भी बाकी है।

(b) आहत सिक्के (Punch Marked Coins)

सबसे पहले के सिक्के जिन्हें आहत (पंचमार्क) सिक्के कहा जाता है, चांदी एवं तांबे के प्राप्त हुए हैं।
- → कुछ सिक्के सोने के भी प्राप्त हुये हैं, जिनकी संख्या कम है।
- → लेकिन वे बड़े दुर्लभ हैं और प्रमाणिकता संदिग्ध है।

- ➲ **पंचमार्क** सिक्के भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं और उन पर केवल प्रतीक अंकित हैं। प्रत्येक प्रतीक को अलग से अंकित (पंच) किया गया है।
- ➲ ऐसे सिक्के समूचे देश में, **तक्षशिला से मगध तक** और **मगध से मैसूर तक** तथा **सुदूर दक्षिण में भी** मिले हैं।
- ➲ उन पर **कोई शब्द अथवा लेख अंकित नहीं हैं।**

➡ हमारे आरंभिक सिक्कों पर तो कुछ प्रतीक मिले हैं, पर बाद के सिक्कों पर **राजाओं और देवताओं के नाम** तथा **तिथियों** का भी उल्लेख है।
- ➲ इन सिक्कों के उपलब्धि स्थान बतलाते हैं कि उन स्थानों में इन सिक्कों का प्रचलन था।
- ➲ इस प्रकार प्राप्त सिक्कों के आधार पर **कई राजवंशों के इतिहास का पुनर्निर्माण** संभव हुआ है, विशेषत: उन **हिंद-यवन शासकों** के इतिहास का, जो **उत्तरी अफगानिस्तान से भारत** पहुंचे, और जिन्होंने **ईसा-पूर्व दूसरी और पहली** सदियों में यहां शासन किया।

(c) भारतीय-यूनानी सिक्के (Indo-Greek Coins)

इसके बाद **भारतीय-यूनानी** अथवा **हिंद-यवन** सिक्के हैं। सभी **चांदी और तांबे के हैं** और कोई-कोई **सोने** के भी हैं।

➲
- भारतीय यूनानी सिक्कों पर बड़ी सुंदर कलात्मक आकृतियां देखने को मिलती हैं

सिक्कों के **मुख्य भाग** पर **राजा की तस्वीर** अथवा उसकी **आवक्ष आकृति तथा**

पृष्ठ भाग पर किसी **देवता की मूर्ति** अंकित होती है

➡ सिक्कों से हमें उन अनेक **शक-पर्थियन राजाओं** के बारे में पता चलता है, जिनके बारे में हमें अन्य किसी स्रोत से कोई जानकारी नहीं मिलती।

(d) कुषाण कालीन सिक्के (Coins of the Kushan Period)

कुषाणों ने अधिकतर **सोने के सिक्के** और कुछ **तांबे के सिक्के** भी जारी किए थे, जो **उत्तर** भारत में बिहार तक के अधिकांश भागों में पाए गए हैं।

➡ उन पर प्रारंभ से ही **भारतीय प्रभाव** दिखाई देता है।
- ➲ **विम-कडफिसेस** के सिक्कों पर **बैल के पार्श्व में खड़े शिव की आकृति** का अंकन प्राप्त होता है।
- ➲ इन सिक्कों पर अंकित लेख में **राजा ने अपना उल्लेख महेश्वर अर्थात् शिव के भक्त** के रूप में किया है।
- ➲ **कनिष्क, हुविष्क** और **वसुदेव** सभी के सिक्कों पर यही लेख अंकित है।

कुषाणों के सिक्कों पर दर्शायी गयी आकृतियां हैं-
- → फारसी (ईरानी) और यूनानी देवी-देवताओं की तथा
- → अनेक भारतीय देवी देवताओं की

(e) गुप्तकालीन सिक्के (Gupta Coins)

गुप्त शासकों ने अधिकतर **सोने और चांदी** के सिक्के जारी किए थे, लेकिन ***सोने के सिक्के अपेक्षाकृत अधिक संख्या में*** हैं।

➡ ऐसा प्रतीत होता है कि **सिक्कों के टंकण के मामले** में गुप्त वंश के राजाओं ने **कुषाणों की परंपरा** का अनुसरण किया।
- ➲ उन्होंने अपने सिक्कों का पूरी तरह से **भारतीयकरण** कर दिया।
- ➲ **सिक्कों के मुख भाग पर राजाओं को सिंह अथवा गैंडे का शिकार** करते हुए, **धनुष अथवा परशु** पकड़े हुए, कोई **वाद्य-यंत्र** बजाते हुए अथवा **अश्वमेघ यज्ञ** करते हुए दिखाया गया है।

☛ रोमिला थापर ने अपनी पुस्तक 'भारत का इतिहास' में लिखा है, **गुप्त शासकों** ने सर्वाधिक मात्रा में **स्वर्ण सिक्के जारी** किए, परंतु धातु की शुद्धता की दृष्टि से ***कुषाणों की स्वर्ण मुद्राएं*** गुप्त शासकों की स्वर्ण मुद्राओं से अधिक उत्कृष्ट हैं।

➡ सिक्कों से आर्थिक इतिहास पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता था।
- ➲ क्योंकि सिक्कों का काम **दान-दक्षिणा, खरीद-बिक्री और वेतन मजदूरी** के भुगतान में पड़ता था।

➡ राजाओं से अनुमति लेकर **व्यापारियों और स्वर्णकारों** की श्रेणियों (व्यापारिक संघों) ने भी अपने कुछ सिक्के चलाए थे।

➲ इससे **शिल्पकारी और व्यापार की उन्नतावस्था** सूचित होती है।

➡ सिक्कों के सहारे **बड़ी मात्रा में लेन-देन** संभव हुआ और **व्यापार को बढ़ावा** मिला।

सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में मिले हैं ये विशेषतः सीसे, पोटीन, तांबे, कांसे, चांदी और सोने के हैं।

गुप्त शासकों ने सोने के सिक्के सर्वाधिक जारी किए, इसके विपरीत गुप्तोत्तर काल में बहुत कम सिक्के प्राप्त हुए

इससे पता चलता है कि व्यापार और वाणिज्य मौर्योत्तर और गुप्तकाल में खूब बढ़ा तथा गुप्तोत्तर काल से प्राप्त कम सिक्के उन दिनों की व्यापार, वाणिज्य शिथिलता को दर्शाते हैं।

➲ सिक्कों पर अंकित **राजवंशों** के नाम, **देवताओं** के चित्रों, **धार्मिक** प्रतीकों और **लेखों** से तत्कालीन **कला और धर्म** पर प्रकाश पड़ता है।

(iv) अभिलेख *(Inscriptions)*

पत्थर की सतह या धातु के **पत्रों** पर जो लेख उकेरे जाते हैं, उन्हें **शिलालेख या अभिलेख** कहते हैं। देश के विभिन्न भागों से विभिन्न **भाषाओं** में ऐसे अनेक अभिलेख मिले हैं। अतीत के बारे में जोड़-बटोरकर जानकारी प्राप्त करने के लिए ये अभिलेख एक प्रकार से सुरागों का काम करते हैं। ये अभिलेख सिक्कों से भी कहीं अधिक महत्व के हैं।

अभिलेखों के अध्ययन को **पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी)** कहते हैं, और इनकी तथा दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन तिथियों के अध्ययन को **पुरालिपिशास्त्र (पेलियोग्राफी)**कहते हैं।

➲ **अभिलेख, मुहरों, प्रस्तर-स्तंभों, स्तूपों, चट्टानों, ताम्रपत्रों,** मंदिर की दीवारों, **ईंटों और मूर्तियों** पर भी मिलते हैं।

(a) आरंभिक अभिलेख (Initial Inscriptions)

संपूर्ण देश में **आरंभिक अभिलेख पत्थरों पर खुदे** मिलते हैं, किंतु ईसा के **आरंभिक शतकों** में इस काम में **ताम्रपत्रों** का प्रयोग आरंभ हुआ।

➡ तथापि पत्थर पर **अभिलेख खोदने की परिपाटी दक्षिण भारत में** व्यापक स्तर पर जारी रही।

➲ दक्षिण भारत में मंदिर की दीवारों पर भी स्थायी **स्मारकों** के रूप में भारी संख्या में अभिलेख खोदे गए हैं।

अभिलेखों की भाषा

आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं और ये ई.पू. तीसरी सदी के हैं।

अभिलेख में संस्कृत भाषा, ईसा की दूसरी सदी से मिलने लगती है, और चौथी-पांचवी सदी में इसका सर्वत्र व्यापक प्रयोग होने लगा, तब भी प्राकृत का प्रयोग समाप्त नहीं हुआ।

➡ अभिलेखों में प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग **नौवीं-दसवीं** सदी से होने लगा।

➲ **मौर्य,मौर्योत्तर और गुप्त** काल के अधिकांश अभिलेख **'कॉर्पस इन्सक्रिप्शनम इंडिकेरम्'** नामक ग्रंथ माला में संकलित करके प्रकाशित किए गए हैं।

➲ परंतु **गुप्तोत्तर** काल के अभिलेख अभी तक इस प्रकार सुव्यवस्थित रूप से संकलित नहीं हुए हैं।

➲ **दक्षिण** भारत के अभिलेखों की स्थानक्रमिक सूचियां प्रकाशित हुई हैं।

➲ फिर भी 50,000 से भी अधिक अभिलेख, जिनमें अधिकांश दक्षिण भारत के हैं, प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

➡ उल्लेखनीय है कि **लिखने की सबसे प्राचीन प्रणाली लगभग 2500 ई.पू. हड़प्पा की मुद्राओं (सील) में पाई जाती है,** लेकिन उसे **पढ़ने** में अभी तक सफलता नहीं मिली है।

(b) अशोक के अभिलेख (Ashoka's inscriptions)

अशोक के उत्कीर्ण **लेखों** की लेखन-प्रणाली को सबसे प्राचीन माना जाता है।

➲ ये **अभिलेख** चार **लिपियों** में लेखबद्ध हैं-

- ◆ आरमाइक
- ◆ यूनानी (ग्रीक)
- ◆ खरोष्ठी
- ◆ ब्राह्मी

➡ अफगानिस्तान के अपने साम्राज्य में उसने अपने शासनादेशों के लिए **आरमाइक** और **यूनानी लिपियों** का उपयोग किया।

➲ पाकिस्तान के क्षेत्र में **खरोष्ठी लिपि** का प्रयोग हुआ है जो **भारतीय भाषाओं की वर्णमाला पद्धति के आधार पर विकसित** हुई थी, तथा **दाईं ओर से बाईं ओर** लिखी जाती थी।

➲ उत्तर में, उत्तरांचल में **कालसी** से मैसूर तट तक फैले अशोक के शेष साम्राज्य में **ब्राह्मी लिपि** का प्रयोग किया गया था।

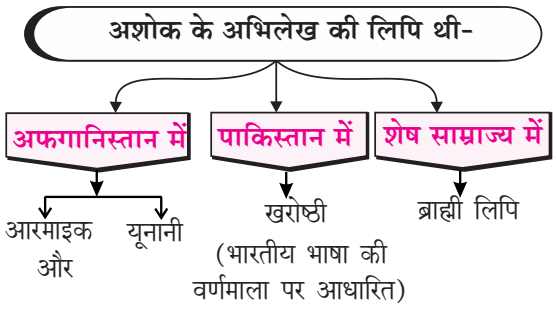

- अशोक के बाद उत्तरवर्ती शताब्दियों के राजाओं द्वारा इस लिपि को अपनाया गया।
- गुप्तकाल के अंत तक देश की प्रमुख लिपि **ब्राह्मी** ही रही।

➡ **ब्राह्मी लिपि के बारे में** अधिक दिलचस्प बात यह है कि इसके अलग-अलग अक्षरों को प्रत्येक **शताब्दी** में संशोधित किया जाता रहा है।

- इस प्रक्रिया में भारत की सभी लिपियां, दक्षिण की **तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम** तथा उत्तर की **नागरी, गुजराती और बंगला आदि लिपियां शामिल** हैं।
- अलग-अलग अक्षरों के रूप में संशोधन करने से एक और लाभ भी हुआ।
- इससे मोटे तौर पर यह पता लगाना संभव हो गया कि उत्कीर्ण लेख किस **काल** अथवा शताब्दी में अंकित किए गए थे।
- **लिपियों** के विकास के अध्ययन को **पुरालिपिविद्या** कहा जाता है।
- किंतु समय बीतने के साथ-साथ अपनी **प्राचीन लिपियों** में **भारतीयों** की रुचि समाप्त हो गई, इसलिए वे अपने लिखित इतिहास के अधिकांश भाग को भूल गए।
- जब अठारहवीं शताब्दी के अंतिम भाग में पुरालेखीय अध्ययन शुरू हुए तो केवल **दसवीं शताब्दी** ई. तक उत्कीर्ण लेखों को ही कुछ कठिनाई के साथ पढ़ा जा सका, लेकिन इससे पहले के **पुरालेखों** का अर्थ लगाना आसान नहीं था।
- कुछ पश्चिमी विद्वानों ने बहुत परिश्रम करके और बहुत ध्यानपूर्वक वर्णों की सारणियां तैयार की थीं।
- लेकिन अशोक के समय की वर्णमाला को पूरी तरह से तैयार करने का श्रेय जेम्स प्रिंसेप को जाता है, जिसने यह कार्य 1837 ई. में पूरा किया।
- इसके बाद पुरालेखों का अध्ययन करना अपने आप में एक अलग विषय बन गया।
- पुरालेखीय सामाग्री के मामलें में भारत विशेष रूप से समृद्ध है।

➡ अशोक के **शिलालेखों** की अपने आप में एक अलग ही श्रेणी है।

- ये उसके शासनकाल के विभिन्न वर्षों से उत्कीर्ण किए गए थे, उन्हें **राज्यादेश** या **शासनादेश** कहा जाता है, क्योंकि वे राजा के **आदेशों** अथवा उसकी इच्छा के रूप में प्रजा के लिए प्रस्तुत किए गए थे।
- उनसे **अशोक** की **छवि** और उसके **व्यक्तित्व** की एक झलक ऐसे परोपकारी राजा के रूप में मिलती है, जिसे न केवल अपनी **प्रजा** बल्कि समूची मानव **जाति** के कल्याण की चिंता थी।

➡ ***अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम 1837 में सफलता मिली- जेम्स प्रिंसेप*** को जो उस समय बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में ऊंचे पद पर थे।

☛ **पुरानी एन.सी.ई.आर.टी. के अनुसार अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिन्सेप ने 1837 में पढ़ने में सफलता प्राप्त की, जबकि नई एन.सी.ई.आर.टी. में जेम्स प्रिन्सेप द्वारा अभिलेखों का अर्थ लगाने का वर्ष 1838 उल्लिखित है।**

अभिलेख कई प्रकार के होते हैं, इन्हें मुख्यतः तीन कोटियों में विभाजित किया गया है

प्रथम कोटि के अभिलेखों में अधिकारियों और जनता के लिए जारी किए गये **सामाजिक, धार्मिक तथा प्रशासनिक राज्यादेशों और निर्णयों की सूचनाएं** रहती हैं। अशोक के शिलालेख इसी कोटि के हैं।

दूसरी कोटि में, आनुष्ठानिक अभिलेख आते हैं, जिन्हें बौद्ध, जैन, वैष्णव, शैव आदि संप्रदायों के अनुयायियों ने भक्तिभाव से स्थापित **स्तंभों, प्रस्तर फलकों, मंदिरों और प्रतिमाओं पर** उत्कीर्ण कराया है।

तीसरी कोटि में वे प्रशस्तियां आती हैं जिनमें राजाओं और विजेताओं के **गुणों और कीर्तियों का बखान** है, परंतु उनकी **पराजयों और कमजोरियों का कोई जिक्र नहीं है। समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति** इसी कोटि का उदाहरण है।

➡ **चौदहवीं सदी में फिरोजशाह तुगलक को अशोक के दो शिलालेख मिले, वे हैं-**

मेरठ तथा **टोपरा (हरियाणा)**

- ➲ उसने इन शिलालेखों को दिल्ली मंगवाया और अपने राज्य के पंडितों से पढ़वाने का प्रयास किया, लेकिन कोई पंडित इसे पढ़ न पाया।
- ➲ अट्ठारहवीं सदी के अंतिम चरण में अंग्रेजों ने इन्हें पढ़ने की कोशिश की तो उन्हें भी इसी कठिनाई का सामना करना पड़ा।

➡ **शिलालेखों** में **संस्कृत** का भी प्रयोग किया जाने लगा था।

- ➲ रूद्रदामन का जूनागढ़ **शिलालेख** जो दूसरी शताब्दी ई. के मध्य में लिखा गया था, **प्रांजल** (Chaste) संस्कृत का एक प्राचीन उदाहरण समझा जाता है।

(c) गुप्तकालीन व अन्य अभिलेख (The Gupta and other period inscriptions)

गुप्तकाल से संस्कृत को एक प्रमुख स्थान मिलना शुरू हो गया था।

➡ **इलाहाबाद** के स्तंभ पर **उत्कीर्ण** लेख में समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का सारांश दिया गया है।

- ➲ गुप्तकाल के अधिकतर पुरालेखों में **वंशावलियों** का वर्णन है। आगे आने वाले राजवंशों में इसका प्रयोग होने लगा।
- ➲ वे इन लेखों में अपनी **विजय** तथा अपने **पूर्वजों** की **उपलब्धियों** और अपने **पौराणिक** मूल का विवरण देते हैं।

ऐहोल शिलालेख में अपने घराने की वंशावली और उपलब्धियों का विवरण दिया है — चालुक्य वंश के राजा पुलकेशिन द्वितीय ने

➡ ईसा की पहली सदी में **कलिंग** के राजा **खारवेल** ने **हाथी गुम्फा अभिलेख** मे अपने जीवन की बहुत सी घटनाओं का वर्षवार विवरण दिया है।

➡ **भोज** ने अपने **ग्वालियर शिलालेख** में अपने पूर्वजों और उनकी उपलब्धियों का पूरा विवरण दिया है।

➡ शिलालेखों से हमें विद्वान **ब्राह्मणों** को दान में दी गई भूमि, जो सभी करों से मुक्त होती थी, के बारे में भी पता चलता है। इन्हें **अग्रहार** कहा जाता था।

- ➲ इन सभी के अलावा बहुत-सारे ऐसे दान-पत्र मिलते हैं, जिनमें न केवल **राजाओं** और **राजपुत्रों** द्वारा, बल्कि **शिल्पियों और व्यापारियों** द्वारा भी मुख्यतः **धर्मार्थ, पैसा, मवेशी, भूमि** आदि के दान अभिलिखित हैं।
- ➲ मुख्यतः **राजाओं** और **सामंतों** द्वारा किए गए भूमिदान के अभिलेख विशेष **महत्व** के हैं, क्योंकि
- ➲ इनमें प्राचीन भारत की **भू-व्यवस्था** और **प्रशासन** के बारे में उपयोगी सूचनाएं मिलती हैं।

➡ ये अभिलेख अधिकतर ताम्रपत्रों पर उकेरे गये हैं।

- ➲ ये विभिन्न भाषाओं में लिख मिलते हैं, जैसे **प्राकृत, संस्कृत, तमिल, तेलगू** आदि।
- ➲ उनमें **भिक्षुओं, ब्राह्मणों, मंदिरों, विहारों, जागीरदारों** और अधिकारियों को दिए गए गांवों, भूमियों और राजस्व के दानों का विवरण है।

■ *साहित्यिक स्त्रोत (Literary Sources)*

भारत के **इतिहास** के लिए प्राचीन भारतीय **साहित्य** की विश्वसनीयता के बारे में बहुत वाद-विवाद रहा है। यह मत प्रकट किया जाता है कि अधिकांश भारतीय **साहित्य** का स्वरूप धार्मिक है, और भारतीयों द्वारा **पुराणों** और **महाकाव्यों** जैसे जिस साहित्य के इतिहास होने का दावा किया जाता है, उनमें **घटनाओं** और **राजाओं** की कोई निश्चित तिथियां नहीं दी गई हैं। बल्कि इनमें परिष्कृत साहित्य का दर्शन होता है।

➡ अनेक काव्यों में **योद्धा, सामंत** या **राजा** का नामतः उल्लेख करके उनके वीरतापूर्ण कार्यों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

- ➲ ये काव्य दरबारों में पढ़े जातें होंगे। इनकी तुलना **होमर** युग के वीरगाथा **काव्यों** से की जा सकती है, क्योंकि इनमें भी युद्धों और **योद्धाओं** के वीर **युग** का चित्रण है।
- ➲ इन ग्रंथों का उपयोग ऐतिहासिक **प्रयोजन** से करना आसान नहीं है।
- ➲ शायद इन काव्यों में उल्लिखित व्यक्तिवाचक नाम, **उपाधि, वंश, क्षेत्र, युद्ध** आदि आंशिक रूप से ही यथार्थ है।
- ➲ संगम ग्रंथों में उल्लिखित **चेर** राजाओं के नाम दानकर्ता के रूप में **ईसा** की पहली और **दूसरी** सदी के दानपत्रों में भी आए हैं।
- ➲ बहुत से उत्कीर्ण **लेखों, सिक्कों** और **स्थानीय वृत्तांतों** से इतिहास लेखन के कुछ प्रयत्नों का संकेत अवश्य मिलता है।

- ➲ **पुराणों** और **महाकाव्यों** में इतिहास के प्रारंभिक तत्व सुरक्षित हैं। हमें राजाओं की **वंशावलियों** और उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।
- ➲ लेकिन **कालक्रम** के अनुसार उनका विन्यास करना कठिन है।

➡ भारत में **पाण्डुलिपियों, भोजपत्रों** और तालपत्रों पर लिखी मिलती हैं, परंतु **मध्य एशिया** में जहां भारत से प्राकृत भाषा फैल गई थी, ये **पाण्डुलिपियां मेषचर्म तथा काष्ठफलकों** पर भी लिखी गई हैं।

- ➲ इन्हें हम भले ही अभिलेख कह दें, परंतु है ये एक प्रकार की **पाण्डुलिपियां** ही उन दिनों **मुद्रण कला** का आविष्कार नहीं हुआ था, इसलिए ये **पाण्डुलिपियां** मूल्यवान समझी जाती थीं।
- ➲ वैसे तो समूचे भारत में **संस्कृत** की पुरानी **पाण्डुलिपियां** मिली हैं परंतु इनमें से अधिकतर **दक्षिण भारत, कश्मीर और नेपाल** से प्राप्त हुई हैं।
- ➲ आजकल अधिकांश अभिलेख संग्रहालयों में और पाण्डुलिपियां पुस्तकालयों में संचित सुरक्षित हैं।

(i) वैदिक सांस्कृतिक स्त्रोत *(Sources of Vedic Culture)*

अधिकांश प्राचीन ग्रंथ धार्मिक विषयों पर हैं।

वैदिक साहित्य, मुख्यतः चार वेद, अर्थात् **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद** पूर्णतः एक अलग भाषा में हैं, जिसे **वैदिक भाषा** कहा जा सकता है।

➡ इसकी शब्दावली के बहुत व्यापक अर्थ हैं और कई बार व्याकरणिक प्रयोगों की दृष्टि से बिल्कुल भिन्न हैं।

- ➲ इसके उच्चारण का एक सुनिश्चित ढंग है, जिसमें किसी अक्षर-विशेष पर बल दिए जाने से अर्थ पूर्णत: बदल जाता है।
- ➲ इसी कारण से, वेदों के उच्चारण के ढंग को सुरक्षित और संरक्षित करने की विस्तृत विधियां तैयार की गई हैं।
- ➲ **घन, जटा और पाठ** के अन्य प्रकारों से हम न केवल मंत्र का अर्थ निर्धारित कर सकते हैं, बल्कि उस मौलिक तान (स्वर) को सुन सकते हैं, जिनमें इनका गायन हजारों वर्ष पहले किया जाता था।
- ➲ इन्हीं **पाठ** पद्धतियों के कारण, **वेदों** में कोई प्रक्षेपण करना संभव नहीं है।
- ➲ हम **वेदों** में राजनीतिक इतिहास का कोई खास चिह्न नहीं ढूंढ़ सकते, लेकिन उनसे हमें वैदिक **काल** की **संस्कृति और सभ्यता** की विश्वसनीय झलक मिल सकती है।

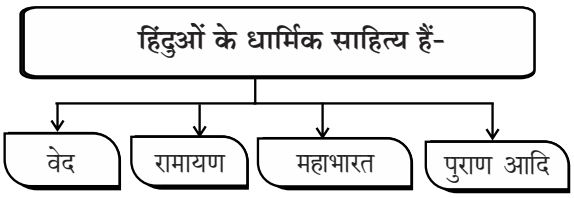

- ➲ यह साहित्य प्राचीन भारत की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर काफी प्रकाश डालता है, किंतु देश और काल के संदर्भ में इनका उपयोग करना बड़ा ही कठिन है।

➡ ऋग्वेद को **1500-1000 ई.पू. के लगभग** का मान सकते हैं। और **अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्राह्मणों, अरण्यकों और उपनिषदों** को **1000-500 ई.पू. के लगभग** का माना जाता है।

➡ ऋग्वेद में मुख्यत: **देवताओं की स्तुतियां** हैं, परंतु बाद के वैदिक साहित्य में **स्तुतियों** के साथ-साथ **कर्मकाण्ड**, **जादू-टोना** और **पौराणिक आख्यान** भी हैं।

➡ वैदिक मूलग्रंथ का अर्थ समझ में आए इसके लिए **वेदांगों** अर्थात् **वेद के अंगभूत** शास्त्रों का अध्ययन आवश्यक था।

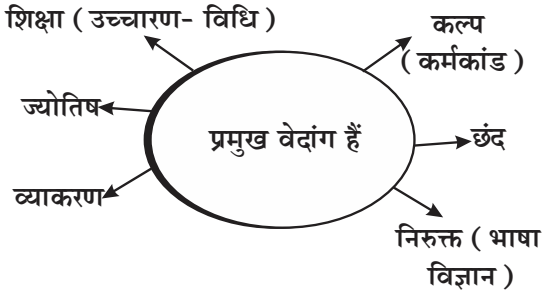

➡ इसमें से प्रत्येक शास्त्र के चतुर्दिक प्रचुर साहित्य विकसित हुए हैं –

- ➲ यह **साहित्य गद्य में नियम** रूप में लिखे गए हैं।
- ➲ संक्षिप्त होने के कारण ये **नियम सूत्र** कहलाते हैं।
- ➲ यह **गद्य में अभिव्यक्ति का** एक बहुत यथार्थ और सुनिश्चित रूप है, जो प्राचीन भारतीयों द्वारा विकसित किया गया था।
- ➲ सूत्र लेखन का सबसे विख्यात उदाहरण है पाणिनी का व्याकरण, जो 400 ई.पू. के आस-पास लिखा गया था।
- ➲ व्याकरण के नियमों का उदाहरण देने के क्रम में पाणिनी ने अपने समय के समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर अमूल्य प्रकाश डाला है।

➡ **धर्मसूत्रों** और **स्मृतियों** में सर्वसाधारण और शासकों के लिए **नियम और विनियम** निर्धारित हैं।

- ➲ आधुनिक अवधारणा के रूप में इन्हें प्राचीन भारतीय राज्यव्यवस्था और समाज के लिए **संविधान व विधि पुस्तकों** का नाम दिया जा सकता है। इन्हें **धर्मशास्त्र** भी कहा जाता है।

➲ *इनका संकलन 600 ई.पू. और 200 ई.पू. के बीच* किया गया था।

☛ ओल्ड एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा 11 अध्याय 3 (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत) में धर्मसूत्रों का संकलन 600 ई.पू. से 200 ई.पू. के मध्य बताया गया है जबकि रामशरण शर्मा द्वारा धर्मसूत्रों का संकलन काल 500 ई.पू. से 200 ई.पू. के मध्य बताया गया है।

➲ मुख्य स्मृतियां **ईसा की आरंभिक छह सदियों में संहिताबद्ध** की गईं।

➲ इनमें **मनुस्मृति** सबसे **अधिक प्रसिद्ध एवं प्राचीन** है।

➡ मनुस्मृति में विभिन्न वर्णों, राजाओं पदाधिकारियों के कर्तव्यों का विधान किया गया है।

➲ इसमें संपत्ति अर्जन, विक्रय और उत्तराधिकार के नियम सहित विवाह के विधान दिये गये हैं।

➲ मनुस्मृति में चोरी, हमला, हत्या व्यभिचार आदि के लिए दंड का विधान भी किया गया है।

➡ वेदों के अलावा, **ब्राह्मणों, आरण्यकों** और **उपनिषदों** को भी **वैदिक साहित्य** में शामिल किया जाता है तथा इन्हें **उत्तरवर्ती** वैदिक साहित्य कहा जाता है।

➲ **ब्राह्मण ग्रंथों में वैदिक कर्मकाण्ड** का विस्तारपूर्वक निरूपण किया गया है।

➲ **आरण्यक ग्रंथों और उपनिषदों** में विभिन्न **आध्यात्मिक और दार्शनिक समस्याओं** के बारे में चर्चाएं की गई हैं।

➡ **पुराण**, जिनकी संख्या **अठारह** है, मुख्यतः इसमें ऐतिहासिक विवरण हैं।

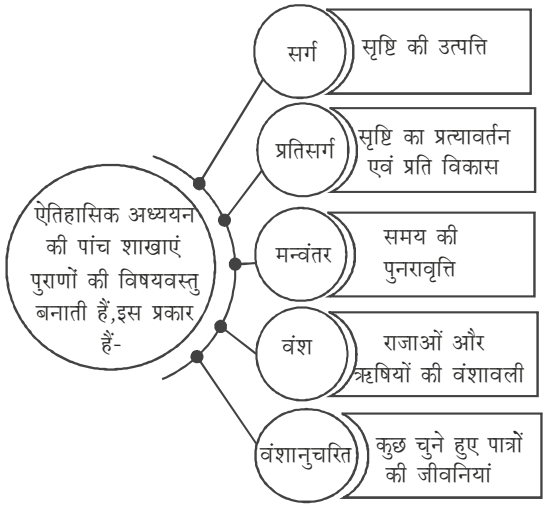

➲ कालांतर में तीर्थों और उनके महात्म्य के वर्णन को भी इसमें शामिल किया गया था।

➡ विषयवस्तु की दृष्टि से **पुराण विश्वकोष जैसे हैं,** पर इनमें गुप्त **काल के आरंभ तक का राजनीतिक इतिहास** आया है।

➲ इनमें घटनाओं के **स्थलों** के उल्लेख तथा उसके कारणों एवं परिणामों का विवेचन किया गया है, परंतु यथार्थ में ये घटनाएं विवरण लिखे जाने से काफी पहले ही घटित हो चुकी थीं।

➲ किंतु **इन पुराणों के लेखक परिवर्तन की धारणा से अनभिज्ञ न**हीं थे, जो इतिहास का सारतत्व होती है।

➲ **काल और स्थान,** जो इतिहास के महत्वपूर्ण तत्व हैं उसका महत्व इनमें बताया गया है।

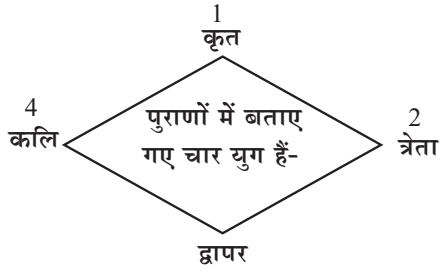

➲ इनमें हर युग अपने पिछले युग से घटिया बताया गया है और कहा गया है कि एक युग के बाद जब दूसरा युग आरंभ होता है **तब नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदण्डों का अधःपतन** होता है।

➡ **महाभारत**, **रामायण** और **प्रमुख पुराणों** का अंतिम रूप से संकलन **400 ई.** के आसपास हुआ प्रतीत होता है।

➲ इनमें **महाभारत, जो व्यास की कृति** माना जाता है, **संभवतः दसवीं सदी ईसा-पूर्व से चौथी सदी ईसवी तक** की स्थिति का आभास देता है।

➲ पहले इसमें केवल **8800 श्लोक** थे और इसका नाम **जय (जयसंहिता)** था, जिसका अर्थ है - **विजय संबंधी संग्रह ग्रंथ**।

➲ बाद में यह बढ़कर **24,000 श्लोक** का हो गया और **भारत नाम** से प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसमें प्राचीनतम वैदिक जन **भरत के वंशजों की कथा** है।

➲ अंततः इसमें **एक लाख श्लोक** हो गए और तद्नुसार यह **शतसाहस्री संहिता** या **महाभारत** कहलाने लगा।

महाभारत में विभिन्न कथोपकाएं, उनका वर्णन एवं उपदेश संकलित हैं।

➲ इसकी मूल कथा, जो कौरवों और **पांडवों** के युद्ध की है, **उत्तर वैदिक काल** की हो सकती है।

➲ इसके विवरणात्मक अंश का उपयोग **वेदोत्तर** काल के संदर्भ में किया जा सकता है।

➡ इसी प्रकार, **वाल्मीकि रामायण में मूलतः 6000 श्लोक** थे, जो बढ़कर 12000 श्लोक हो गए और **अंततः 24,000 श्लोक हैं**।

➲ यद्यपि यह **महाकाव्य** महाभारत की अपेक्षा अधिक ठोस है, तथापि इसमें भी कुछ ऐसे **उपदेशात्मक** भाग हैं जो बाद में जोड़ दिए गए हैं।

➲ इसकी रचना संभवतः **ईसा-पूर्व पांचवी सदी** में शुरू हुई। तब से यह **पांच** अवस्थाओं से गुजर चुकी है और इसकी पांचवी अवस्था तो **ईसा** की **बारहवीं सदी** में आई है।

वाल्मीकि रामायण, महाभारत के बाद की रचना प्रतीत होती है।

(ii) कर्मकांड साहित्यिक स्त्रोत *(Ritual Literary Sources)*

वैदिक काल के बाद **कर्मकाण्ड साहित्य** की भरमार मिलती है।

➡ **राजाओं के द्वारा,** तीन उच्च **वर्णों** और धनाढ्य पुरुषों द्वारा **अनुष्ठेय** सार्वजनिक **यज्ञों** के विधि-विधान **श्रौतसूत्रों** में दिए गए हैं और इन्हीं में **राज्याभिषेक** के कई आडंबरपूर्ण अनुष्ठान भी वर्णित हैं।

➲ इसी तरह **जातकर्म** (जन्मानुष्ठान), **नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध** आदि घरेलू या पारिवारिक अनुष्ठानों का विधि-विधान **गृह्यसूत्रों** में पाया जाता है।

➡ **श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र** दोनों ईसा-पूर्व 600-300 के आसपास के हैं।

➡ यहां **शुल्वसूत्र** भी उल्लेखनीय है - जिनमें **यज्ञवेदी के निर्माण** के लिए विविध प्रकार की मापों का विधान है।

➲ **ज्यामितीय और गणित का अध्ययन वहीं से आरंभ होता** है।

श्रौत सूत्र ⟶ सार्वजनिक यज्ञों के विधि-विधान

गृह्य सूत्र ⟶ घरेलू या पारिवारिक अनुष्ठानों के विधि-विधान

शुल्व सूत्र ⟶ यज्ञ वेदी के निर्माण हेतु विविध मापों का विधान (ज्यामिती एवं गणित के अध्ययन का प्रारंभ यहीं से)

➡ **जैनों** और **बौद्धों** के धार्मिक ग्रंथों में ऐतिहासिक व्यक्तियों और घटनाओं का उल्लेख मिलता है।

➲ चूंकि **आधुनिक** इतिहासकारों ने **पुराणों** में वर्णित अधिकतर **राजवंशों** को नकार दिया है तथा **बुद्ध और महावीर** को ऐतिहासिक व्यक्तित्व माना है अतः **पौराणिक राजवंशों के केवल उन भागों को ही स्वीकार किया गया है जिनकी पुष्टि बौद्ध तथा जैन साहित्य द्वारा होती** है।

➡

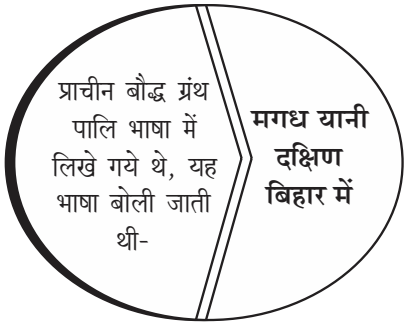

➲ **पालि** को **प्राकृत** भाषा का एक रूप कहा जा सकता है।

➲ **बौद्ध भिक्षुओं** के साथ यह भाषा श्रीलंका पहुंची जहां यह एक जीवंत भाषा बनी।

➲ इन ग्रंथों में हमें न केवल **बुद्ध के जीवन के बारे** में, बल्कि उनके समय के **मगध, उत्तरी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश** के कई शासकों के बारे में भी जानकारी मिलती है।

(iii) बौद्धों के धार्मिकेत्तर साहित्य स्त्रोत *(Buddhist non-religious literary sources)*

बौद्धों के धार्मिकेत्तर **साहित्य** में सबसे महत्त्वपूर्ण और रोचक हैं - **गौतम बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाएं**।

➲ पूर्वजन्मों की वे कथाएं **जातक** कहलाती हैं और प्रत्येक कथा एक प्रकार की **लोक कथा** है। ऐसी **कथाओं की संख्या 550 से अधिक** है।

➲ **ये जातक ईसा-पूर्व पांचवी** सदी से **दूसरी सदी ईसवी** तक की **सामाजिक और आर्थिक** स्थिति पर बहुमूल्य प्रकाश डालते हैं।

➲ प्रसंगवश ये कथाएं **बुद्धकालीन राजनीतिक घटनाओं की** भी जानकारी देती हैं।

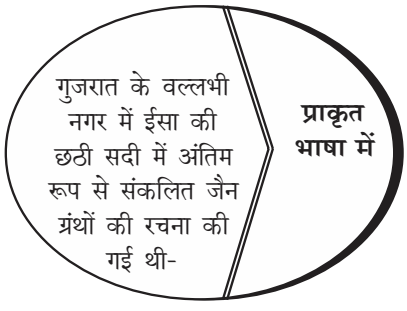

➲ इन ग्रंथों में अनेक **वंश** हैं, जिनके आधार पर हमें **महावीरकालीन बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश** के राजनीतिक इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायता मिलती है।

(iv) लौकिक साहित्यिक स्रोत *(Secular literary sources)*

लौकिक साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। विधि ग्रंथों को उस कोटि में रखा जा सकता है।

➡ उन **ग्रंथों** में **धर्मसूत्र, स्मृतियां और टीकाएं** पड़ती हैं और इन तीनों को मिलाकर **धर्मशास्त्र** कहा जाता है।
- ➲ धर्मसूत्रों का संकलन 500 - 200 ई.पू. में हुआ था।
- ➲ मुख्य स्मृतियां ईसा की आरंभिक **छह सदियों** में **संहिताबद्ध** की गई।
- ➲ इनमें विभिन्न वर्णों, राजाओं और पदाधिकारियों के कर्तव्यों का विधान किया गया है।
- ➲ इनमें **संपत्ति** के **अर्जन, विक्रय और उत्तराधिकार** के नियम **संहिता** विवाह के विधान भी दिए गए हैं तथा **चोरी, हमला, हत्या, व्यभिचार** आदि के लिए दण्ड विधान किया गया है।
- ➲ जैन ग्रंथों में **व्यापार** और **व्यापारियों** के उल्लेख बार-बार मिलते हैं।

➡ **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** अत्यंत महत्वपूर्ण **विधि ग्रंथ** है।
- ➲ यह **पंद्रह अधिकरणों** या खण्डों में विभक्त है जिनमें **दूसरा और तीसरा अधिकरण अधिक पुराने** हैं।
- ➲ इसके प्राचीनतम अंश **मौर्यकालीन समाज और अर्थतंत्र** की झलक देते हैं।
- ➲ इसमें प्राचीन **भारतीय राजतंत्र तथा अर्थव्यवस्था** के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री मिलती है।

➡ **विशाखदत्त** द्वारा लिखित नाटक **मुद्राराक्षस** में भी समाज और **संस्कृति** की झलक देखने को मिलती है।

(v) संस्कृत साहित्यिक स्रोत *(Sources of Sanskrit-literature)*

कालिदास का नाटक **'मालविकाग्निमित्रम्', पुष्यमित्र शुंग** के शासनकाल की कुछ घटनाओं पर आधारित है।

कालिदास की रचना अभिज्ञानशाकुंतलम् से झलक मिलती है-
- →गुप्तकालीन समाज की,
- → उत्तरी और मध्य भारत के सामाजिक एवं
- →सांस्कृतिक जीवन की।

➡ **भास और शूद्रक** ऐसे अन्य कवि हैं, जिन्होंने ऐतिहासिक **घटनाओं** पर आधारित **नाटक** लिखे थे।

➡ भारत के लोगों ने जीवनचरितात्मक रचनाओं में ऐतिहासिक दृष्टि का अच्छा परिचय दिया है।
- ➲ इसका सुंदर उदाहरण है **हर्षचरित, जिसकी रचना बाणभट्ट** ने **ईसा की सातवीं सदी** में की।
- ➲ यह बहुत-से ऐतिहासिक तथ्यों पर प्रकाश डालती है, जिनकी जानकारी हमें अन्यत्र प्राप्त नहीं होती।
- ➲ **वाक्पति** ने **कन्नौज** के राजा **यशोवर्मन** के कारनामों पर आधारित **गौडवहो** नामक पुस्तक लिखी।
- ➲ इसी प्रकार **बिल्हण** द्वारा रचित **विक्रमांकदेवचरित** में उत्तरवर्ती **चालुक्य** नरेश **विक्रमादित्य** के विजयाभियानों का वर्णन किया गया है।
- ➲ विभिन्न राजाओं के जीवन के आधार पर लिखी गई कुछ अन्य रचनाएं हैं, जिनमें प्रमुख हैं : **जयसिंह का कुमारपालचरित**, **हेमचंद्र का कुमारपालचरित** अथवा **द्वाश्रय महाकाव्य, न्यायचंद्र का हम्मीरकाव्य, पद्मगुप्त का नवसाहसांकचरित, श्री बिल्लाल का भोजप्रबंध, चंदबरदाई का पृथ्वीराजचरित (पृथ्वीराजरासो)।**

➡ इस समय **गुजरात** के क्षेत्र में सेठों के भी चरित (जीवनी) लिखे गए।
- ➲ इस तरह की ऐतिहासिक रचनाएं दक्षिण भारत में भी हुई होंगी, लेकिन अभी तक ऐसा एक ही वृत्तांत प्रकाश में आया है।
- ➲ इसका नाम है **मूषिकवंश**, जिसकी रचना **अतुल** ने ग्यारहवीं सदी में की।
- ➲ इसमें **मूषिक राजवंश का वृत्तांत** है जिसका शासन **उत्तरी केरल** में था।

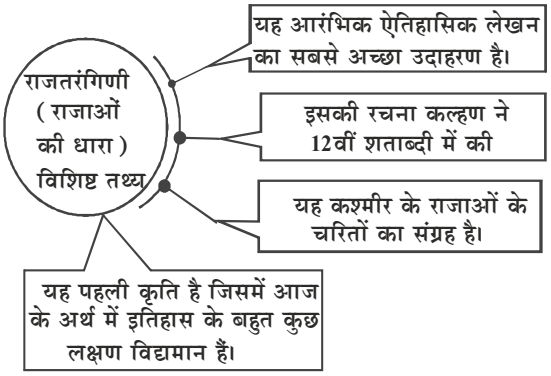

(vi) संगम सांस्कृतिक स्रोत *(Sangam Cultural Sources)*

इन संस्कृत स्रोतों के अलावा, कुछ प्राचीनतम **तमिल ग्रंथ** भी हैं, जो **संगम साहित्य** में संकलित हैं।

➡ **राजाओं** द्वारा संरक्षित **विद्या केंद्रों** में एकत्र होकर कवियों और **भाटों** ने तीन-चार सदियों में इस साहित्य का सृजन किया था।
- ➲ **ऐसी साहित्यिक सभा को संगम कहते थे**। इसीलिए समूचा साहित्य **संगम साहित्य** के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

- इन कृतियों का संकलन ईसा की आरंभिक चार सदियों में हुआ, हालांकि इनका **अंतिम संकलन छठीं सदी में** हुआ जान पड़ता है।

➡ **संगम साहित्य के पद्य 30,000 पंक्तियों में मिलते हैं**, जो आठ **एट्टत्तोकै अर्थात्** संकलनों में विभक्त है।

- **पद्य सौ-सौ** के समूहों में संगृहीत हैं, जैसे **पुरनानूरु (बाहर के चार शतक)** आदि।

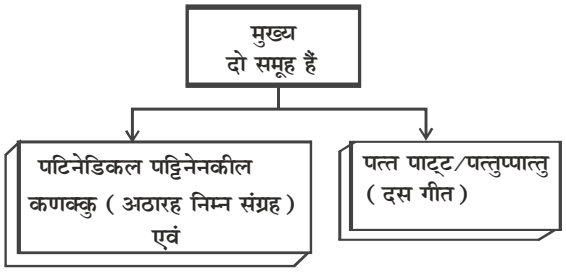

- पहला, दूसरे से पुराना माना जाता है। इसलिए **लौकिक** इतिहास के लिए महत्वपूर्ण समझा जाता है।
- **संगम ग्रंथ** बहुस्तरीय है, परंतु **संप्रति शैली** और विषय-वस्तु के आधार पर उनका स्तर-निर्धारण नहीं किया जा सकता है।
- जैसा कि आगे बताया गया है, इनके स्तरों का पता सामाजिक विकास की अवस्थाओं के आधार पर ही लगाया जा सकता है।
- संगम ग्रंथ वैदिक ग्रंथों से, खासकर **ऋग्वेद** से, भिन्न प्रकार के हैं, ये **धार्मिक ग्रंथ** नहीं हैं।
- इनके मुक्तकों और **प्रबंधकाव्यों** की रचना बहुत-सारे कवियों ने की है, जिनमें बहुत -से नायकों (वीरपुरुषों) और नायिकाओं का **गुणगान** है।
- इस प्रकार ये लौकिक कोटि के हैं, ये आदिम कालीन गीत नहीं है, बल्कि इनमें परिष्कृत साहित्य का दर्शन होता है।
- अनेक काव्यों में **योद्धा, सामंत या राजा** का नामत: उल्लेख करके उनके वीरतापूर्ण कार्यों का सविस्तार वर्णन किया गया है।
- उसके द्वारा भाटों को दिए गए दानों की प्रशंसा की गई है।
- ये काव्य दरबारों में पढ़े जातें होंगे। इनकी तुलना **होमर युग** के **वीरगाथा काव्यों** से की जा सकती है, क्योंकि इनमें भी युद्धों **और योद्धाओं के वीर युग का चित्रण** है।
- इन ग्रंथों का उपयोग ऐतिहासिक प्रयोजन से करना आसान नहीं है।
- शायद इन काव्यों में उल्लिखित **व्यक्तिवाचक नाम, उपाधि, वंश, क्षेत्र, युद्ध** आदि आंशिक रूप से ही यथार्थ है।
- संगम ग्रंथों में उल्लिखित **चेर राजाओं** के नाम **दानकर्ता** के रूप में **ईसा** की पहली और दूसरी सदी के **दानपत्रों** में भी आए हैं।

➡ बहुत से उत्कीर्ण **लेखों, सिक्कों** और **स्थानीय वृत्तांतों** से इतिहास लेखन के कुछ **प्रयत्नों** का संकेत अवश्य मिलता है।

- पुराणों और महाकाव्यों में इतिहास के प्रारंभिक तत्व सुरक्षित हैं।
- हमें **राजाओं की वंशावलियों** और उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। लेकिन **कालक्रम** के अनुसार उनका विन्यास करना कठिन है।
- संगम ग्रंथों में बहुत-से नगरों का उल्लेख मिलता है। इनमें उल्लिखित **कावेरीपट्टनम** का समृद्धिपूर्ण अस्तित्व पुरातात्त्विक साक्ष्यों से समर्थित हुआ है।
- इनमें यह भी बताया गया है कि-

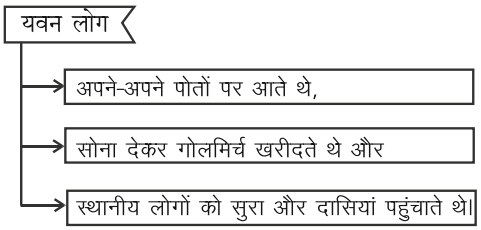

- इस व्यापार के बारे में हम केवल **लैटिन** और **ग्रीक** लेखों से ही नहीं, बल्कि **पुरातात्विक साक्ष्यों** से भी जानते हैं।
- ईसा की आरंभिक सदियों में तमिलनाडु के लोगों के **सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक** जीवन के अध्ययन के लिए **संगम साहित्य हमारा एकमात्र प्रमुख** स्रोत है।

(vii) विदेशी विवरण *(Foreign Accounts)*

प्राचीन भारतीय इतिहास की बहुत-सी जानकारी के लिए हम विदेशियों के **ऋणी** हैं। पर्यटक बनकर या भारतीय धर्म को अपनाकर अनेक **यूनानी, रोमन और चीनी यात्री** भारत आए और अपनी आंखों से देखे गए भारत के विवरण लिखकर छोड़ गये। इन विदेशी विवरणों को देशी साहित्य का अनुपूरक बनाया जा सकता है। कई विदेशी उत्कीर्ण लेखों (जैसे **डेरियस** के लेखों) में **भारत** का उल्लेख है।

➡ **हेरोडोटस** और **टेसियस** के लेखों में भारत का उल्लेख है।

- हेरोडोटस अपनी पुस्तक **हिस्टरीज** में हमें **भारत-फारस संबंधों** के बारे में काफी जानकारी देता है।
- ध्यान देने योग्य बात है कि **भारतीय स्रोतों में सिकदंर के हमले की कोई जानकारी नहीं मिलती**।
- उसके भारतीय कारनामों के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए हमें **पूर्णत: यूनानी स्रोतों पर आश्रित रहना पड़ता** है।

- **एरियन** ने सिकंदर द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण के बारे में विस्तृत विवरण देता है, जो उन लोगों की सूचनाओं पर आधारित है, जो इस अभियान के समय भारत आए।

➡ यूनानी लेखकों ने 326 ई०पू० में भारत पर हमला करने वाले **सिकंदर** महान के समकालीन के रूप में **सैंड्रोकोटस** के नाम का उल्लेख किया है।

- यह सिद्ध किया गया है कि यूनानी विवरणों का यह **सैण्ड्रोकोटस** और **चंद्रगुप्त मौर्य**, जिनके राज्यारोहण की **तिथि 322 ई०पू०** निर्धारित की गई है, एक **ही व्यक्ति** थे।

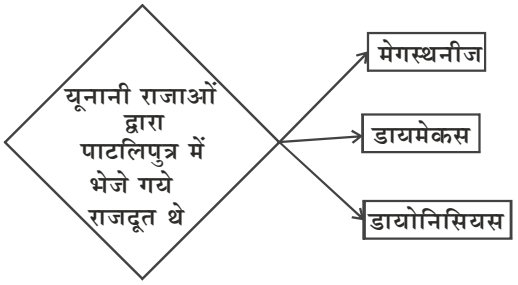

➡ **चंद्रगुप्त मौर्य** के दरबार में दूत बनकर आए **मेगस्थनीज** की **इण्डिका** उन उद्धरणों के रूप में ही सुरक्षित है जो अनेक प्रख्यात **लेखकों** की रचनाओं में आए हैं।

- इन उद्धरणों को एक साथ मिलाकर पढ़ने पर न केवल **मौर्य शासन** व्यवस्था के बारे में बल्कि **मौर्यकालीन** सामाजिक वर्गों और **आर्थिक** क्रियाकलापों के बारे में भी मूल्यवान जानकारी मिलती है।
- ईसा की पहली और दूसरी सदियों के **यूनानी और रोमन विवरणों में भारतीय बंदरगाहों के उल्लेख** मिलते हैं और **भारत तथा रोमन** साम्राज्य के बीच होने वाले व्यापार के वस्तुओं की भी चर्चा मिलती है।

यूनानी भाषा में लिखी गयी- प्राचीन भूगोल और वाणिज्य अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है-

पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी एवं **टॉलमी की ज्योग्राफी में**

'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' जो एक अज्ञात लेखक द्वारा लिखी गई पुस्तक है, प्रमुख क्षेत्र के व्यापार वृत्तांत को बताया गया है, वे क्षेत्र हैं

- **लाल सागर**
- **फारस की खाड़ी एवं**
- **हिंद महासागर**

➡ **प्लिनी** की **नेचुरल हिस्टोरिका** ईसा की पहली सदी की है।

- यह **लैटिन भाषा में** है और हमें **भारत** और **इटली** के बीच होने वाले **व्यापार** की जानकारी देती है।
- **चीनी** यात्री समय-समय पर भारत आते रहे थे। वे यहां बौद्ध तीर्थों का दर्शन करने या बौद्ध धर्म का अध्ययन करने आए थे।
- इनमें से तीन यात्री प्रमुख थे, जिनमें से **फाह्यान** पाचवीं **शताब्दी ई.** में भारत आया, जबकि **ह्वेनसांग और इत्सिंग सातवीं शताब्दी** में भारत आए।
- **ह्वेनसांग** ने **हर्षवर्धन** का वर्णन **बौद्ध धर्म** के अनुयायी के रूप में किया है, जबकि अपने **पुरालेखीय अभिलेखों** में **हर्ष** ने अपने आपको **शिव का भक्त** बताया है।
- **फाह्यान** ने गुप्तकालीन **भारत की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक** स्थिति पर प्रकाश डाला है।

➡ अरबों के विद्वान कुछ भी भारत के बारे में अपने विवरण छोड़े हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध नाम **अबू रेहान** का है, जिसे **अल-बरूनी** के नाम से भी जाना जाता है।

- यह **महमूद गजनवी** का समकालीन था।
- उसके द्वारा कही गई बातें भारतीय समाज और संस्कृति के बारे में उसके ज्ञान पर आधारित हैं।
- जो उसने **संस्कृत** साहित्य के अध्ययन से प्राप्त किया था।
- किंतु उसने अपने समय की **राजनीतिक स्थिति के बारे में कोई जानकारी नहीं दी है।**

इतिहास का निर्माण
Making of History

अब तक **प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक** दोनों तरह के बहुत सारे **पुरास्थलों** की **खुदाई** और छानबीन की जा चुकी है, परंतु प्राचीन भारतीय इतिहास की मुख्य धारा में उसके परिणामों को स्थान नहीं मिल पाया है।

➡ भारत में **सामाजिक** विकास किन-किन अवस्थाओं से गुजरा है, इसका **बोध** तब तक नहीं हो सकता है जब तक **प्रागैतिहासिक पुरातत्व** के परिणामों की ओर ध्यान नहीं दिया जाएगा।

- इतिहासकालीन पुरातत्व भी उतने ही महत्व का है। यद्यपि **प्राचीन इतिहास** के काल के **150 से भी अधिक पुरास्थलों** की खुदाई हो चुकी है।
- प्राचीन काल के **सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक** प्रवृत्तियों के अध्ययन में उन खुदाइयों की **प्रासंगिता** का विवेचन सामान्य पुस्तकों में नहीं दिया गया है।
- प्राचीन भारत के **नगरीय इतिहास** के संदर्भ में तो यह और भी जरूरी है।

- अब तक अधिकांशत: **बौद्ध** और कुछ **ब्राह्मणिक स्थलों** के ही महत्व रेखांकित किए गए हैं, किंतु यह आवश्यक है कि **धार्मिक** इतिहास के अध्ययन में **आर्थिक और सामाजिक पक्षों** पर ध्यान दिया जाए।
- प्राचीन इतिहास अभी तक मुख्यत: **देशी या विदेशी** साहित्यिक स्रोतों के आधार पर ही रचा गया है।
- **सिक्कों और अभिलेखों** की कुछ भूमिका अवश्य रही है, किंतु अधिक महत्व **ग्रंथों** को ही दिया गया है अब नये-नये तरीकों की ओर ध्यान देना है।
- हमें एक ओर **वैदिक युग और दूसरी ओर चित्रित धूसर मृदभाण्ड (पी.जी.डब्ल्यू)** तथा अन्य पुरातात्विक समाग्रियों के बीच पारस्परिक संबंध स्थापित करना है।

➡ इसी तरह **प्रारंभिक पालि ग्रंथों** का संबंध **उत्तरी काले पालिशदार मृदुभाण्ड (एन.बी.पी.डब्ल्यू)** पुरातत्व के साथ जोड़ना होगा और **संगम साहित्य** से प्राप्त सूचनाओं को उन सूचनाओं के साथ मिलाना है जो **प्रायद्वीपीय भारत** को आरंभिक **महापाषाणीय** पुरातत्व से जोड़ता है।

- पुराणों में दी गई लंबी-लंबी **वंशावलियों** की अपेक्षा पुरातात्विक साक्ष्य को कहीं अधिक **मूल्य** दिया जाना चाहिए।
- **पौराणिक** अनश्रुति के अनुसार **अयोध्या** के राम का काल 2000 ई.पू. के आस-पास भले ही मान लें, पर अयोध्या में की गई **खुदाई** और व्यापक **छानबीन** से तो यही सिद्ध होता है कि उस काल के आस-पास वहां कोई बस्ती थी ही नहीं।
- इसी तरह **महाभारत** में **कृष्ण** की भूमिका भले ही महत्वपूर्ण हो, पर **मथुरा** में पाए गए 200 ई. पू. से 300 ई. तक के बीच के **अभिलेखों** और **मूर्तिकला** कृतियों से उनके अस्तित्व की पुष्टि नहीं होती है।
- इसी तरह की कठिनाईयों के कारण, **महाभारत** और **रामायण** के आधार पर **कल्पित महाकाव्य-युग** (एपिक एज) की धारणा त्यागनी होगी।
- हालांकि अतीत में प्राचीन **भारत** पर लिखी गई लगभग सभी **सर्वेक्षण-पुस्तकों** में इसे एक अध्याय बनाया गया है।
- **अवश्य** ही रामायण और **महाभारत** दोनों में सामाजिक विकास का विभिन्न चरण ढूंढ़े जा सकते हैं।
- इसका कारण यह है कि ये **महाकाव्य** सामाजिक विकास की किसी एक अवस्था के द्योतक नहीं है, इनमें अनेक बार परिवर्तन हुए है।
- कई अभिलेखों की उपेक्षा अब तक यह कहकर की जाती रही है कि उनका ऐतिहासिक मूल्य नाममात्र है।

> ''**ऐतिहासिक मूल्य**''का अर्थ यह मान लिया गया है ऐसी कोई जानकारी जो राजनीतिक इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अपेक्षित हो।

- **पौराणिक अनुश्रुतियों** की अपेक्षा अभिलेख निश्चय ही अधिक विश्वसनीय हैं।
- जैसे, **अनुश्रुति** का सहारा **सातवाहनों** के आरंभ को पीछे धकेलने में लिया जाता है, जबकि अभिलेख आधार पर उनका आरंभ काल **ईसा-पूर्व पहली सदी** है।
- अभिलेखों में किसी राजा का शासन **काल,** उसकी **विजय** और उसका **राज्य विस्तार** ये बातें मिल सकती हैं। साथ ही **राज्यतंत्र, समाज, अर्थतंत्र और धर्म** के विकास की प्रवृत्तियां भी तो दिखाई दे सकती हैं।
- इसलिए प्रस्तुत पुस्तक में **अभिलेखों** का सहारा केवल **राजनीतिक** या **धार्मिक** इतिहास के प्रसंग में ही नहीं लिया गया है।
- अभिलेखीय अनुदान पत्रों का महत्व केवल **वंशावलियों** और **विजयावलियों** के लिए ही नहीं है, बल्कि और भी विशेष रूप से ऐसी **जानकारी** के लिए है।
- साथ ही किन-किन नए **राज्यों** का उदय हुआ और **सामाजिक** तथा भूमि व्यवस्था में, विशेषत: **गुप्तोत्तर** काल में क्या-क्या परिवर्तन हुए हैं।
- इसी तरह **सिक्कों** का सहारा केवल **हिंद-यवनों, शकों, सातवाहनों और कुषाणों** के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए ही नहीं लेना है।
- बल्कि **व्यापार** और **नगरीय जीवन** के स्रोतों के प्रकार और **इतिहास** का निर्माण।
- इतिहास की झलक पाने के लिए भी लिया जाना आवश्यक है।
- **सारांश** यह है कि इतिहास निर्माण के लिए **ग्रंथों, सिक्कों, अभिलेखों, पुरातत्व** आदि से निकली सारी सामग्री का ध्यान से संकलन होना परमावश्यक है।
- ध्यातव्य है कि इसमें विभिन्न स्रोतों के **आपेक्षिक महत्व** की समस्या खड़ी होती है।
- **जैसे, सिक्के, अभिलेख, और पुरातत्व** उन मिथक से अधिक मूल्यवान हैं, जो हमे **रामायण, महाभारत और पुराणों में मिलते** हैं।
- पौराणिक मिथक प्रचलित **मानकों** का समर्थन करते हैं, लोकाचार को वैध बताते हैं और जातियों या अन्य सामाजिक वर्गों में संगठित लोगों के **विशेषाधिकारों और आपत्रताओं** को **न्यायोचित** ठहराते हैं, परंतु उनमें **घटनाओं** को यों ही सही नहीं मान लिया जा सकता है।

अतीत के प्रचलनों की व्याख्या वर्तमान अवशेषों से या आदिम जनों से प्राप्त अंतर्दृष्टि से भी की जा सकती है। **कोई भी ठोस ऐतिहासिक पुनर्निर्माण अन्य प्राचीन समाजों में होने वाली हलचल से आंखें नहीं मूंद सकता,** तुलनात्मक दृष्टि को अपनाने से प्राचीन भारत में पाई जाने वाली किसी बात को **'विरल'/'अभूतपूर्व'** मान लेने का दुराग्रह दूर हो सकता है, जो अन्य देशों के **प्राचीन समाजों** की प्रवृत्तियों से मिलती जुलती हैं।

अध्याय-स्मरणिका (FLASHBACK)

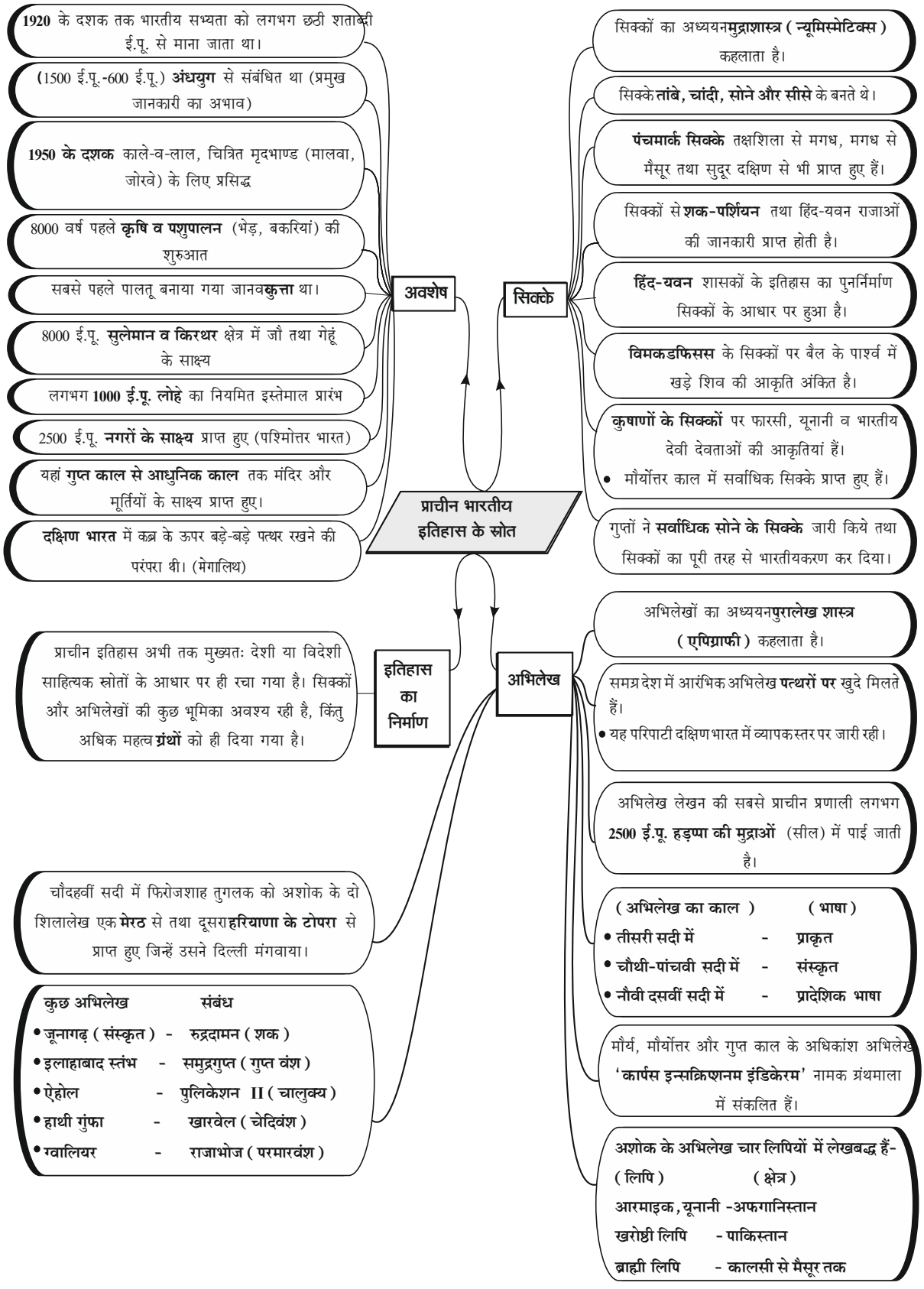

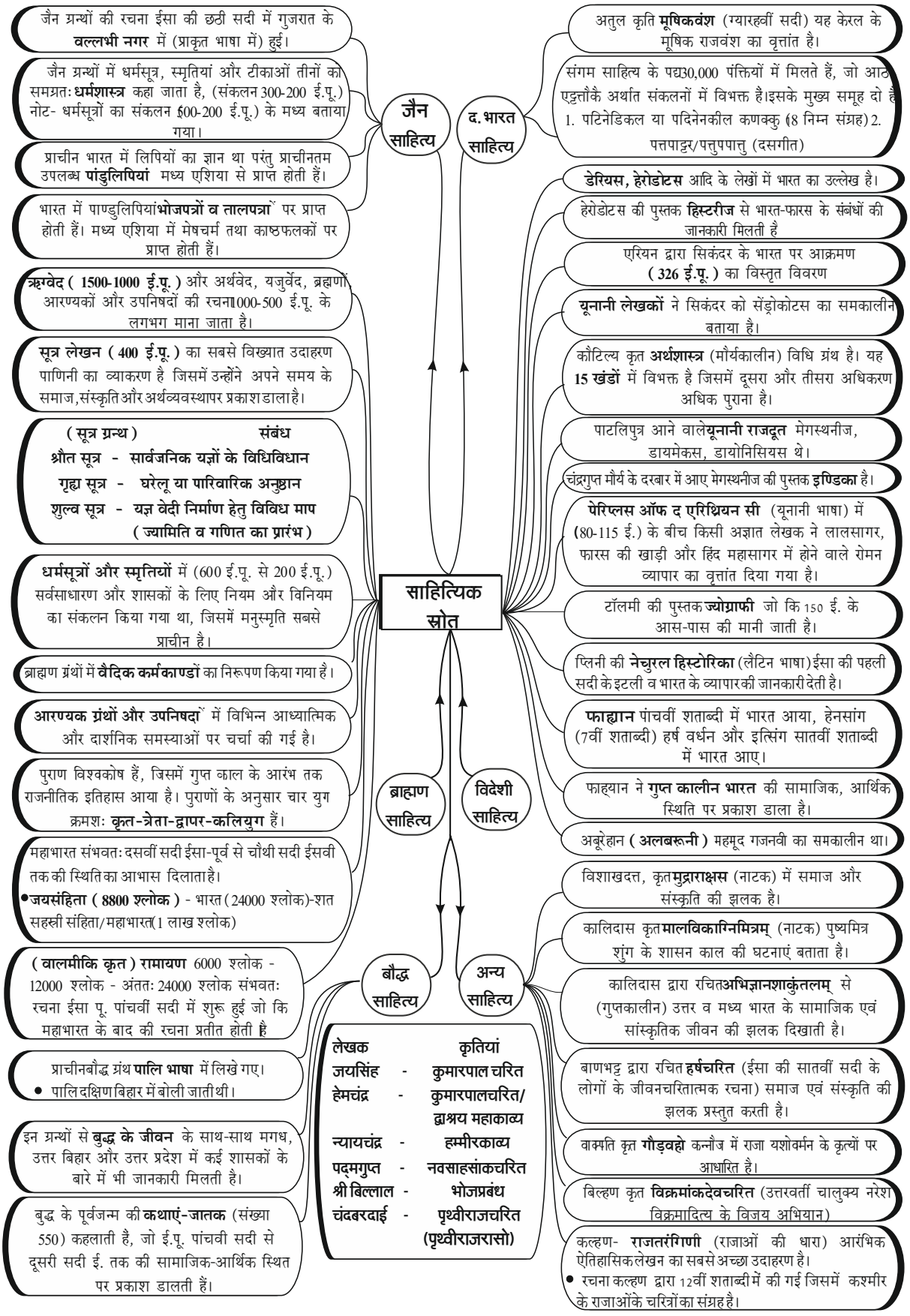
साहित्यिक स्रोत
जैन साहित्य
जैन ग्रन्थों की रचना ईसा की छठी सदी में गुजरात के **वल्लभी नगर** में (प्राकृत भाषा में) हुई।
जैन ग्रन्थों में धर्मसूत्र, स्मृतियां और टीकाओं तीनों को समग्रतः **धर्मशास्त्र** कहा जाता है, (संकलन 300-200 ई.पू.) नोट- धर्मसूत्रों का संकलन 600-200 ई.पू.) के मध्य बताया गया।
प्राचीन भारत में लिपियों का ज्ञान था परंतु प्राचीनतम उपलब्ध **पांडुलिपियां** मध्य एशिया से प्राप्त होती हैं।
भारत में पाण्डुलिपियां**भोजपत्रों व तालपत्रों** पर प्राप्त होती हैं। मध्य एशिया में मेषचर्म तथा काष्ठफलकों पर प्राप्त होती हैं।
द. भारत साहित्य
अतुल कृति **मूषिकवंश** (ग्यारहवीं सदी) यह केरल के मूषिक राजवंश का वृत्तांत है।
संगम साहित्य के पद्य30,000 पंक्तियों में मिलते हैं, जो आठ एट्टुतौकै अर्थात संकलनों में विभक्त है।इसके मुख्य समूह दो हैं 1. पटिनेडिकल या पदिनेनकील कणक्कु (18 निम्न संग्रह) 2. पत्तपाट्टर/पत्तुपपात्तु (दसगीत)
ब्राह्मण साहित्य
ऋग्वेद (1500-1000 ई.पू.) और अर्थवेद, यजुर्वेद, ब्रह्मणों आरण्यकों और उपनिषदों की रचना1000-500 ई.पू. के लगभग माना जाता है।
सूत्र लेखन (400 ई.पू.) का सबसे विख्यात उदाहरण पाणिनी का व्याकरण है जिसमें उन्होंने अपने समय के समाज,संस्कृति और अर्थव्यवस्थापर प्रकाश डाला है।
(सूत्र ग्रन्थ) संबंध
श्रौत सूत्र - सार्वजनिक यज्ञों के विधिविधान
गृह्य सूत्र - घरेलू या पारिवारिक अनुष्ठान
शुल्व सूत्र - यज्ञ वेदी निर्माण हेतु विविध माप (ज्यामिति व गणित का प्रारंभ)
धर्मसूत्रों और स्मृतियों में (600 ई.पू. से 200 ई.पू.) सर्वसाधारण और शासकों के लिए नियम और विनियम का संकलन किया गया था, जिसमें मनुस्मृति सबसे प्राचीन है।
ब्राह्मण ग्रंथों में **वैदिक कर्मकाण्डों** का निरूपण किया गया है।
आरण्यक ग्रंथों और उपनिषदों में विभिन्न आध्यात्मिक और दार्शनिक समस्याओं पर चर्चा की गई है।
पुराण विश्वकोष हैं, जिसमें गुप्त काल के आरंभ तक राजनीतिक इतिहास आया है। पुराणों के अनुसार चार युग क्रमशः **कृत-त्रेता-द्वापर-कलियुग** हैं।
महाभारत संभवतः दसवीं सदी ईसा-पूर्व से चौथी सदी ईसवी तक की स्थिति का आभास दिलाता है।
• **जयसंहिता (8800 श्लोक)** - भारत (24000 श्लोक)-शत सहस्त्री संहिता/महाभारत(1 लाख श्लोक)
(वालमीकि कृत) रामायण 6000 श्लोक - 12000 श्लोक - अंततः 24000 श्लोक संभवतः रचना ईसा पू. पांचवीं सदी में शुरू हुई जो कि महाभारत के बाद की रचना प्रतीत होती है
विदेशी साहित्य
डेरियस, हेरोडोटस आदि के लेखों में भारत का उल्लेख है।
हेरोडोटस की पुस्तक **हिस्टरीज** से भारत-फारस के संबंधों की जानकारी मिलती है
एरियन द्वारा सिकंदर के भारत पर आक्रमण **(326 ई.पू.)** का विस्तृत विवरण
यूनानी लेखकों ने सिकंदर को सेंड्रोकोटस का समकालीन बताया है।
कौटिल्य कृत **अर्थशास्त्र** (मौर्यकालीन) विधि ग्रंथ है। यह **15 खंडों** में विभक्त है जिसमें दूसरा और तीसरा अधिकरण अधिक पुराना है।
पाटलिपुत्र आने वाले**यूनानी राजदूत** मेगस्थनीज, डायमेकस, डायोनिसियस थे।
चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आए मेगस्थनीज की पुस्तक **इण्डिका** है।
पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (यूनानी भाषा) में (80-115 ई.) के बीच किसी अज्ञात लेखक ने लालसागर, फारस की खाड़ी और हिंद महासागर में होने वाले रोमन व्यापार का वृत्तांत दिया गया है।
टॉलमी की पुस्तक **ज्योग्राफी** जो कि 150 ई. के आस-पास की मानी जाती है।
प्लिनी की **नेचुरल हिस्टोरिका** (लैटिन भाषा) ईसा की पहली सदी के इटली व भारत के व्यापार की जानकारी देती है।
फाह्यान पांचवीं शताब्दी में भारत आया, हेनसांग (7वीं शताब्दी) हर्ष वर्धन और इत्सिंग सातवीं शताब्दी में भारत आए।
फाह्यान ने **गुप्त कालीन भारत** की सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।
अबूरेहान **(अलबरूनी)** महमूद गजनवी का समकालीन था।
बौद्ध साहित्य
प्राचीनबौद्ध ग्रंथ **पालि भाषा** में लिखे गए।
• पालि दक्षिण बिहार में बोली जाती थी।
इन ग्रन्थों से **बुद्ध के जीवन** के साथ-साथ मगध, उत्तर बिहार और उत्तर प्रदेश में कई शासकों के बारे में भी जानकारी मिलती है।
बुद्ध के पूर्वजन्म की **कथाएं-जातक** (संख्या 550) कहलाती है, जो ई.पू. पांचवी सदी से दूसरी सदी ई. तक की सामाजिक-आर्थिक स्थित पर प्रकाश डालती हैं।
अन्य साहित्य
विशाखदत्त, कृत**मुद्राराक्षस** (नाटक) में समाज और संस्कृति की झलक है।
कालिदास कृत**मालविकाग्निमित्रम्** (नाटक) पुष्यमित्र शुंग के शासन काल की घटनाएं बताता है।
कालिदास द्वारा रचित**अभिज्ञानशाकुंतलम्** से (गुप्तकालीन) उत्तर व मध्य भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक दिखाती है।
बाणभट्ट द्वारा रचित **हर्षचरित** (ईसा की सातवीं सदी के लोगों के जीवनचरितात्मक रचना) समाज एवं संस्कृति की झलक प्रस्तुत करती है।
वाक्पति कृत **गौड़वहो** कन्नौज में राजा यशोवर्मन के कृत्यों पर आधारित है।
बिल्हण कृत **विक्रमांकदेवचरित** (उत्तरवर्ती चालुक्य नरेश विक्रमादित्य के विजय अभियान)
कल्हण- **राजतरंगिणी** (राजाओं की धारा) आरंभिक ऐतिहासिक लेखन का सबसे अच्छा उदाहरण है।
• रचना कल्हण द्वारा 12वीं शताब्दी में की गई जिसमें कश्मीर के राजाओंके चरित्रों का संग्रह है।
लेखक - कृतियां
जयसिंह - कुमारपाल चरित
हेमचंद्र - कुमारपालचरित/ द्वाश्रय महाकाव्य
न्यायचंद्र - हम्मीरकाव्य
पद्मगुप्त - नवसाहसांकचरित
श्री बिल्लाल - भोजप्रबंध
चंदबरदाई - पृथ्वीराजचरित (पृथ्वीराजरासो)

वस्तुनिष्ठ-खण्ड (Objective-Section)

(पूर्णतः NCERT-पाठ्य सामग्री पर आधारित)

1. मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज था-

(a) जौ व गेहूं (b) चावल

(c) बाजरा (d) मक्का

उत्तर—(a)

उत्तर-पश्चिम की सुलेमान और किरथर पहाड़ी क्षेत्रों में लगभग 8000 ई.पू. लोगों ने सबसे पहले जौ तथा गेहूं जैसी फसलों को उपजाना प्रारंभ कर दिया था।

2. भारत में लोहे का प्रयोग कब से आरंभ हुआ?

(a) लगभग 1500 ई.पू. से (b) लगभग 1200 ई.पू. से

(c) लगभग 1000 ई.पू. से (d) लगभग 700 ई.पू. से

उत्तर—(c)

भारत में लौह धातु का प्रयोग ***उत्तर वैदिक काल में लगभग 1000 ई.पू. से आरंभ हुआ***, लौह प्रयोग के साक्ष्य एटा जिले के अतरंजीखेड़ा में प्राप्त हुए हैं। वैश्विक के सन्दर्भ में लौह युग लगभग 1300 ई. पू. में आरंभ हुआ था।

☛ नवीनतम उत्खनन में प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार तमिलनाडु के कृष्णागिरि के निकट मायिलादुम्पराई से प्राप्त लोहे के साक्ष्य 2172 ई.पू. के हैं।

3. निम्नलिखित में से किस काल के अंतर्गत कब्र के ऊपर एक घेरे में बड़े-बड़े पत्थरों को खड़ा किया जाता था?

(a) नवपाषाण काल (b) पुरापाषाण काल

(c) मध्यपाषाण काल (d) महापाषाण काल

उत्तर—(d)

दक्षिण भारत के कुछ लोग मृत व्यक्ति के शव के साथ औजार, हथियार, मिट्टी के बरतन आदि चीजें भी कब्र में गाड़ते थे और इसके ऊपर एक घेरे में बड़े-बड़े पत्थर खड़े कर दिये जाते थे। ऐसे स्मारकों को **महापाषाण (मेगालिथ)** कहते हैं, हालांकि सभी महापाषाण इस श्रेणी में नहीं आते हैं।

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) अनुलंब उत्खनन के अंतर्गत खड़ी लंबवत् खुदाई होती है।

कथन (2) क्षैतिज उत्खनन के अंतर्गत एक वृहत भाग की खुदाई करते हैं, जो एक खर्चीली पद्धति है।

उपर्युक्त उत्खनन विधियों में से कौन सा कथन सत्य हैं/है?

(a) केवल (1) (b) केवल (2)

(c) (1) व (2) दोनों (d) कोई नहीं

उत्तर—(c)

उत्खनन के दौरान टीलों की खुदाई की 2-विधियां हैं प्रथम, अनुलंब उत्खनन विधि द्वितीय क्षैतिज उत्खनन विधि अतः विकल्प (c) सत्य है।

5. सिक्कों के अध्ययन को कहा जाता है?

(a) पुरातत्व (b) पुरालेखाशास्त्र

(c) मुद्राशास्त्र (d) अन्वेषण शास्त्र

उत्तर—(c)

सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स)** कहते हैं। मुद्राशास्त्र के कई उपक्षेत्र हैं-

➲नोटफिली - कागजी मुद्रा का अध्ययन,

➲एक्जोनुमिया- मुद्रा के स्थान पर प्रचलित धातु की वस्तुओं का अध्ययन, स्क्रिपोफिली - प्रतिभूतियों का अध्ययन।

6. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए-

(A) विक्रम संवत	**(1)**	**78 ई.**
(B) शक संवत	**(2)**	**57 ई.पू.**
(C) गुप्त संवत	**(3)**	**319 ई.**
(D) राष्ट्रीय कैलेंडर	**(4)**	**22 मार्च, 1957**

कूटः

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	2	1	3	4
(c)	2	1	4	3
(d)	1	3	2	4

उत्तर—(b)

सही सुमेलन इस प्रकार है- विक्रम संवत - 57 ई.पू. शक-संवत - 78 ई. गुप्त संवत - 319 ई.तथा राष्ट्रीय कैलेंडर - 22 मार्च, 1957 को अपनाया गया था, जो कि शक संवत पर आधारित है।

7. निम्नलिखित में से कौन-से कथन भारतीय-यूनानी सिक्कों के संदर्भ में सत्य हैं-

कथन (1) हिंद-यवन (भारतीय-यूनानी) सिक्के चांदी, तांबे व कभी-कभी सोने के भी पाए गए हैं।

कथन (2) सिक्कों के मुख्य भाग पर राजा की तस्वीर तथा पृष्ठ भाग पर देवता की मूर्ति अंकित होती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल (1)

(b) केवल (2)

(c) (1) और (2) दोनों

(d) न तो (1) न ही (2)

उत्तर—(c)

भारतीय-यूनानी सिक्के चांदी, तांबे व कहीं-कहीं सोने की धातु के पाए गये हैं, जिन पर सुंदर कलात्मक आकृतियां देखने को मिलती हैं। सिक्कों के मुख्य भाग पर राजा की तस्वीर अथवा उसकी आवध आकृति तथा पृष्ठ भाग पर किसी देवता की मूर्ति अंकित होती है। अतः विकल्प (c) सही है।

8. निम्नलिखित में से किस राजा ने अपना उल्लेख सिक्कों पर शिव भक्त के रूप में कराया है?

(a) विम कैडफिसस (b) अशोक

(c) कुजुल कैडफिसस (d) हर्ष

उत्तर—(a)

विम कैडफिसस के सिक्कों पर बैल के पार्श्व में खड़े शिव की आकृति अंकित है। इन सिक्कों पर अंकित लेख में राजा ने अपना उल्लेख महेश्वर अर्थात् शिव के भक्त के रूप में किया है।

9. सिक्कों के टंकण के मामले में गुप्त वंश के राजाओं ने किस वंश के राजाओं की परंपरा का अनुसरण किया है।

(a) मौर्य वंश (b) कुषाण वंश

(c) सातवाहन वंश (d) हर्यक वंश

उत्तर—(b)

गुप्त सम्राटों ने अधिकतर सोने और चांदी के सिक्के जारी किए थे, जिनमें सोने के सिक्कों की अधिकता पायी जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि सिक्कों के टंकण के मामले में गुप्त वंश के राजाओं ने कुषाणों की परंपरा का अनुसरण किया।

10. गुप्तकालीन सिक्कों के मुख्य भाग पर राजाओं को दिखाया गया है-

(1) सिंह अथवा गैंडे का शिकार करते हुए,

(2) धनुष अथवा परशु पकड़े हुए तथा

(3) अश्वमेघ यज्ञ करते हुए

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए-

(a) केवल (1) (b) केवल (2)

(c) (1) और (2) (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर—(d)

गुप्तकालीन सम्राटों ने सिक्कों का पूरी तरह से भारतीय करण कर दिया। इन पर सिंह अथवा गैंडे का शिकार करते हुए चित्र अथवा धनुष या परशु पकड़े हुए या फिर कोई वाद्ययंत्र बजाते हुए अथवा अश्वमेघ यज्ञ करते हुए सम्राटों को दर्शाया गया है।

11. धातु के पत्रों या पत्थरों पर उकेरे गये लेखों को किस नाम से जाना जाता है?

(a) अभिलेख/शिलालेख (b) कानून/नियम

(c) आदेश पत्र (d) पाण्डुलिपि

उत्तर—(a)

पत्थरों की सतहों या धातु-पत्रों पर जो लेख उकेरे जाते हैं उन्हें, शिलालेख या अभिलेख कहते हैं। अतः विकल्प (a) सत्य है।

12. अभिलेख के अध्ययन को किस शब्द से परिभाषित किया गया है?

(a) पुरालेखाशास्त्र (b) मुद्राशास्त्र

(c) अध्ययनशास्त्र (d) पेलियोग्राफी

उत्तर—(a)

पुरालेखाशास्त्र (एपिग्राफी) के अंतर्गत अभिलेखों का अध्ययन किया जाता है और दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन तिथियों के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र (पेलियोग्राफी) कहते हैं।

13. लेखन की सबसे प्राचीन प्रणाली किन मुद्राओं से प्राप्त होती है?

(a) मौर्यकालीन मुद्राओं से (b) गुप्तकालीन मुद्राओं से

(c) हड़प्पाई मुद्राओं से (d) वैदिक मुद्राओं से

उत्तर—(c)

लेखन की सबसे प्राचीन प्रणाली हड़प्पा की मुद्राओं (सील) में पाई जाती है, लेकिन उसे पढ़ने में अभी तक सफलता नहीं मिली है।

14. आरंभिक अभिलेखों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।

कथन (2) चौथी सदी में प्राकृत भाषा का स्थान संस्कृत ने ले लिया था।

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन करें।

(a) केवल (1)

(b) केवल (2)

(c) (1) और (2) दोनों

(d) न तो (1) न ही (2)

उत्तर—(c)

आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं और ये ई.पू. तीसरी सदी के हैं। अभिलेखों में संस्कृत भाषा, ईसा की दूसरी सदी से मिलने लगती है और चौथी- पांचवी सदी में इसका सर्वत्र व्यापक प्रयोग होने लगा, हालांकि तब भी प्राकृत का प्रयोग समाप्त नहीं हुआ था।

15. अशोक ने अफगानिस्तान के अपने सम्राज्य में शासनादेशों हेतु कौन-सी लिपियों का उपयोग किया?

(a) आरमाइक लिपि (b) यूनानी लिपि

(c) a व b दोनों (d) ब्राह्मी

उत्तर—(c)

अशोक के उत्कीर्ण लेखों की लेखन-प्रणाली मुख्यतः 4 लिपियों पर आधारित थी (1) आरमाइक (2) यूनानी (ग्रीक) (3) खरोष्ठी (4) ब्राह्मी। अफगानिस्तान के अपने सम्राज्य में उसने शासनादेशों के लिए आरमाइक और यूनानी लिपियों का उपयोग किया।

16. अशोक की लिपियों तथा उनसे संबंधित क्षेत्र।
सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I(लिपि)	**सूची-II(क्षेत्र)**
(A) आरमाइक	**1. अफगानिस्तान**
(B) खरोष्ठी	**2. पाकिस्तान**
(C) ब्राह्मी	**3. कालसी से मैसूर**

कूट :

	A	B	C
(a)	1	3	2
(b)	2	3	1
(c)	1	2	3
(d)	3	2	1

उत्तर—(c)

सही सुमेलन इस प्रकार है-
आरमाइक - अफगानिस्तान
खरोष्ठी - पाकिस्तान
बाह्मी - कालसी से मैसूर

17. निम्नलिखित में से किस मध्यकालीन शासक ने अशोक के अभिलेखों को दिल्ली मंगाया था?
(a) मुहम्मद बिन तुगलक (b) फिरोजशाह तुगलक
(c) अकबर (d) औरंगजेब

उत्तर—(b)

चौदहवीं सदी में फिरोजशाह तुगलक को अशोक के दो शिलालेख मिले। एक मेरठ तथा दूसरा हरियाणा के टोपरा नामक स्थान से प्राप्त हुआ, जिन्हें दिल्ली मंगवाया गया तथा पंडितों से पढ़वाने का प्रयास किया लेकिन कोई इसे पढ़ नहीं सका।

18. अशोक के अभिलेखों को पढ़ने वाला प्रथम व्यक्ति कौन था?
(a) जेम्स मायर (b) जेम्स प्रिंसेप
(c) रोमिला थापर (d) एम.सी. मजूमदार

उत्तर—(b)

अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप को सफलता मिली जो उस समय बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में कार्यरत थे।

☛ अशोक के अभिलेखों को जेम्स प्रिंसेप द्वारा पढ़ने का काल नई एन.सी.ई.आर.टी में 1838 ई. वर्णित है।

19. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
कथन (1) ऐहोल शिलालेख में भोज ने अपने घराने की वंशावली और उपलब्धियों का विवरण दिया है।
कथन (2) ग्वालियर शिलालेख में चालुक्य वंश के राजा पुलकेशिन द्वितीय ने अपने पूर्वजों और उनकी उपलब्धियों का विवरण दिया है।
उपर्युक्त शिलालेखों के संदर्भ में सही कथन का चुनाव करें।
(a) केवल (1) (b) केवल (2)
(c) (1) और (2) दोनों (d) न तो (1) न ही (2)

उत्तर—(d)

चालुक्य वंश के राजा पुलकेशिन द्वितीय ने ऐहोल शिलालेख में अपने घराने की वंशावली और उपलब्धियों का विवरण दिया है। ध्यातव्य है कि भोज ने अपने ग्वालियर शिलालेख में अपने पूर्वजों और उनकी उलब्धियों का पूरा विवरण दिया हुआ है।

20. निम्नलिखित में से किस अभिलेख का संबंध खारवेल से है?
(a) प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख (b) हाथीगुंफा अभिलेख
(c) ग्वालियर अभिलेख (d) ऐहोल अभिलेख

उत्तर—(b)

ईसा की पहली सदी में कलिंग के खारवेल ने हाथीगुंफा अभिलेख में अपने जीवन की बहुत सी घटनाओं का वर्षवार विवरण दिया है।

21. निम्नलिखित में से 1500-1000 ई. पू. के लगभग का काल किस वेद से संबंधित रहा है?
(a) सामवेद (b) यजुर्वेद
(c) अथर्ववेद (d) ऋग्वेद

उत्तर—(d)

ऋग्वेद को 1500-1000 ई. पू. के लगभग का माना जाता है, लेकिन अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्रह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदों को 1000-500 ई. पू. के लगभग माना जाता है।

22. वैदिक मूलग्रंथों का अर्थ समझने हेतु किन शास्त्रों की रचना की गयी थी?
(a) व्याकरण (b) वेदांग
(c) कल्प (d) छंद

उत्तर—(b)

वैदिक मूलग्रंथ का अर्थ समझ में आए इसके लिए वेदांगों अर्थात् वेद के अंगभूत शास्त्रों का अध्ययन आवश्यक था, वेदांगों की संख्या 6 हैं जो इस प्रकार हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद और निरुक्त।

23. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
कथन (1) पाणिनी का व्याकरण 450 ई.पू. के आस-पास लिखा गया था।
कथन (2) व्याकरण सूत्र लेखन का सबसे विख्यात उदाहरण है।
उपर्युक्त में से कौन-सा असत्य है?
(a) केवल (1) (b) केवल (2)
(c) (1) और (2) दोनों (d) न तो (1) न ही (2)

उत्तर—(d)

प्रत्येक शास्त्र के चतुर्दिक प्रचुर साहित्य विकसित हुए हैं, जो कि गद्य में नियम रूप में लिखे गए हैं। संक्षिप्त होने के कारण ये नियम सूत्र कहलाते हैं। पाणिनी का व्याकरण लगभग 450 ई.पू. लिखा गया जो कि सूत्र लेखन का विख्यात उदाहरण है।

24. धर्मसूत्रों और स्मृतियों को जाना जाता है-

(a) कर्मकाण्ड व आराधना हेतु
(b) सर्वसाधारण और शासकों के लिए नियम और विनियम हेतु
(c) कहानियों व उपदेशों के साधन हेतु
(d) मनोरंजन हेतु

उत्तर—(b)

धर्मसूत्रों व स्मृतियों में सर्वसाधारण और शासकों के लिए नियम और विनियम निर्धारित हैं। आधुनिक अवधारणा के रूप में इन्हें प्राचीन भारतीय राज्यव्यवस्था और समाज के रूप में संविधान व विधि पुस्तकों का नाम दिया जा सकता है। इन्हें धर्मशास्त्र भी कहा जाता है।

25. निम्नलिखित में से किन-किन साहित्य को उत्तरवर्ती वैदिक साहित्य के अंतर्गत शामिल किया गया है?

(1) ब्राह्मणों **(2) आरण्यकों**
(3) उपनिषदों **(4) मिलिन्दपन्हों**
नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

(a) 1 और 2 (b) 1, 3 और 4
(c) 1, 2 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर—(c)

वेदों के अलावा, ब्राह्मणों, अरण्यकों और उपनिषदों को भी वैदिक साहित्य में शामिल किया जाता है तथा इन्हें उत्तरवर्ती वैदिक साहित्य कहा जाता है।

26. ऐतिहासिक अध्ययन की कितनी शाखाएं पुराणों की विषय वस्तु बनती है?

(a) 7 (b) 4 (c) 8 (d) 5

उत्तर—(d)

ऐतिहासिक अध्ययन की पांच शाखाएं पुराणों की विषयवस्तु बनती है जो निम्न है- (1) सर्ग (2) प्रतिसर्ग (3) मन्वंतर (4) वंश (5) वंशानुचरित।

27. निम्नलिखित में से पुराणों मे बताए गए चार युगों का सही क्रम कौन-सा है?

(a) कृत, त्रेता, द्वापर, कलि (b) कृत, द्वापर, त्रेता, कलि
(c) द्वापर, त्रेता, कृत, कलि (d) त्रेता, द्वापर, कृत, कलि

उत्तर—(b)

पुराणों मे बताए गए चार युगों का क्रम निम्नलिखित हैं-कृत, द्वापर, त्रेता, कलि। इनमें हर युग अपने पिछले युग से निम्न बताया गया है और कहा गया है कि एक युग बाद जब दूसरे युग का आरंभ होता है तब नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों का अधः पतन होता है।

28. निम्नलिखित में से कौन-सा संग्रह ग्रंथ शतसहस्त्री संहिता के नाम से जाना जाता है-

(a) रामायण (b) महाभारत (c) पुराण (d) ऋग्वेद

उत्तर—(b)

महाभारत को व्यास की कृति माना जाता है जो लगभग दसवीं सदी ई.पू. से चौथी सदी ई.पू. तक की स्थिति का आभास कराती है। पहले महाभारत में केवल 8800 श्लोक थे तब इसका नाम जयस (जय संहिता) था, बाद में बढ़कर 24,000 श्लोक हो गए और इसका नाम भारत पड़ा, अंततः इसमें 1 लाख श्लोक हो गए और तद्नुसार यह शतसहस्त्री संहिता या महाभारत कहलाने लगा।

29. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) रामायण, महाभारत के बाद की रचना प्रतीत होती है।
कथन (2) रामायण में मूलतः 6000 श्लोक थे।
उपर्युक्त में से कौन-सी विशेषता/विशेषताएं रामायण की है/हैं?

(a) केवल (1) (b) केवल (2)
(c) (1) और (2) दोनों (d) न तो (1) न ही (2)

उत्तर—(c)

वाल्मीकि रामायण में मूलतः 6000 श्लोक थे, जो बढ़कर 12000 श्लोक हो गए और अंततः 24000 श्लोक हैं, इसकी रचना संभवतः ईसा-पूर्व पांचवी सदी में शुरू हुई। मिला जुलाकर इसकी रचना महाभारत के बाद हुई प्रतीत होती है। अतः विकल्प (a) सही है।

30. निम्नलिखित दिए गये सूत्रों में से किसके अंतर्गत राजाओं, तीनो उच्च वर्णों के अनुष्ठान तथा राज्याभिषेक पर चर्चा की गयी है।

(a) गृहासूत्र (b) शुल्वसूत्र (c) श्रौतसूत्र (d) जातकर्म

उत्तर—(c)

राजाओं, तीनों उच्च वर्णों और घनाढ्य पुरुषों द्वारा अनुष्ठान सार्वजनिक यज्ञों के विधि-विधान तथा राज्याभिषेक के कई आडंबरों का वर्णन **श्रौतसूत्र** के अंतर्गत किया गया है।

31. किस सूत्र से ज्यामिति व गणित के अध्ययन का आरंभ माना जाता है?

(a) शुल्व सूत्र (b) श्रौत सूत्र (c) बाह्य सूत्र (d) गृह्य सूत्र

उत्तर—(a)

शुल्व सूत्र उल्लेखनीय है जिसमें यज्ञवेदी के निर्माण के लिए विविध प्रकार की मापों का विधान है। ज्यामिति और गणित का अध्ययन यहीं से आरंभ होता है। जातकर्म- नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध आदि इसी से संबंधित है।

32. प्राचीन बौद्ध ग्रंथ किस भाषा में लिखे गये हैं?

(a) ब्राह्मी (b) पालि (c) संस्कृत (d) आरमाइक

उत्तर—(b)

प्राचीन बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गये हैं। यह भाषा मगध यानी दक्षिणी बिहार में बोली जाती थी। पाली को प्राकृत भाषा का एक रूप कहा जाता है।

33. बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाएं किस नाम से जानी जाती हैं?

(a) पिटक (b) सुत्त पिटक (c) जातक (d) थेरगाथा

उत्तर—(c)

बौद्धों के धार्मिकेत्तर साहित्य में सबसे महत्वपूर्ण और रोचक है, गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं जो जातक कहलाती हैं और प्रत्येक कथा एक प्रकार की लोक कथा है। ऐसी कथाओं की संख्या लगभग 550 से अधिक है।

34. निम्नलिखित में से जैन ग्रंथों की रचना किस भाषा में हुई है?

(a) पालि (b) अर्द्धमागधी (c) संस्कृत (d) प्राकृत

उत्तर—(d)

जैन ग्रंथों की रचना प्राकृत भाषा में की गयी है ईसा की छठीं सदी में इन्हें अंतिम रूप से गुजरात के वल्लभी नगर में संकलित किया गया था।

35. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) कौटिल्य का अर्थशास्त्र पंद्रह खंडों में विभक्त है।
कथन (2) कौटिल्य के अर्थशास्त्र का तीसरा व पांचवां खंड अधिक पुराना है।
उपर्युक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) केवल (1) (b) केवल (2)
(c) (1) और (2) दोनों (d) न तो (1) न ही (2)

उत्तर—(b)

कौटिल्य का अर्थशास्त्र विधिग्रंथ है यह पंद्रह अधिकरणों या खंडों में विभक्त है जिनमें दूसरा और तीसरा अधिकरण अधिक पुराना है। इसके प्राचीनतम अंश मौर्यकालीन समाज और अर्थतंत्र की झलक देते हैं।

36. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए-

सूची-I (कवि)	**सूची-II (कृति)**
(A) विशाखदत्त	**1. विक्रमांकदेवचरित**
(B) बाणभट्ट	**2. गौड़वहो**
(C) वाक्पति	**3. हर्षचरित**
(D) बिल्हण	**4. मुद्राराक्षस**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	1	2	4	3
(b)	2	3	1	4
(c)	4	1	2	3
(d)	4	3	2	1

उत्तर—(d)

विकल्प में दिए गए कवियों व उनकी कृतियों से संबंधित सुमेलन निम्नानुसार है-

कवि		**कृति**
विशाखदत्त	-	मुद्राराक्षस
बाणभट्ट	-	हर्षचरित
वाक्पति	-	गौड़वहो
विशाखदत्त	-	विक्रमांकदेवचरित

37. निम्नलिखित में से कालिदास द्वारा लिखित नाटक मालविकाग्निमित्रम् किस पर आधारित है?

(a) समाज व संस्कृति पर
(b) पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल की घटनाओं पर
(c) हर्ष के जीवन पर
(d) व्याकरण व कर्मकाण्ड पर

उत्तर—(b)

कालिदास का नाटक मालविकाग्निमित्रम्, पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल की कुछ घटनाओं पर आधारित है। अतः विकल्प (b) सही है।

38. निम्नलिखित दिए गए कवियों को उनकी रचनाओं से सुमेलित कीजिए।

सूची-I (कवि)	**सूची-II (रचनाएं)**
(A) जयसिंह	**1. हम्मीरकाव्य**
(B) न्यायचंद्र	**2. भोजप्रबंध**
(C) बिल्लाल	**3. द्वाश्रय महाकाव्य**
(D) हेमचन्द्र	**4. कुमारपाल चरित**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	2	3	1	4
(b)	4	1	2	3
(c)	4	2	1	3
(d)	3	4	1	2

उत्तर—(b)

सुमेलन निम्न प्रकार है-

कवि	**रचनाएं**
जयसिंह	- कुमारपालचरित
न्यायचंद्र	- हम्मीरकाव्य
बिल्लाल	- भोजप्रबंध
हेमचंद्र	- द्वाश्रय महाकाव्य

39. राजतरंगिणी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) कल्हण ने इसकी रचना 12 वीं शताब्दी में की थी।
कथन (2) यह चंदेल राजाओं के चरितों का संग्रह है।
उपर्युक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) केवल (1) (b) केवल (2)
(c) (1) और (2) दोनों (d) न तो (1) न ही (2)

उत्तर—(b)

राजतरंगिणी आरंभिक इतिहास लेखन का सबसे अच्छा उदाहरण है। इसकी रचना 12वीं शताब्दी में कल्हण ने की थी। यह कश्मीर के राजाओं के चरितों का संग्रह है।

40. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) मनुस्मृति प्रारम्भिक भारत का एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ है।
कथन (2) इसकी रचना संस्कृत भाषा में की गई है।
उपर्युक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) केवल (1) (b) केवल (2)

(c) (1) और (2) दोनों (d) कोई नहीं

उत्तर—(a)

'मनुस्मृति' मनु द्वारा संस्कृत भाषा में रचित एक विधिग्रंथ है। इसकी रचना दूसरी शताब्दी ई.पू. के दौरान की गई थी।

41. 'पेरिप्लस आफ द एरीथ्रियन सी' किसके द्वारा लिखी गई थी?

(a) अरबी यात्रियों द्वारा (b) भारतीयों द्वारा
(c) यूनानी समुद्री यात्री द्वारा (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर—(c)

'पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' की रचना एक अज्ञात यूनानी यात्री द्वारा की गई थी।

42. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) शासकों की प्रतिमा और नाम के साथ सिक्के जारी करने वाले शासक हिंद-यूनानी थे।

कथन (2) हिंद-यूनानियों ने द्वितीय शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया था।

उपर्युक्त में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) केवल (1) (b) केवल (2)
(c) (1) और (2) दोनों (d) कोई नहीं

उत्तर—(c)

शासकों की प्रतिमा व नाम वाले सिक्के सर्वप्रथम हिंद यूनानियों ने जारी किये, जिन्होंने द्वितीय शताब्दी ई.पू. में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिम भाग पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था। अतः विकल्प (c) सत्य है।

43. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

कथन (1) दक्षिण भारत में अनेक स्थलों से रोमन सिक्के प्राप्त हुए थे।

कथन (2) दक्षिण भारत रोमन साम्राज्य के अंतर्गत न होते हुए भी व्यापारिक दृष्टि से रोमन साम्राज्य से संबंधित था।

उपर्युक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?

(a) केवल (1) (b) केवल (2)
(c) (1) और (2) दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर—(d)

प्रश्नगत विकल्पों में दोनों विकल्प मे दिये दोनो कथन सत्य हैं। दक्षिण भारत से रोमन सिक्के प्राप्त हुए हैं जो रोम के साथ व्यापारिक संबंध को प्रदर्शित करते हैं।

44. हेरोडोटस द्वारा लिखी गयी पुस्तक हिस्टरीज में भारत का किस देश के साथ व्यापारिक संबंधों की चर्चा की गयी है?

(a) इटली (b) मिस्र (c) कंबोडिया (d) फारस

उत्तर—(d)

हेरोडोटस ने अपनी पुस्तक हिस्टरीज में हमें भारत-फारस संबंधों के बारे में काफी जानकारी प्रदान की है।

45. निम्नलिखित में से यूनानी राजाओं द्वारा पाटलिपुत्र में भेजे गये राजदूतों में से कौन शामिल नहीं था?

(a) सैंड्रोकोटस (b) डायमेकस
(c) मेगस्थनीज (d) डायोनिसियस

उत्तर—(a)

यूनानी लेखकों ने 326 ई.पू. में भारत पर हमला करने वाले सिकंदर महान के समकालीन के रूप में सैंड्रोकोटस के नाम का उल्लेख किया है तथा सिद्ध किया है कि सैंड्रोकोटस और चंद्रगुप्त मौर्य, जिनके राज्यारोहण की तिथि 322 ई.पू. निर्धारित की गई है, एक ही व्यक्ति थे।

46. किस प्राचीनतम पुस्तक में भारत और इटली के बीच होने वाले व्यापारिक संबंधों की जानकारी दी गई है?

(a) हिस्टरीज (b) नेचुरल्स हिस्टोरिका
(c) इंडिका (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर—(b)

प्लिनी की नेचुरल्स हिस्टोरिका ईसा की पहली सदी की पुस्तक है। यह लैटिन भाषा में है और हमें भारत तथा इटली के बीच होने वाले व्यापार की जानकारी देती है।

47. प्राचीन दक्षिण भारत का संगम साहित्य किस भाषा में लिखा गया है?

(a) तमिल (b) तेलुगू (c) कन्नड़ (d) मलयालम

उत्तर—(a)

राजाओं द्वारा संरक्षित विद्या केंद्रों में एकत्र होकर कवियों और भाटों ने तीन-चार सदियों में संगम साहित्य का सृजन किया था जो मूल रूप में तमिल भाषा में लिखा गया था।

48. संगम साहित्य में दिए गए यवनों के विवरणों में से कौन से विवरण सत्य हैं?

1. यवन लोग अपने-अपने पोतों पर आते थे।
2. यवन सोने के बदले कालीमिर्च खरीदते थे।
3. यवन सुरा और दासियां स्थानीय लोगों तक पहुंचाते थे।
4. यवनों ने अंत तक दक्षिण भारत पर अधिकार कर लिया था।

उपर्युक्त में से सत्य कथन का चयन करें-

(a) 1 और 2 (b) 1, 3 और 4
(c) 1, 2 और 3 (d) सभी सत्य हैं।

उत्तर—(c)

संगम ग्रंथों में बहुत-से नगरों का उल्लेख मिलता है। इनमें उल्लिखित कावेरीपट्टनम का समृद्धिपूर्ण अस्तित्व पुरातात्विक साक्ष्यों से समर्थित हुआ है। इसी ग्रंथ में यवनों के बारे में भी उल्लेख किया गया है जिसमें यवनों के दक्षिण भारत पर अधिकार की चर्चा नहीं हुई है। इसमें यवनों द्वारा अपने पोतों का उपयोग करना, सोने के बदले कालीमिर्च या गोलमिर्च आदि को खरीदनें का वर्णन भी मिलता है। अतः विकल्प (c) सत्य है।

भारतीय इतिहास की भौगोलिक पृष्ठभूमि (Geographical background of Indian History)

'भारतीय इतिहास की भौगोलिक पृष्ठभूमि' प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है। प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रायः इससे सम्बद्ध प्रश्न बनते हैं। निम्नलिखित एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से कक्षा 12 तक की नई एवं पुरानी पुस्तकों में यह पाठ्य सामग्री समाहित है-

क्रम	कक्षा	नई/पुरानी	पुस्तक का नाम	अध्याय का नाम
1	11	पुरानी	प्राचीन भारत (मक्खन लाल)	भारतीय इतिहास की भौगोलिक पृष्ठभूमि
2	11	पुरानी	प्राचीन भारत (रामशरण शर्मा)	भौगोलिक ढांचा

अध्याय - अनुक्रमणिका

- भारतीय उपमहाद्वीप
- भारतीय उपमहाद्वीप का भौतिक विभाजन
  - हिमालय पर्वत
  - सिंधु गंगा ब्रह्मपुत्र मैदान
  - प्रायद्वीपीय भारत
    - (i) मध्य भारत का पठार
    - (ii) दक्कन का पठार
- भारतीय उपमहाद्वीप के तटवर्ती क्षेत्र
- भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु
- भारतीय इतिहास पर भूगोल का प्रभाव
- प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित भारत का भूगोल
- अध्याय - स्मरणिका
- वस्तुनिष्ठ-खण्ड

भारतीय उपमहाद्वीप (Indian Subcontinent)

भारतीय उपमहाद्वीप प्राकृतिक सीमाओं वाला एक सुनिर्धारित एवं सुपरिभाषित भू-भाग है। ***भारतीय उपमहाद्वीप में इस समय निम्नलिखित छः देश शामिल हैं- भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान एवं बांग्लादेश।***

☛ एन.सी.ई.आर.टी रामशरण शर्मा कक्षा **11** भारतीय उपमहाद्वीप में इस समय कुल पांच देश स्थित हैं- **भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान एवं बांग्लादेश।**

भारतीय उपमहाद्वीप की सीमाएं चारों तरफ से निम्न प्राकृतिक भौगोलिक संरचनाओं से घिरी हैं-

दिशा	-	प्राकृतिक भौगोलिक सीमावर्ती संरचना
उत्तर में	-	हिमालय पर्वत
पश्चिमी और उत्तर पश्चिमी सीमा पर	-	पामीर का पठार और सुलेमान-किरथर पर्वतमाला
पूर्व में	-	बंगाल की खाड़ी
पश्चिम में	-	अरब सागर
दक्षिण में	-	हिंद महासागर

भौतिक विभाजन (Physical Division)

भौतिक दृष्टि से इस उपमहाद्वीप का अध्ययन तीन भागों में किया जा सकता है :

(i) हिमालय पर्वत (ii) गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान और
(iii) दक्कन का पठार

■ *हिमालय पर्वत (The Himalays)*

हिमालय पर्वत **पश्चिम में अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में म्यांमार तक फैला है। तिब्बत का पठार** इसका उत्तरी भाग है।

➡ यह 2400 किलोमीटर से अधिक लंबा और लगभग 250 से 320 किलोमीटर चौड़ा है।

- ➲ **इसमें लगभग 114 चोटियां हैं,** जो 20,000 फुट से अधिक ऊंची हैं।
- ➲ **इसकी प्रमुख चोटियां हैं- गौरीशंकर**.अथवा **ऐवरेस्ट** (**संसार की सबसे ऊंची चोटी**), **कंचनजंगा, धौलागिरि, नंगापर्वत नंदादेवी** आदि।
- ➲ **हिंदुकुश पर्वत** जो पामीर के पठार से शुरू होता है, **भारतीय उपमहाद्वीप की पश्चिमी प्राकृतिक सीमा बनाता है।**

➡ **ईरान को भारतीय उपमहाद्वीप से निम्न पर्वतमालाएं अलग करती हैं-**

- सफेद कोह पर्वतमाला
- सुलेमान पर्वतमाला एवं
- किरथर पर्वतमाला

➡ आधुनिक अफगानिस्तान और बलूचिस्तान में इस रेखा के पश्चिम में स्थित विशाल भू-भाग, हिंदुकुश के दक्षिण और पूर्व में स्थित भू-भागों की तरह ही बहुत लंबे समय तक सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से भारत के भाग रहे।

- ➲ **पूर्व की ओर पटकोई पहाड़ियां**, **नागा पहाड़ियां**, **मणिपुर का पठार** और **खासी, गारो** तथा **जयंतिया पहाड़ियां स्थित हैं।**
- ➲ **लुशाई और चिन** की पहाड़ियां **मणिपुर के दक्षिण में स्थित** हैं।

➲ हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा को निम्न तरीके से रक्षा करता है-
- आक्रमणकारियों एवम्
- साइबेरिया की ठंडी हवाओं से

- ➲ यही कारण है कि उत्तर भारत की जलवायु लगभग पूरे साल काफी गर्म रहती है।
- ➲ मैदानों में अधिक ठंडी नहीं पड़ने से यहां के लोगों को बहुत अधिक कपड़े नहीं पहनने पड़ते और वे खुले में अधिक समय तक रह सकते हैं।
- ➲ दूसरा, **हिमालय** बहुत ऊंचा होने के कारण उत्तर से होने वाले हमलों से देश की रक्षा करता है।
- ➲ हालांकि यह बात उन दिनों विशेष रूप से लागू होती थी जब **औद्योगिक** युग नहीं आया था और **संचार-साधन** इतने विकसित नहीं हुए थे।
- ➲ यह संसार के शेष भाग से बिल्कुल कटा हुआ नहीं है।
- ➲ इसमें कुछ महत्वपूर्ण **दर्रे** (मार्ग) हैं, जिनके जरिए **पश्चिमी, मध्य और उत्तरी एशिया** के साथ अत्यंत प्राचीन काल से आपसी संबंध कायम रखे गए हैं।

उत्तर-पश्चिम में सुलेमान पर्वत-श्रृंखला, जो दक्षिण की ओर हिमालय पर्वत-श्रृंखला की कड़ी है, इसे निम्न दर्रों के द्वारा पार किया जा सकता था, जो हैं-

- खैबर दर्रे
- बोलन दर्रे
- गोमल दर्रे ।

- ➲ **दक्षिण की ओर सुलेमान पर्वत-श्रृंखला** बलूचिस्तान में **किरथर पर्वत-श्रृंखला** से जुड़ी है, जिसे **बोलन दर्रे से** पार किया जा सकता था।

- इन दर्रों से **भारत और मध्य एशिया के बीच** प्रागैतिहासिक काल से आवागमन होता आया है।
- **ईरान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया** के अनेक लोग हमलावरों और अप्रवासियों के रूप में **भारत** आए।
- यहां तक कि हिमालय पर्वत-श्रृंखला का **पश्चिमी विस्तार,** जो **हिंदुकुश** कहलाता है, **सिंधु और ऑक्सस के बीच** पार कर लोग आते-जाते थे।
- ये दर्रे एक ओर **भारत** और दूसरी ओर **मध्य एशिया और पश्चिमी एशिया** के बीच **व्यापारिक और सांस्कृतिक** संबंध की स्थापना में बड़े सहायक हुए हैं।

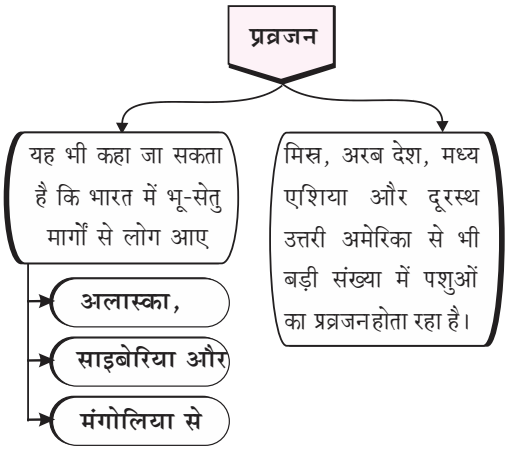

- इन मार्गों से मनुष्यों का आवागमन भी संभव था। यह सुविदित है कि ऐतिहासिक काल में **खैबर और बोलन** दर्रों का बहुत इस्तेमाल होता रहा है।

➡ मैदानों की **कछारी मिट्टी** में पनपे घने जंगलों की अपेक्षा हिमालय की तराइयों के जंगलों को साफ करना आसान था।

- इन तराइयों में बहने वाली नदियां कम चौड़ी होती हैं, अतः उन्हें पार करना कठिन न था।
- यही कारण है कि **प्रारंभिक यात्रा मार्ग हिमालय की तराइयों में ही पश्चिम से पूर्व और पूर्व से पश्चिम की ओर** विकसित हुए। इसीलिए भारतीयों द्वारा हिमालय की पूजा देवता के रूप में की जाती है।

■ *सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदान*

(Indo-Gangetic-Brahmaputra Plain)

हिमालय के दक्षिण में भारत का अति विस्तृत मैदान है, जिसकी लंबाई **3200 किलोमीटर से अधिक** और **चौड़ाई लगभग 240 से 320 किलोमीटर तक** है।

➡ यह हिमालय से नीचे आने वाली सैकड़ों नदी-**सरिताओं** द्वारा **हिमालय से बहाकर लाई गई अत्यंत उपजाऊ मिट्टी से बना है।**

- हिमालय से निकलने वाली नदियों की तीन महान प्रणालियां हैं, जिनसे उत्तर भारत के विशाल मैदान को वर्ष भर निरंतर जल प्राप्त होता रहता है।

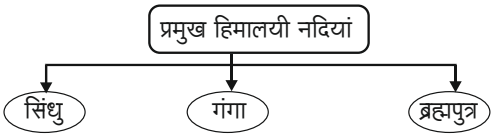

- इस मैदान में यमुना नदी के पश्चिम और सिंध नदी के पूर्व में स्थित एक काफी बड़े भू-भाग में आजकल कोई जल-प्रणाली नहीं है।
- **अब यह प्रमाणित हो चुका है कि प्राचीन काल में सरस्वती और उसकी सहायक नदियां इस क्षेत्र में बहती थीं।**

➡ **सिंधु नदी, तिब्बत पठार के कैलास-मानसरोवर क्षेत्र से निकलती है।**

- यह पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर **कराकोरम** पर्वत-श्रृंखला के बीच **लगभग 1300 किलोमीटर तक बहती है**, तब इसमें **गिलगित नदी** आकर मिलती है।
- यहां से सिंधु नदी दक्षिण की ओर मुड़ती है और मैदानों में पहुंच जाती है, **पांच नदियां इसके साथ शामिल होकर पंचनद देश अथवा पंजाब का निर्माण करती हैं।**

➡ **पूर्व से पश्चिम तक**, सिंधु की ये पांच सहायक नदियां हैं-

वर्तमान नाम		प्राचीन नाम
सतलज	———	शतुद्री
व्यास	———	विपासा
रावी	———	परुष्णी
चिनाब	———	अस्क्नी
झेलम	———	वितस्ता

- सतलज कभी सरस्वती नदी की सहायक नदी थी, जो अब लुप्त हो गई है, लेकिन बाद में **सतलज** ने अपना मार्ग बदल लिया है।
- गंगा नदी हिमालय से निकलकर क्रमशः निम्न राज्यों से गुजरते हुए बंगाल की खाड़ी में जा मिलती है - उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल।
- इसके **पश्चिम में यमुना नदी** बहती है। यह भी हिमालय से निकलती है।
- **यमुना और गंगा के प्रयागराज में संगम होने से पहले**, विंध्य पर्वत से निकलने वाली **चंबल**, **बेतवा** और **केन** जैसी कुछ नदियां यमुना में मिल जाती हैं।
- **विंध्य की एक और महान नदी 'सोन' बिहार में पटना के निकट गंगा नदी में जाकर मिलती है।**

- ➲ हिमालय की ओर से **गोमती, सरयू, गंडक और कोसी** नदियां उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों में गंगा नदी से मिल जाती हैं।
- ➲ अपने अंतिम छोर पर पहुंचकर गंगा कई धाराओं में बंटकर **बंगाल की खाड़ी** में जा गिरती है।

➡ गंगा की मुख्य धारा भागीरथी अथवा हुगली के किनारों पर अवस्थित नगर-

मुर्शिदाबाद — हुगली — कोलकाता

- ➲ **गंगा के सबसे पूर्वी मुख को पद्मा कहा जाता है।**

➡ सिंधु और गंगा के मैदान उपजाऊ क्षेत्र थे, इसलिए अनेक लोग यहां बस गए।

- ➲ आरंभ में यहां घने जंगल थे। धीरे-धीरे इन जंगलों को काटा गया, **जमीन** को कृषि-योग्य बनाया गया।
- ➲ इसी का परिणाम है कि इन **मैदानों** में कई राज्यों का उदय और विस्तार हुआ।

➡ **महान ब्रह्मपुत्र नदी कैलास में स्थित मानसरोवर झील के पूर्वी भाग से निकलती है,**

- ➲ **तिब्बत के पठार पर त्सांगपो के नाम से बहती है।** फिर यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और भारत में प्रवेश करती है। यहां पर इसका नाम **दिहांग** हो जाता है।
- ➲ **बाद में दिहांग और लोहित नदियां आपस में मिल जाती हैं और इनकी संयुक्त धारा को ब्रह्मपुत्र (लौहित्य) कहा जाता है।**
- ➲ **असम और बंगाल** से बहती हुई यह **गंगा के अंतिम पूर्वी मुहाने अर्थात् पद्मा के साथ मिल जाती है**
- ➲ लेकिन बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले एक अन्य बड़ी नदी, **मेघना इसमें मिल जाती है।**
- ➲ इस प्रकार जो **डेल्टा** बनता है, वह बंगाल का सबसे अधिक उपजाऊ भाग है और उसे **सुंदरबन डेल्टा** कहा जाता है।
- ➲ हिमालय में ही **कश्मीर और नेपाल** की उपत्यकाएं हैं।
- ➲ कश्मीर की घाटी चारों ओर से ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरी हुई है।
- ➲ इससे उसने अपनी अलग तरह की जीवन-पद्धति विकसित कर ली। लेकिन यहां कई दर्रों द्वारा पहुंचा जा सकता था।
- ➲ इस घाटी में कठिन ठंडी है, अत: यहां के अनेक लोगों को सर्दियों में नीचे मैदानों में उतर जाना पड़ता था और गर्मियों में मैदानों के **भेड़ बकरी** चराने वाले यहां चले आते थे।
- ➲ इस तरह मैदानों और इस घाटी के बीच **आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान** बना हुआ था।
- ➲ कश्मीर को **मध्य एशिया** के इलाकों में **बौद्ध धर्म** के प्रचार का **केंद्र स्थल** बनने में **पामीर का पठार** कोई बाधक नहीं हुआ।
- ➲ **नेपाल** की घाटी आकार में छोटी है। गंगा के मैदानी इलाकों के लोगों ने यहां पहुंचने के लिए अनेक दर्रे ढूंढ निकाले थे।
- ➲ कश्मीर की तरह इस घाटी में भी **संस्कृत की उन्नति** खूब हुई।
- ➲ दोनों ही उपत्यकाएं **संस्कृत पांडुलिपियों का सबसे बड़ा भंडार रही** हैं।
- ➲ संभवत: इन्हीं कारणों से **ईसा-पूर्व छठीं सदी** में **सबसे पुरानी कृषि-बस्तियां तराई** वाले इलाकों में ही बनी और यहीं के रास्तें व्यापार के लिए अपनाए गए।
- ➲ ऐतिहासिक **भारत का वक्षस्थल उन महत्वपूर्ण नदियों का क्षेत्र** है जो **उष्ण कटिबंधीय** मानसूनी वर्षा से लबालब भरी रहती हैं।

नदियों के ये क्षेत्र हैं-
- → सिंधु का मैदान
- → सिंधु-गंगा जलविभाजक
- → गंगा की घाटी
- → ब्रह्मपुत्र की घाटी

- ➲ ज्यों-ज्यों हम **पश्चिम** से पूरब की ओर बढ़ते हैं त्यों-त्यों पाते हैं, कि **वार्षिक वृष्टिमान** क्रमश: **25 सेंटीमीटर** से बढ़ते-बढ़ते 250 सेंटीमीटर तक पहुंच जाता है।
- ➲ **25 से 37 सेंटीमीटर** वर्षा द्वारा पोषित सिंधु-प्रदेश के पेड़-पौधों को और संभवत: **37 से 60 सेंटीमीटर वर्षा** द्वारा पोषित **पश्चिमी गंगाघाटी** के पेड़ पौधों को भी पत्थर और तांबे के औजारों से काटकर जमीन को कृषि योग्य बनाना संभव था।
- ➲ परंतु **60 से 125 सेंटीमीटर वर्षा** द्वारा पोषित **मध्य गंगा घाटी** के जंगलों के बारे में ऐसा संभव नहीं था और **125 से 250 सेंटीमीटर** वर्षा से पोषित **बह्मपुत्र घाटी** के जंगलों के बारे में तो एकदम संभव नहीं था।
- ➲ घने जंगलों और साथ ही कठोर भूमि वाले इन प्रदेशों को साफ करना **लोहे के औजारों** से भी संभव था, परंतु **लोहे के औजार** तो बहुत बाद में विकसित हुए।
- ➲ अत: **प्राकृतिक संपदाओं** का इस्तेमाल पहले कम वर्षा वाले पश्चिमी प्रदेश में ही किया गया और बड़ी बस्तियों का विस्तार आम तौर से पश्चिम से पूरब की ओर होता गया।

■ *प्रायद्वीपीय भारत (Peninsular India)*

प्रायद्वीपीय भारत का अध्ययन दो अलग-अलग भागों के अंतर्गत किया जा सकता है।

➡ विंध्य और सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखलाएं एक - दूसरे के समानांतर, पूर्व से पश्चिम की ओर फैली हुई हैं।

- ➲ इन दोनों के बीच **नर्मदा नदी** बहती है, जो अरब सागर में गिरती है।
- ➲ पश्चिम की ओर बहने वाली केवल एक अन्य नदी **ताप्ती** है, जो **सतपुड़ा के कुछ दक्षिण की ओर** स्थित है।

➡ प्रायद्वीपीय भारत की वे प्रमुख नदियां, जो पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होते हुए अरब सागर में गिरती हैं-

नर्मदा नदी ——— एवं ——— ताप्ती नदी

- ➲ प्रायद्वीप की अन्य सभी नदियां पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं और बंगाल की खाड़ी में जा गिरती हैं, जिससे यह संकेत मिलता है, कि यह पठार पूर्व की ओर झुका हुआ है।
- ➲ पठार का उत्तरी भाग, जिसे विंध्य-सतपुड़ा पर्वतमाला द्वारा अलग किया गया है, **मध्य भारत का पठार** कहलाता है, जबकि **दक्षिणी भाग को दक्कन का पठार कहते हैं।**

(i) मध्य भारत का पठार *(Central Indian Plateau)*

मध्य भारत का पठार पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में छोटा नागपुर तक फैला हुआ है। भारत का **विशाल मरुस्थल** जिसे **थार का रेगिस्तान** कहा जाता है, **अरावली पर्वतमाला** के **उत्तर** में स्थित है। दक्षिण में **विंध्य पर्वत** है।

- ➲ **मालवा का पठार, बुंदेलखंड** और **बघेलखंड** की **उच्चतम** भूमि (टेबल लैंड) इसके भाग हैं।
- ➲ इसके परिणामस्वरूप इस ओर की सारी नदियां उत्तर अथवा उत्तर-पूर्व की ओर बहती हैं और यमुना तथा गंगा में जा मिलती हैं। विंध्य का पूर्वी भाग, जिसे **कैमूर पर्वत श्रृंखला** कहा जाता है, लगभग **बनारस** के दक्षिण तक फैला हुआ है और गंगा के समानांतर **राजमहल पहाड़ियों तक** उसका विस्तार है।
- ➲ गंगा और राजमहल के बीच पश्चिम में **चुनार** (अर्थात् उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर) से पूर्व में तेलियागढ़ी तक एक संकरा मार्ग है।
- ➲ ***यही महापथ पश्चिमी और पूर्वी भारत को आपस में मिलाता है।***
- ➲ पश्चिम में **कालिंजर** और **ग्वालियर** के दुर्गों का निर्माण किया गया था।

☛ ओल्ड एन.सी.ई.आर.टी. (मक्खन लाल) के अनुसार सैनिक दृष्टिकोण से इस महापथ के सामरिक महत्व को समझा गया इसलिए पूर्व में रोहतास और चुनार के पहाड़ी दुर्गों तथा पश्चिम में कालिंजर और ग्वालियर के दुर्गों का निर्माण किया गया।

- ➲ **शाहाबाद तथा तेलियागढ़ी के दर्रे** एक दूसरे से लगभग पांच किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं।

वे दर्रे जो बंगाल के प्रवेश द्वार के रूप में काम आते थे-

शाहाबाद का दर्रा — तेलियागढ़ी का दर्रा

- ➲ **पठार और थार मरुस्थल** के पश्चिम की ओर गुजरात की उपजाऊ निम्नभूमि स्थित है, जिसमें कई कम ऊंची पहाड़ियां हैं और जिसकी सिंचाई **माही, साबरमती नर्मदा तथा ताप्ती** की निचली शाखाओं द्वारा होती है।
- ➲ **काठियावाड़ प्रायद्वीप और कच्छ का रण दलदल वाला क्षेत्र है, जो गर्मियों में सूखा रहता है।**

(ii) दक्कन का पठार *(The Deccan Plateau)*

दक्कन के पठार की सतह का ढलान पश्चिम से पूर्व की ओर ढालू है। पश्चिम की ओर ऊंची **खड़ी चट्टानों की श्रृंखला** है, जो **दक्षिण से उत्तर** की ओर जाती है और इसके तथा समुद्र के बीच एक संकरी मैदानी पट्टी है।

➡ इस श्रृंखला को **पश्चिमी घाट** कहा जाता है, जिसकी **ऊंचाई लगभग 3000 फुट तक** है।

- ➲ यह पठार दक्षिण में **मैसूर** क्षेत्र में लगभग 2,000 फुट ऊंचा है और **हैदराबाद** में इसकी ऊंचाई इसके लगभग आधे के बराबर है।
- ➲ दक्षिण की ओर जाने वाली पहाड़ियां, जो समुद्र से धीरे-धीरे दूर होती जाती हैं, पश्चिम में **नीलगिरि** के पास पश्चिमी घाटों के साथ मिल जाती हैं।
- ➲ पूर्वी घाट और समुद्र के बीच का मैदान पश्चिमी घाट के मैदान से अधिक चौड़ा है।
- ➲ **पूर्वी घाटों** में जिनमें कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों के समूह शामिल हैं, कई खाली स्थान हैं, जिनसे होकर बहुत-सी **प्रायद्वीपीय नदियां बंगाल की खाड़ी** में जा मिलती हैं।

➡ **प्रायद्वीपीय भारत** की **सभी नदियां पश्चिमी से पूर्व** की ओर बहती हैं, जबकि **नर्मदा** और **ताप्ती पूर्व से पश्चिम** की ओर बहते हुए अरब सागर में गिरती हैं।

- ➲ उनमें से **अधिकतर नदियां पश्चिमी घाट से** निकलती हैं और पठार के चौड़ाई वाले पूरे भाग को पार करके बंगाल की खाड़ी में जा गिरती हैं।

- ➲ **महानदी एक चौड़े मैदान का निर्माण करती है, जिसे उत्तर-पूर्व में छत्तीसगढ़ का मैदान कहा जाता है।**
- ➲ यह नदी समुद्र में मिलने से पहले **उड़ीसा से होकर** गुजरती है।
- ➲ गोदावरी और उसकी सहायक नदियों की घाटी में उत्तर की ओर एक बहुत बड़ा समतल मैदान है, लेकिन पूर्व में समुद्र से मिलने से पहले यह संकरा हो जाता है।

दक्कन के पठार को दो भागों में विभाजित करने वाली नदियां हैं-

- कृष्णा नदी
- तुंगभद्रा नदी (कृष्णा की सहायक)

- ➲ इसके और आगे **दक्षिण में कावेरी** और उसकी सहायक नदियों से एक अन्य महत्वपूर्ण नदी प्रणाली का निर्माण होता है।

➡ यहां यह बात उल्लेखनीय है कि प्रायद्वीपीय नदियां उत्तर की नदियों से भिन्न हैं।

- ➲ ये नदियां गरमी के मौसम में अधिकतर सूखी रहती हैं अत: इसलिए ये सिंचाई और नौपरिवहन के प्रयोजनों के लिए कम उपयोगी हैं।

➡ **भारतीय प्रायद्वीप एक ऊंचा पठार है।** यहां से अनेक नदियां बहती हैं।

- ➲ आरंभ में नदियों की इन घाटियों में ही मानव ने अपनी बस्तियां बसाई थीं।
- ➲ भारत के पश्चिमी तथा पूर्वी समुद्र-तट के क्षेत्र भी उपजाऊ थे।
- ➲ **पूर्वी समुद्र-तट का क्षेत्र अधिक उपजाऊ है, क्योंकि यहां अनेक नदियां डेल्टा बनाती हैं।**
- ➲ **जिन क्षेत्रों में वातावरण अनुकूल होता है वहां अधिक बस्तियां स्थापित हो जाती हैं।**

भारतीय उपमहाद्वीप के तटवर्ती क्षेत्र (Coastal Regions of Indian Subcontinent)

तटवर्ती उपजाऊ मैदान बहुत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि उनसें समुद्री क्रियाकलापों और व्यापार के अवसर मिलते हैं। पश्चिमी तटवर्ती मैदान का विस्तार उत्तर में **खंभात की खाड़ी तथा दक्षिण में केरल** तक है।

➡ **कोंकण तट-**
पश्चिमी तटवर्ती मैदान का उत्तरी भाग
मालाबार तट-
पश्चिमी तटवर्ती मैदान का दक्षिणी भाग

- ➲ **इस क्षेत्र (पश्चिमी तटवर्ती मैदान) में वर्षा बहुत अधिक होती है।**
- ➲ यहां पर **बड़ी नदियां नहीं हैं, किंतु छोटी नदियां संचार और सिंचाई के सरल साधन के रूप में काम आती हैं।**
- ➲ **कोंकण** और **मालाबार** क्षेत्र में भी **कुछ अच्छे बंदरगाह हैं।** दूसरी ओर पूर्वी तट पर **कुछ प्राकृतिक बंदरगाह हैं।**

➡ ऐतिहासिक काल में समुद्री गतिविधियों के फलस्वरूप दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ अधिक घनिष्ठ और लाभदायक संबंध स्थापित हुए।

➡ **प्रायद्वीप के दक्षिणी छोर को केप-केमोरिन अथवा कन्याकुमारी अंतरद्वीप कहा जाता है।**

- ➲ इसके **दक्षिण-पूर्व में श्रीलंका का द्वीप है,** हालांकि यह भारत का अभिन्न भाग नहीं है, लेकिन यह भारत के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित रहा है।

➡ श्रीलंका भारत से निम्न प्राकृतिक संरचनाओं द्वारा जुड़ा हुआ है-
- छोटे-छोटे द्वीपों
- मूंगे की चट्टानों तथा
- आदम का पुल (छिछले जल की एक श्रृंखला)

- ➲ **आम के आकार के इस (श्रीलंका) द्वीप को प्राचीन काल में 'ताम्रपर्णी' के नाम से जाना जाता था,** जो संस्कृत के तांब्रपर्णि शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है।
- ➲ **संस्कृत शब्द तांब्रपर्णी का अर्थ है, तांबुल अथवा पान के पत्ते के आकार वाला।**
- ➲ **इसे 'सिंहलद्वीप' के नाम से भी जाना जाता था।**

भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु (Climate of the Indian Subcontinent)

भारतीय उपमहाद्वीप अधिकांशत: उष्णकटिबंध में स्थित है। ऊंचे हिमालय पर्वत द्वारा भारत को साइबेरिया से आने वाली उत्तरध्रुवीय ठंडी हवाओं से सुरक्षित बनाए जाने के कारण, यहां की **जलवायु लगभग पूरे वर्ष काफी गर्म** रहती है।

- ➲ **यहां दो-दो महीने की छ: नियमित ऋतुएं होती हैं तथा चार-चार महीनों के तीन मौसम होते हैं।**
- ➲ दक्षिण-पश्चिमी मानसून देश भर में भिन्न-भिन्न मात्रा में वर्षा लाता है।
- ➲ भारत में गंगा के मैदान में वार्षिक वर्षापात की मात्रा अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग होती है।

भारत के भौगोलिक क्षेत्र एवं वहां होने वाली औसत वार्षिक वर्षा की मात्रा-

भौगोलिक क्षेत्र	औसत वार्षिक वर्षा की मात्रा
सिंध क्षेत्र का उत्तरी भाग और गंगा का समूचा मैदान	लगभग 100-200 सेंटीमीटर वर्षा
भारत का उत्तर-पूर्वी भाग	लगभग 200-400 सेंटीमीटर वर्षा अथवा उससे भी अधिक

➡ आधुनिक काल में **सिंध** और **गुजरात** के कुछ भागों सहित **हरियाणा** और **राजस्थान** क्षेत्र में कम वर्षा होती है।

➲ इस बात के साक्ष्य हैं कि प्राचीन काल में यहां पर अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती थी और **हड़प्पा की सभ्यता इसी क्षेत्र में फली-फूली थी।**

➡ **भारत के विस्तृत भाग में दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा वर्षा होती है, जो खरीफ की फसलों के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।**

➡ इसी प्रकार, **सर्दी के मौसम में पश्चिमी विक्षोभ से जो वर्षा होती है, उससे वर्ष की दूसरी फसलें पैदा होती हैं, जिसे रबी की फसल कहा जाता है।**

वर्षा		लाभान्वित फसलें
दक्षिण-पश्चिम मानसून वर्षा	—	खरीफ की फसलों के लिए उपयोगी
पश्चिमी विक्षोभ से वर्षा	—	रबी की फसलों के लिए उपयोगी

➲ देश के पश्चिमी भाग और अधिकांश अन्य भागों में गेहूं और जौ रबी की प्रमुख फसलें हैं।

➡ चावल की खेती मुख्य रूप से की जाती है-
- ➡ गंगा और ब्रह्मपुत्र के मैदानों एवं
- ➡ भारत के पूर्वी तट पर तमिलनाडु में

➲ इस प्रकार, भारत असंख्य किस्मों की विविधतापूर्ण वनस्पतियों और अनुकूल मौसमों की नियमित श्रृंखला वाला देश है।

भारतीय इतिहास पर भूगोल का प्रभाव (Influence of Geography on the Indian History)

विभिन्न भौगोलिक विशेषताएं **मानव के क्रियाकलापों, उनकी प्रकृति तथा मानव समूह के साथ ही उसके संबंधों** को प्रमाणित करती है। पहाड़ियों, पर्वतों और नदियों आदि के प्राकृतिक अवरोध से उसे एक भौगोलिक इकाई का स्वरूप प्रदान करता है, जिससे हमें अपनेपन की अनुभूति होती है।

➡ **वह अपने परिवेश के अनुसार अपनी आदतों और सोचने के तरीकों का विकास करता है।**

➲ इससे यहां रहने वाले लोगों में एकता की भावना उत्पन्न होती है।

➲ वे इसे अपनी मातृभूमि मानते हैं।

➲ भारत में हमेशा से कई ऐसे राज्य रहे हैं, जिनका सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचा, मोटे तौर पर हमेशा एक-जैसा रहा है।

➲ **संस्कृत स्थानीय** भाषाओं के साथ-साथ सबसे सम्मानित भाषा रही है।

राज्यों का प्रशासन और शासन विधि-पुस्तकों के आधार पर किया जाता था, जिन्हें **धर्मशास्त्र** कहा जाता है।

➲ उपासना-स्थल और तीर्थस्थान समूचे देश में बिखरे पड़े हैं।

➲ ये सांस्कृतिक बंधन भारतीयों में **एकता और राष्ट्रीयता** की भावना उत्पन्न करते हैं।

➲ इसके साथ-साथ विशिष्ट क्षेत्रीय विविधताएं हैं। कई ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें विशिष्ट क्षेत्रीय **भावना** और सांस्कृतिक विशेषताएं हैं।

➲ इन अलग-अलग इकाइयों से विशाल राज्यों, एवं साम्राज्यों का उदय हुआ और समय के साथ वे दुर्बल हो गए, उनका स्थान अन्य इकाइयों ने ले लिया। कुछ इतिहासकारों ने इसे परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया करने वाली **केंद्रीकरण** और **विकेंद्रीकरण** की शक्तियों के रूप में परिभाषित किया है।

➲ भारतीय **उपमहाद्वीप** में **सिंधु** और **गंगा** के मैदानों में शुरू हुई खेती से यहां बढ़िया फसल होने लगी और इसने एक के बाद एक कई संस्कृतियों का संभरण किया। सिंधु और गंगा के पश्चिमी मैदानों में मुख्यतः गेहूं और जौ की उपज होती थी, जबकि मध्य तथा निचले गंगा के मैदानों में मुख्यतः चावल पैदा किया जाता था।

➡ प्राचीन काल में सड़क बनाना कठिन था, इसलिए मानव और वस्तुओं का आवागमन नावों से होता था।

➲ **अतः नदी-मार्ग सैनिक और वाणिज्य संचार में सहायक सिद्ध हुए।**

➲ अशोक द्वारा स्थापित प्रस्तर स्तंभ, नावों से ही देश के दूर-दूर स्थानों तक पहुंचाए गए।

➲ संचार साधन के रूप में **नदियों की यह भूमिका 'ईस्ट इंडिया कंपनी'** के दिनों तक कायम रही।

➲ इसके अलावा, नदियों की **बाढ़ का पानी** आसपास के क्षेत्रों में फैलता था और उन्हें **उपजाऊ** बनाता था। इन **नदियों** से नहरें भी निकाली गई थीं।